ग्रंथ मळवानुं ठेकाणुं.

वकील. मोहनलाल हिमचंदभाइ.

मु. पादरा (गुजरात)

गांधी. आत्माराम खेमचंद.

साणंद.

निवेदन.

अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी श्रीमद् बुद्धिसागर ग्रंथ माळाना बासठमा मणका तरीके भजनपद संग्रह भा. १० के जेना रचयिता शास्त्रविशारद जैनाचार्यश्रीमद् बुद्धिसागरजी सूरीश्वरजी छे. ते सं. १९७९ नी सालमां बहार पाडवामां आवे छे तेनी पडतर किंमत रु. १-०-० राखवामां आवेल छे. आचार्यश्रीना भजनो जैन जैनेतर समाजमां प्रेमथी गवाय छे. तेओश्रीना भजनो सर्व लोकोने आनंदथी रसपूर्वक गावानुं मन थाय तेवां खास विचारणीय छे. तेमनां रचेलां भजनो अध्यात्मज्ञानरसथी भरपूर छे. मंडळे अत्यार-सुधी भजनपदसंग्रहना भाग ९ बहार पाडेल छे. ते आ ग्रंथ वेरावळ निवासी सुश्रावक काळीदासभाइ अमरशीभाइ हा. श्राविका बहेन नंदकोरबेने मेहसाणामां गुरुराजश्री बिराजता हता त्यारे रु. १२००) मदद आपवानी पोतानी उत्कंठा जणाववाथी आ ग्रंथ तेमनी मददनी सहायथी छपाववामां आवेल छे, अने आपेली सहायमांथी जे कंइ वधशे ते अन्य पुस्तक छपाववामां लेवामां आवशे. मंडळ पासे उत्तम फंड नथी पण ते धनवंतोनी सहायथी पुस्तको प्रसिद्ध करे छे. मंडळ तरफथी सस्ती किंमते पुस्तको वेचाय छे, ते जनकोय सारी रीते जाणे छे. आ ग्रंथ छपाववा माटे पोताना धननो सदुपयोग-करनार बाइने (वर्तमानमां साध्वीजीने) मंडळ तरफथी अंतःकरण पूर्वक धन्यवाद आपवामां आवे छे अने भविष्यमां जेओ अन्य पुस्तको छपा-ववामां सहाय करशे, तेओनो उपकार मानवामां आवशे. जेओए पुस्तक छपाववामां मदद करी छे, तेओए आवेला रसवाळां पाठो नहि

तेओना नामोने अक्षरदेहथी अमर करवामां आवे छे. आं ग्रंथमां गुरुश्रीए जे जे वखते जेवी जेवी भावनाओ प्रकटी तेवी भावनाओथी तेमणे पद्दो रच्यां छे.

संवत १९७९	सद्गुरु चरणोपासक
	लि. आत्माराम खेमचंद मु. साणंद
श्रावण पूर्णिमा.	श्री अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी



भजनसंग्रह भाग १० मो.

अशुद्धिशुद्धि पत्रकम्.

पत्र.	लीटी.	अशुद्धि.	शुद्धि.
७	६	पाया-	पाया.
१२	१६	चुंदनो.	चुंदना.
१५	१	सतो.	संतो.
१५	४	भखीं.	भूखीं.
१६	१	आतम करे.	आतम क्यां करे.
२०	२०	भारट.	भारंट.
२१	१८	लयनाना.	लयतानी.
२९	२४	आववा-	आववा.
४७	४	इच्छे.	इच्छो.
४८	३	नरंजन.	निरंजन.
५२	७	वदी.	व.
५६	१	कमनी-	कर्मनी.
५६	५	वारनी.	पारनी.
५८	१७	जमना.	जिमना.
६२	२२	पाने.	मापो.
६५	२१	दुर्गुण व्यसनोमें-	दुर्गुण दुर्व्यसनोमें।
६७	१६	आतम दुनियाकुं.	आतम सब दुनियाकुं.
६९	११	भाक्त-	भक्ति.
७२	३	नि–चरशो-	निचरशो.
७२	१६	सन्देशो.	सन्देशो कहेशो।
८०	१९	दगुण	दुर्गुण
९६	५	पाया	पाया

पत्र.	ओळी.	अशुद्धि.	शुद्धि.
९९	१०	नावरूपरा	नावरूपगें
१००	४	माग्याता	मग्याता
१०७	२०	आगरूं आना	आग जगाना
११४	२१	एपर्य	पर्य ए
११६	१३	रर्हुं	हमर्हुं
१२२	४	ओवंनां	ओवनां
१३७	५	कमारो	कर्मारो
१४९	१२	भक्तम जेर	भक्तम गेर
१५०	८	मंग	संग
१५०	१५	धर्प	धर्प
१५३	१३	पेन	पेरा
१५४	१०	सुंम	सुन
१५६	७	मिते	जीते

विषयानुक्रमणिका.



आगम वेदशिरोमणि पराविद्या वेदान्तज्ञान कहेवाय छे. सुफीओनी ते मेघमस्तीनी शराब छे (अर्थात् मीठी आनंददायक वस्तु छे) दुनियामां सर्व दर्शनोमां छेल्लामां छेल्ली अध्यात्मज्ञानविद्या छे, तेनो पार पामे छे ते तरी जाय छे. दूधनुं सार जेम घृत छे तेम ज्ञाननुं सार अध्यात्मज्ञान छे तेने जे पचवे छे, तेमां जे लयलीन थाय छे, तेना हृदयमांथी अध्यात्मज्ञानना भजनोनो प्रवाह नीकळे छे. अध्यात्मज्ञानी गीतार्थोना समागममां दररोज यथाकाल पर्यंत आवराथी आत्मज्ञाननो अनुभव आवे छे. अध्यात्मज्ञानीगीतार्थगुरुने मायेकरी गुरुनी सेवा भक्तिमां जेओ समर्पाइ जाय छे अने पोताना नाम रूपने भूली जे गुरुमां लयलीन थये छे अने गुरुनी आज्ञाओने अमल्मा मूके छे तेने वास्तवमें आपोआप हृदयमां अध्यात्मज्ञाननो प्रकाश थया विना रहेतो नथी. अध्यात्मज्ञानना पुस्तको वांचवा मात्रथी तो फक्त अध्यात्मज्ञाननी रुचि प्रकटे छे अने गुरुने शीर्षपर धारण करीने आत्मज्ञान मेळववा पुरुषार्थ करतां आत्मानो साक्षात्कार अनुभव थाय छे. शुद्ध निश्चयनय कथित आत्मानुं शुद्धस्वरूप अनुभववा माटे आत्मज्ञानी गुरुनुं शरण स्वीकारी तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवानी खास जरूर छे, ते विना आत्मानो साक्षात्कार करवा बीजो उपाय नथी. गीतार्थ गुरुनी सेवा भक्तिमां जीवतां जेओ मरजीवा बने छे ते जीवतां प्रभु परमात्मारूपे आत्मानो साक्षात्कार करे छे. मनुष्य जन्मनुं सत्यध्येय परमात्मपद प्राप्ति करवी तेज छे अने ते माटे आत्मज्ञान तेज मुख्य उपाय छे अने आत्मज्ञानमाटे गीतार्थ गुरुना शरण पूर्वक तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्या विना अन्य कोइ उपाय नथी. सद्गुरुने अध्यात्मज्ञाननो परिपाक थाय छे अने ते बाह्यमां निर्लेप अनासक्त रहीने नीतिमय जीवन गाळतो छतो स्वाधिकारे बाह्य कर्तव्य कार्योने पण कर्या करे छे. ते लोकमां लोकाचार रीतिए [illegible] अने आत्मामां आत्माकार परिणतिए वर्ते छे. तपो-

गुण अने रजोगुण साथे अध्यात्मज्ञान वर्ते छे अने सात्त्विकगुण साथे अध्यात्मज्ञान वर्ते छे. तमोगुण अने रजोगुण रहित सात्त्विक गुण सहित जे अध्यात्मज्ञान प्रगटे छे ते स्वपरनी विशेष उन्नतिकारक होय छे. तमोगुण रजोगुण अने सत्त्वगुणथी पण आत्मा न्यारो छे. त्रिगुणीमाया ते नर्तकी समान छे अने ते प्रकृति छे, तेज कर्म छे, तेनाथी पुरुष अर्थात् आत्मा न्यारो छे एम जे आत्माने अनुभवे छे ते आत्मानी शुद्धि करे छे. सातनयोनी सापेक्षाए आत्मानुं ज्ञान करवुं ते सम्यग्ज्ञान अर्थात् आत्मज्ञान छे. एवां आत्मज्ञाननां पदोनुं सातनयोनी अपेक्षाए स्वरूप समजवामाटे वाचकोने विज्ञप्ति करवामां आवे छे. आगमसार, नयचक्र, अध्यात्मसार, ज्ञानसार, आनंदघनचोवीशी वगेरे ग्रन्थो वांचवाथी अध्यात्मज्ञाननी प्राप्ति थाय छे. चतुर्थगुण स्थानकथी आरंभी अध्यात्मज्ञाननुं प्राकट्य थाय छे. मुख्यतया अध्यात्म ज्ञानीओ त्यागी मुनियो होय छे कारण के तेओ परमात्मपदप्राप्तिमाटे अर्हाइ गएला होय छे. मुनिनां व्रतोमां अने मुनिना हृदयमां अध्यात्मज्ञाननी झांखी होय छे गृहस्थो, अध्यात्मज्ञानमां सर्षव समान छे अने अध्यात्मज्ञानमां ज्ञानी मुनियो मेरु समान छे. ज्ञानीमुनियो सर्व प्रकारना संगथी रहित होय छे. चतुर्थ गुणस्थानक करतां पांचमा देशविरति गुण स्थानकमां अध्यात्मज्ञान अनंतगणुं खीले छे. पंचमा देशविरति गुण स्थानक करतां छट्ठासर्वविरतिप्रमत्तगुणस्थानकमां अनंतगणुं विशेष अध्यात्मज्ञान खीले छे, छट्ठा सर्वविरति गुणस्थानक करतां सातमा अप्रमत्तगुणस्थानकमां अनंतगणुं विशेष अध्यात्मज्ञान खीले छे, एम उत्तरोत्तरगुणस्थानकोमां बारमा गुणस्थानक सुधी अध्यात्मज्ञान खीले छे अने त्रयोदशमासयोगीकेवलीगुणस्थानकमां केवलज्ञान प्रगट थाय छे अने त्यां साध्यनी सिद्धि थाय छे. अंतरात्मदशामां अध्यात्मज्ञानदशा तथा संयमध्यान समाधि छे.

ॐ अर्हं महावीराय नमः

भजनसंग्रहदशमोभाग.

वक्तव्य ॥

सर्वज्ञ महावीरदेवनी कृपाथी सं. १९७८ ना जेठ सुदि त्रयोदशे मेसाणाना संघना आग्रहे मेसाणामां प्रवेश थयो. संघना आग्रहथी त्यां चातुर्मास रहेवानुं थयुं. त्यां वर्षा निवृत्ति थई त्यां जेठ मासथी आरंभी आसो मास सुधीमां जे जे वखते जेवी जेवी भावनाओ प्रगटी ते ते वखते तेवां भजन पदवगेरेनी रचना थई छे. मुख्यभागे आध्यात्मिक पदो छे अने गौणताए नीति सदुपदेश आदिनां भजनो छे. सातनयोनी अपेक्षाए सम्यग्दृष्टि मनुष्यो भजनो वगेरेनो सवळो अर्थ ग्रहण करे छे. सम्यग्दृष्टिमनुष्योने मिथ्या व शास्त्रोपण सवळां परिणमे छे अने मिथ्यादृष्टिवाळाओने सम्यक्त्वकारक शास्त्रोपण अवळां परिणमे छे एम नंदि सूत्रमां दर्शाव्युं छे ते प्रमाणे जे सम्यग्ज्ञानीओ हशे तथा सम्यग्ज्ञानीओना बोधप्रमाणे वर्तनारा हशे तेओने भजनसंग्रहदशमो भाग पण अनेकनयोनी सापेक्षदृष्टिवडे सवळाअर्थरूपे परिणमीने आत्मानी शुद्धि करनार थशे अने प्रतिपक्षी दुर्जन मिथ्यादृष्टिजीवोने तो सवळो अर्थ पण अवळारूपे परिणमीने मिथ्यामोहनी वृद्धि करनार थशे. दुर्जनो तो पयमांथी पण पूरा काढनारा होय छे तेओ तो भजन पदोना अर्थोने पोतानी मतिथी खेंचीने अवळाअर्थतरीके पोते माने छे अने लोकोने पण तेवी रीते समजावी भ्रांतिमां नाखे छे. बालजीवोने विद्वानो जेम दोरवे तेम दोरवाय छे तेथी तेओने सम्यग्ज्ञानीओनो समागम थाय छे तो ते तरफ वळे छे अने विद्वानो के मिथ्या दृष्टिवाळा तथा प्रतिपक्षी दुर्जनोनो समागम थाय छे तो तरफ वळे छे अने तेथी तेओ परतंत्र बने छे. सर्व प्रकारना ज्ञान-

मां अध्यात्मज्ञान श्रेष्ठ छे. अध्यात्म ज्ञानथी आत्मानी पूर्ण शुद्धि थाय छे. श्रीमद् आनंदघनजी (आतमज्ञानी श्रमणकहावे, बीजनो द्रव्यलिंगीरे) एम कथी आत्मज्ञानीने श्रमण कथे छे अने अन्योने द्रव्य-लिंगी साधुओ तरीके जणावे छे. एकांत ज्ञानवादी तथा एकांतक्रियावादी न बनवुं जोइए. अध्यात्मज्ञानना भजनोमां-पदोमां निश्चयनयनी दृष्टि मुख्य होय छे ते ध्यानमां राखीने वाचकोए व्यवहार नयकथितधर्मथी पराङ्मुख न थवुं जोइए. ज्ञानमां शुष्कतानो दोष प्रगटवानो भय रहे छे अने एकांतक्रियामां जडतादोषनो संभव रहे छे ते बेथी मुक्त थवाय तेवी रीते भजन पदोना ज्ञानथी आत्महितार्थ प्रवृत्ति करवी जोइए. पद भजनोमां मोटाभागे ज्ञानीओना हृदयज्ञानरसनो उभरो नीकळे छे एम अनुभव आवे छे, अध्यात्मज्ञानानुभवीओने अध्यात्मज्ञानना भजनो-पदो रुचे छे. योगानुभवीओने योगनां भजनो पदो रुचे छे. भक्तोने प्रभुभक्तिनां पदो रुचे छे वैरागीओने वैराग्यनां भजनो पदो रुचे छे. जेवा जेओ अधिकारी होय छे तेओने तेवुं रुचे छे तेमां दलील देवानी कंइ जरुर पडती नथी. जे मनुष्योमां जेवुं होय छे तेवुं वाणीद्वारा बहार प्रकाशे छे.

साबु अने जलथी जेम वस्त्रनी शुद्धि तुर्त थाय छे तेम अध्यात्मज्ञान ध्यान योगमां रमणता करवाथी आत्मानी शुद्धि थाय छे अने आत्मानुं स्वाभाविकज्ञान स्फुरायमान थाय छे. आत्मज्ञानध्यान समाधिमां लयलीन रहेवाथी मस्तदशा प्रगटे छे अने तेथी सर्व प्रकारनां बाह्यांतर बंधनोथी आत्मा स्वतंत्र बालकवत् निर्दोष शुद्ध भाव... [illegible] दुनियानी परवाह रहेती नथी. तेमे अध्यात्म... आत्मानी आनंदमस्तदशा अनुभवी छे तेने अध्या-... [illegible]नो अनुभव आवे छे अने ते [illegible] तेम आत्मानी शुद्ध [illegible]

आगम वेदशिरोमणि पराविद्या वेदान्तज्ञान कहेवाय छे. मुमुक्षुओनी ते जैनधर्मीनी मताव छे (अर्थात् मोटी आनंददायक वस्तु छे) दुनियामां सर्व दर्शनोमां छेवटनी टोची अध्यात्मज्ञानविद्या छे, तेनो पार पामे छे ते थोडा जाय छे. दूधनुं सार जेम घृत छे तेम ज्ञाननुं सार अध्यात्मज्ञान छे तेने जे पचावे छे, तेमां जे तल्लीन थाय छे, तेना हृदयमांथी अध्यात्मज्ञानना भजनोना प्रवाह नीकळे छे. अध्यात्मज्ञानी गीतार्थोना समागममां दररोज प्रभातथी पर्यंत आत्मार्थी आत्मज्ञाननो अनुभव आवे छे. अध्यात्मज्ञानीगीतार्थगुरुने माथेकरी गुरुनी सेवा भक्तिमां जेओ गरकाइ जाय छे अने पोताना जाप करने पूर्वे जे गुरुमां समर्पण करे छे अने गुरुनी आज्ञाओने अवश्य मुक्ति छे तेने धारवगे आपोआप हृदयमां अध्यात्मज्ञाननो प्रकाश थया विना रहेतो नथी. अध्यात्मज्ञानना पुस्तको वांचवा मात्रथी तो फक्त अध्यात्मज्ञाननी रुचि प्रगटे छे अने गुरुनुं शरणं धारण करीने आत्मज्ञान मेळववा पुरुषार्थ करतां आत्मानो साक्षात्कार अनुभव थाय छे. शुद्ध निश्चयनय कथित आत्मानुं शुद्धस्वरूप अनुभववा माटे आत्मज्ञानी गुरुनुं शरण स्वीकारी तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवानी खास जरूर छे, ते विना आत्मानो साक्षात्कार करवा बीजो उपाय नथी. गीतार्थ गुरुनी सेवा भक्तिमां जीवंतां जेओ मरजीवा बने छे ते जीवतां प्रभु परमात्मारूपे आत्मानो साक्षात्कार करे छे. मनुष्य जन्मनुं सत्यध्येय परमात्मपद प्राप्ति करवी तेज छे अने ते माटे आत्मज्ञान तेज मुख्य उपाय छे अने आत्मज्ञानमाटे गीतार्थ गुरुना शरण पूर्वक तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्या विना अन्य कोइ उपाय नथी. सद्गुरुने अध्यात्मज्ञाननो परिपाक थाय छे अने ते बाह्यमां निर्लेप अनासक्त रहीने नीतिमय जीवन गाळतां छतां स्वाधिकारे बाह्य कर्तव्य कार्योने पण कर्या करे छे. ते लोकमां लोकाचार रीतिए वर्ते छे अने आत्मामां आत्माकार परिणतिए वर्ते छे. तमो-

गुण अने रजोगुण साथे अध्यात्मज्ञान वर्ते छे अने सात्विकगुण साथे अध्यात्मज्ञान वर्ते छे. तमोगुण अने रजोगुण रहित सात्विक गुण सहित जे अध्यात्मज्ञान प्रगटे छे ते स्वपरनी विशेष उन्नतिकारक होय छे. तमोगुण रजोगुण अने सत्वगुणथी पण आत्मा न्यारो छे. त्रिगुणीमाया ते नर्तकी समान छे अने ते प्रकृति छे, तेज कर्म छे, तेनाथी पुरुष अर्थात् आत्मा न्यारो छे एम जे आत्माने अनुभवे छे ते आत्मानी शुद्धि करे छे. सातनयोनी सापेक्षाए आत्मानुं ज्ञान करवुं ते सम्यग्ज्ञान अर्थात् आत्मज्ञान छे. एवां आत्मज्ञाननां पद्योनुं सातनयोनी अपेक्षाए स्वरूप समजवामाटे वाचकोने विज्ञप्ति करवामां आवे छे. आगमसार, नयचक्र, अध्यात्मसार, ज्ञानसार, आनंदघनचोवीशी वगेरे ग्रन्थो वांचवाथी अध्यात्मज्ञाननी प्राप्ति थाय छे. चतुर्थगुण स्थानकथी आरंभी अध्यात्मज्ञाननुं प्राकट्य थाय छे. मुख्यतया अध्यात्म ज्ञानीओ त्यागी मुनियो होय छे कारण के तेओ परमात्मपदप्राप्तिमाटे अहोनिश गवेषक होय छे. मुनिनां मनोमां अने मुनिना हृदयमां अध्यात्मज्ञाननी झांखी होय छे गृहस्थो, अध्यात्मज्ञानमां सर्षप समान छे अने अध्यात्मज्ञानमां ज्ञानी मुनियो मेरु समान छे. ज्ञानीमुनियो सर्व प्रकारना भयथी रहित होय छे. चतुर्थ गुणस्थानक करतां पांचमा देशविरति गुण स्थानकमां अध्यात्मज्ञान अनंतगणुं खीले छे. पंचमा देशविरति गुण स्थानक करतां छठामर्वविरतिप्रमत्तगुणस्थानकमां अनंतगणुं विशेष अध्यात्मज्ञान खीले छे, छट्ठा सर्वविरति गुणस्थानक करतां सातमा अप्रमत्तगुणस्थानकमां अनंतगणुं विशेष अध्यात्मज्ञान खीले छे, एम उपशांतगुणस्थानकोमां बारमा गुणस्थानक सुधी अध्यात्मज्ञान खीले छे अने त्रयोदशमासयोगीकेवलीगुणस्थानकमां केवलज्ञान प्रगट थाय छे अने त्यां साध्यनी सिद्धि थाय छे. अंतरात्मदशामां अध्यात्मज्ञानदशा सदा संप्रवर्तन करावे छे.

समकितीने अध्यात्मज्ञान प्रगटे छे. अध्यात्मज्ञान प्रगटया
बाद अध्यात्मज्ञानवडे आत्मस्वभावे आत्मामां परिणमवुं, एवुं
जे निश्चय चारित्र छे ते छठ्ठागुण स्थानकमां अने विशेषतः
सातमागुणस्थानकथी विशेष प्रकटे छे. ज्यारे व्यवहार चारित्रमां
पूर्ण स्थिरता थाय छे अने गीतार्थ गुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तन थाय
छे तथा व्यवहार अने निश्चयनो पूर्ण अनुभव आवे छे तथा गीतार्थ
मुनि गुरुनी पूर्ण कृपा मेळवीने अध्यात्मज्ञाननी प्रवृत्ति थाय छे त्यारे
क्रियामां अने ज्ञानमां स्थिरता वधे छे अने सर्वदृशानो अनुभव
आवे छे अने तेथी एकदेशीनी एकांत आग्रहदशा रहेती नथी.
ज्ञानी गीतार्थ मुनिवरनी सलाह लेइ अध्यात्मज्ञान मतिरळवुं, अन्यथा
व्यवहारधर्मसाधनना अधिकारथी पण भ्रष्ट थवानुं थाय छे. ए-
कांत शुष्क आत्मज्ञानीओथी चेतता रहेवुं, कारण के तेओ बालजी-
वोने तेमना धार्मिक क्रियारुचिना अधिकारथी भ्रष्ट करे छे अने
बालजीवोने अध्यात्मज्ञानदशानी दशापण तेथी क्रियारुचि दशा प्राप्त
थयाविना प्रगटती नथी तेथी तेओ उभयथी भ्रष्ट थाय छे माटे बालजी-
वोएतो गीतार्थ आचार्यनी सलाह लेइ अध्यात्मज्ञानना ग्रन्थोमां प्रवृत्ति
वा निवृत्ति करवी. अमने गुरुनी कृपाथी व्यवहारमां तथा निश्चयमां
श्रद्धा स्थिरता थइ छे तेथी एकांत वलण थयुं नथी अने अन्योने
जैन शास्त्रोना ज्ञानपूर्वक अनेकांत वलण रहे ते माटे खास सूचना
करवामां आवे छे के जेथी अध्यात्मज्ञाननी लगनी लागे तोपण
श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी तथा श्रीमद्देवचंद्रजीनीपेठे
चारित्रादि धर्म व्यवहारमां स्थिरता वधे अने अध्यात्मज्ञाननो उप-
योग पण ताजो रहे. एकांतक्रिया जडवादीओने अध्यात्मज्ञान
तरफ अरुचि होय तो तेओने अध्यात्मज्ञानना शास्त्रोनुं रहस्य स-
मजवा माटे गीतार्थ सूरिआदिनी सेवाभक्तिमां लयलीन थवा विज्ञ-
प्ति करवामां आवे छे.

मुनिनी सर्व धर्म प्रवृत्तिमां अध्यात्म ज्ञान भर्युं होय छे फक्त ते समजवानी जरुर छे. अमने पच्चीशसत्तावीश वर्षथी अध्यात्म ज्ञान तरफ लक्ष्यवृत्ति वळी छे अने अमोए अध्यात्म ज्ञाननां तथा द्रव्यानुयोगनां तथा योगनां जैनधर्म संबंधी तथा जैनेतर धर्मो संबंधी हजारो पुस्तको वांच्यां छे अने गुरुनी सेवा भक्ति करीने तथा गुरुनो आशीर्वाद लहीने गुरु कुलमां रहीने अध्यात्म ज्ञानने कंइक आत्मस्वरूपे पचाववा प्रयत्न कर्यो छे तेथी आत्माना उपयोगमां चढतां अध्यात्म ज्ञाननी भावनाना उछाळाओ प्रगटतां अध्यात्म ज्ञाननां जे जे भजनो पदो प्रगट्यां होय ते तेवा अधिकारीओमाटे दिशि दर्शक छे पण तेवी दशा जेओनी न थइ होय तेओए तो ते तरफ रुचि राखवी अने पोताना अधिकार प्रमाणे धर्मक्रियामां प्रवृत्ति करवी अने एवी दशा प्राप्त करवा माटे तीव्रच्छा राखवी पण ते दशा आव्याविना मारा जेवानुं अनुकरण करवुं ते एकांत हितावह नथी. तेमज गीतार्थ गुरुनी सल्लाह लीधाविना कंइ पण तेमां प्रवृत्ति वा निवृत्ति न करवी, एवी स्वानुभवथी सूचना आपुं छुं. केटलाक शुष्क ज्ञानीओ पोतानी दशा अध्यात्मज्ञान परिणति थयाविना धर्मनी क्रियायोनो त्याग करे छे अने अन्योने पण तेओ धर्मनी क्रिया-कार्योथी भ्रष्ट करे छे ते योग्य नथी. आत्मज्ञानीओ कर्मयोगीओ बने छे अने अंतरथी आत्मोपयोगे वर्ते छे ते बाबतनुं विशेषस्पष्टीकरण श्रीआनंदघन पद भावार्थसंग्रहमां अने कर्मयोगग्रन्थमां करवामां आव्युं छे तथा योगदीपकग्रन्थमां तथा गद्यसंग्रह तेमज पत्रसदुपदेश प्रथमभागमां तथा पत्रसदुपदेश बीजा भागमां करवामां आव्युं छे, तेथी विशेष जिज्ञासुओए ते ग्रन्थो वांचीने विशेष खुलासो मेळववो.

गीतार्थगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तीने अध्यात्मज्ञान मेळववाथी आत्मानुं स्वरूप अनुभवाय छे. धर्म परीक्षामां श्रीमद् उपाध्याये ते माटे संक्षेपे प्रमाणे कह्युं छे.

तद्यथा.

गुरुआणाइ ठियस्सय वज्झाणुट्ठाणसुद्धचित्तस्स ।
अज्झप्पज्झाणम्मिवि एगग्गत्तं समुल्लसइ ॥ ९९ ॥
तंमिय आयसरूवं विसयकसायाइदोसमलरहिअं ।
विन्नाणाणंदघणं परिसुद्धं होइ पच्चक्खं ॥ १०० ॥
जलहिम्मि असंखोभे पवणाभावे जहाजलतरंगा ।
परपरिणामाभावे णेव विअप्पा तया हुंति ॥ १०१ ॥
अण्णेपुग्गलभावा, अण्णो एगोय नाणमित्तोहं ।
सुद्धोएस वियप्पो, अविअप्पसमाहिसंजणओ ॥१०२॥
एयं परमं नाणं, परमो धम्मो इमोच्चिय पसिद्धो ।
एयं परमरहस्सं णिच्छयसुद्धं जिणा बिंति ॥१०४॥

बाह्यधर्म क्रियानुष्ठानवडे जेनुं शुद्ध चित्त थएलुं छे तथा गुर्वाज्ञामां स्थित छे तेने अध्यात्म ध्यानमां एकाग्रपणुं विलसे छे, अध्यात्मज्ञान ध्यान समाधिमां विषयकषायदोषमलरहित विज्ञानानंदघन एवुं आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष थाय छे. क्षोभविनाना समुद्रमां पवनना अभावे जेम जल तरंगो प्रगटता नथी तेम परपरिणामना अभावे आत्मामां संकल्पविकल्पो प्रगटता नथी, हुं आत्मा ज्ञानानंद स्वरूप छुं बाकी अन्य सर्व जडपुद्गल भावो छे, एवो शुद्धविकल्प अर्थात् विचार तेज निर्विकल्प समाधिजनक छे एवुं अध्यात्मज्ञान छे तेज परम ज्ञान छे अने तेज परम धर्म छे एवो आत्मा ज्ञानवडे सर्वत्र प्रसिद्ध छे अने एज परमरहस्य छे एम जिनेश्वरो निश्चय शुद्ध आत्मस्वरूप प्रकाशे छे. सर्व धर्म क्रिया व्यवहार प्रवृत्तियो पण आत्माना स्वरूपना प्रकाश माटे थाय तोज ते उपयोगी छे. उपयोगे धर्म छे, क्रिया

ए कर्म छे अने परिणामे बंध छे, माटे आत्मज्ञानना उपयोगी बनी आत्मानो प्रत्यक्ष अनुभव करवो मनुष्य जन्मनुं ध्येय ए छे के आत्माने परमात्मारूपे प्रकटाववो, अनुभववो अने सर्वकर्म दुःखथी मुक्त थवुं. अज्ञानीओ क्रियाथी बंधाय छे अने आत्मज्ञानीओ क्रिया करीने कर्मथी मुक्त थाय छे. ज्ञानीना वचनथी हलाहल विष पीवुं अने आत्माना अज्ञानीना वचनथी अमृत पण न पीवुं. आत्मज्ञानीनो सर्व धर्म व्यवहार करणी मोक्षार्थे थाय छे. आत्मज्ञानी सर्वमां प्रवृत्ति करतो छतो पण सर्वथी निःसंग छे अने अज्ञानी सर्वथी बाह्यदृष्टिए निःसंग अक्रिय छतां आसक्त–कर्मबंध सहित छे, माटे अध्यात्मज्ञाननी दशाप्राप्त करवा एक क्षण पण प्रमाद न करवो. आध्यात्मिक भजनो पछी पत्र १२६ थी शोकनिवारक ग्रन्थ छे अने पत्र १४३ मां चेतक बोधोर्मि ग्रन्थ छे. पत्र १४८ मां संघ कर्तव्य ग्रन्थ छे तथा पत्र १५७ मां प्रजा समाज कर्तव्य ग्रन्थ छे ते ग्रन्थो आध्यात्मिक दृष्टिनी कल्पनाए आध्यात्मिक पात्रोनी रचना करीने स्वबुद्धि कल्पना अनुसारे रच्या छे तेथी तेमां जैन शास्त्रोनी शैलीथी कंइ विरुद्ध लखायुं होय तो श्री चतुर्विध संघ आगळ मिथ्या दुष्कृत दउं छुं अने गीतार्थोने ते सुधारवानी विज्ञप्ति करूं छुं अने जे कंइ विपरीत होय ते भागने बहिष्कृत करवा विज्ञप्ति करूं छुं. जे सज्जनोने ग्रन्थ वांचतां जे कंइ शंका पडे वा तेमांने जैनशैली विरुद्ध लागे तेनो खुलासो लेवानी इच्छा होय तो तेओए रूबरूमां मळी खुलासो करवो वा पत्रद्वारा खुलासो करवो. ज्यां सुधी शरीरमां आत्मा छे त्यां सुधी लेखक सर्व बाबतना खुलासा करवाने वाचकोने विज्ञप्ति करे छे. मुनिवरोनो अधिकार छे के तेओए संघ अने प्रजाना कर्तव्य संबंधिना ग्रन्थो रचवा अने ते संबंधी में गमा उपरांत केटलुंक लिखित मनन कर्युं छे तेमांथी सज्जनो योग्य लागे ते ग्रहण करी शकाय छे.

चतुर्विध संघनी महत्ता जेटली वर्णवीए तेटली न्यून छे. श्री तीर्थंकरो पण नमोतित्थस्स बोली चतुर्विध संघने नमस्कार करे छे, एवा श्री संघनां कर्तव्यो शुं? छे ते संघकर्तव्य ग्रन्थमां जणाव्युं छे. संघनी आगळ मारा जेवा एक अणु जेवा छे. संघनी सेवा भक्तिथी स्वर्गनी अने सिद्धिनी प्राप्ति थाय छे. चतुर्विध संघमांथी तीर्थंकर सूरिवाचक साधु वगेरेनी उत्पत्ति थाय छे. संघनां कर्तव्योने संघ जाणीने ते प्रमाणे वर्ते तो संघनी प्रगति थयाविना रहे नहि. संघनी आगळ कोइ महान नथी. गृहस्थ श्रावक श्राविकासंघमां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अने शूद्र ए चार वर्ण जो गुणकर्मथी इयानी नथी भोगवती तो संघनी हानि थवी थाय छे. गृहस्थ संघने प्रजा-समाजनी साथे विश्वमां वाणआजीविकादि संबंधथी जीववामाटे संबंध राखीने जन्मभूमि, समाज, धर्म, राज्य लक्ष्मी कुटुंबादिना रक्षण माटे सर्व प्रकारे तैयार रहेवुं पडे छे अन्यथा तेनुं दुनियामां नामनिशान पण रहेतुं नथी. गृहस्थ श्रावकादि संघना अस्तित्वमां त्यागी संघनुं अस्तित्व छे अने त्यागी साधुसाध्वीरूप संघना अस्तित्वमां गृहस्थ श्रावक संघनुं अस्तित्व छे, बन्ने भेगा मळीने दुनियामां जैनधर्मनी चढती करी शके छे. चतुर्विध संघ वर्तमानकालमां जे कंइ करे तेमां तीर्थंकरनी आज्ञा छे. अत एव विष्णुकुमार मुनि अने कालिकाचार्य श्री संघनी रक्षामां तथा रक्षारूप सेवा भक्तिमां पोतानी शक्तियोने फोरवी हती. योगी त्यागी समाधिवंत महामुनियो पण श्री भद्रबाहुनी पेठे संघनी आज्ञाने उठावीने ते प्रमाणे वर्ते छे. संघना अस्तित्वमांज स्थावरतीर्थ जैनशासन आदि सर्वनुं अस्तित्व छे. संघनी सेवा भक्तिमां सर्व तीर्थंकरो वगेरेनी सेवाभक्ति समाइ जाय छे. माटे संघ कर्तव्य ग्रन्थ रचीने संघनी सेवाभक्ति करी संघनी उन्नति जणावी छे. तेमां कंइ वीतराग महावीर प्रभुनी आज्ञा विरुद्ध लख्युं होयतो संघनी आगळ माफी मागुं छुं. प्रजासमाज

कर्तव्य ग्रन्थ रचीने प्रजासमाजनां कर्तव्य दर्शाव्यां छे ते प्रजार्नी सत्य उन्नति थाय तथा प्रजासमाज पोते मार्गानुसारी गुणवाळो बनी धर्मनी योग्यता पूर्वक धर्मने भाविमां प्राप्त करे तेज मुख्य उद्देशने ध्यानमां राख्यो छे. प्रजासमाजने सात्विकधर्मना मार्गे चढाव्याथी संघनी शुद्धि प्रगति थाय छे. छेवटे प्रभु महावीर देवनुं मंगाप्ति मंगल करीने ग्रन्थ समाप्त करवामां आव्यो छे. भजनसंग्रह दशमा भागमां अध्यात्म ज्ञानपदो, भक्ति, योग, नीति, सेवाभक्ति वैराग्यादि पदोनो समावेश थाय छे, तेमांनां केटलांक आंतरिक स्वगत ओद्‌गारिकरूप छे अने केटलांक उपदेशरूप छे ते गुरुगम लेइ वांचशे तेओने तुर्त अवबोधाशे. भजनसंग्रहदशमो भाग अने तेनी प्रस्तावना वांचनाराओए ते पहेलांना नव भाग अने तेनी प्रस्तावना वांचवी के जेथी तेओने परितः ज्ञान थाय अने आत्मानी परमात्मता प्रगटाववामां विशेष उत्साह प्रवृत्ति थाय. भजनो पदो वगेरे फक्त दिशा देखाडे छे पण गीतार्थ गुरुने शीर्षपर स्थापन करीने आत्मानी शुद्धि करवानो पुरुषार्थ कर्याविना मुक्तिनी प्राप्ति थती नथी. गीतार्थ गुरुनी संगति करवामां एक क्षण मात्र पण प्रमाद न करवो. अध्यात्मज्ञानना अनुभवथी सर्वप्रकारना कदाग्रह टळी जाय छे अने धर्मकर्म करवाथी व्यवहारधर्मनी आराधना पूर्वक सर्व कर्मथी शुद्ध शुद्धात्मा थाय छे. भजन ग्रन्थादिकथी संघनी सेवा भक्ति करवा व्हारा आत्मानी पूर्णता प्रगटे अने सर्व जीवो आत्मानी पूर्णता प्रगटावो एम इच्छुं छुं. इत्येवं ॐ अर्हं महावीर शान्तिः ३

वि. संवत् १९७९ श्रावण शुक्ल पंचमी.

मु. विजापुर विद्याशाला.

---

५१ आत्मतत्त्व दर्शन.	११२	०-१०-०
५२ भारत सहकार शिक्षण काव्य	१६८	०-१०-०
५३ श्रीमद् देवचंद्र भाग. २	१२००	३-८-०
५४ गहुली संग्रह भा. २	१३०	०-४-०
५५ कर्मप्रकृतिटीकाभाषांतर	८००	२-०-२
५६ [illegible]	[illegible]	[illegible]

* २१ भजन पद संग्रह भाग ६ ट्ठो.	२०८	०-१२-०
२४ वचनामृत.	८३०	०-१४-०
२३ योगदीपक.	३०८	०-१४-०
२४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा.	४०८	१-०-०
* २५ आनन्दघन पदसंग्रह भावार्थ सहित,	८०८	२-०-०
* २६ अध्यात्म शान्ति [आवृत्ति बीजी]	१३२	०-३-०
* २७ काव्यसंग्रह भाग ७ मो.	१५६	०-८-०
* २८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति.	९६	०-२-०
२९ कुमारपाल चरित्र (हिंदी)	२८७	०-६-०
३० थी ३४ सुखसागर गुरुगीता	३००	०-४-०
३५ षड्द्रव्य विचार.	२४०	०-४-०
* ३६ विजापुर वृत्तांत.	३०	०-४-०
३७ साबरमती काव्य.	१९६	०-६-०
३८ प्रतिज्ञा पालन. २०४	११०	०-५-०
३९-४०-४१ जैनगच्छमत प्रबंध संघप्रगति जैनगीता.		१-०-०
४२ जैन धातुप्रतिमा लेख संग्रह		१-०-०
४३ मित्रमैत्री.		०-८-०
४४ शिष्योपनिषद्.		०-२-०
४- जैनोपनिषद्.	४८	०-२-०
४६-४७ धार्मिक गद्यसंग्रह तथा सदुपदेश भाग १ लो.	०७६	३-०-०
४८ भजन संग्रह भा. ८	९७६	३-०-०
४९ श्रीमद् देवचंद्र भा. १	१०२८	२-०-०
५० कर्मयोग.	१०१२	३-०-०

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळामां प्रगट थयेला ग्रन्थो.

ग्रंथांक		पृष्ठ	किंमत.
१	क. भजन संग्रह भाग १ लो.	२००	०–८–०
* १	अध्यात्म व्याख्यानमाळा.	२०६	०–४–०
* २	भजनसंग्रह भाग २ जो.	३३६	०–८–०
* ३	भजनसंग्रह भाग ३ जो.	२१५	०–८–०
* ४	समाधि शतकम्.	६१२	०–८–०
* ५	अनुभव पचिशी.	२४८	०–८–०
६	आत्मप्रदीप.	३१५	०–८–०
* ७	भजनसंग्रह भाग ४ थो.	३०४	०–८–०
८	परमात्मदर्शन.	नरफ	०-१२–०
* ९	परमात्मज्योति.	५००	०-१२–०
* १०	तत्त्वबिंदु.	२३०	०–४–०
* ११	गुणानुराग. [आवृत्ति बीजी]	२४	०–१–०
* १२–१३	भजनसंग्रह भाग ५ मो तथा ज्ञानदीपिका.	१९०	०–६–०
* १४	तीर्थयात्रानुं विमान [आ. बीजी]	६४	०–२–०
* १५	अध्यात्म भजनसंग्रह.	१९०	०–६–०
* १६	गुरुबोध.	१७४	०–४–०
* १७	तत्त्वज्ञानदीपिका.	१२४	०–६–०
१८	गहुंलीसंग्रह भा. १	११२	०–३–०
* १९–२०	श्रावकधर्मस्वरूप भाग १–२ [आवृत्ति त्रीजी]	४०४	०–१–०

० २१ भजन पद संग्रह भाग ६ ठो.	३०८	०-१२-०
२२ वचनामृत.	८१०	०-१४-०
२३ योगदीपक.	३०८	०-१४-०
२४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा.	४०८	१-४-०
० २५ आनंदघन पदसंग्रह भावार्थ सहित,	८०८	२-०-०
० २६ अध्यात्म शान्ति [आवृत्ति बीजी]	१२४	०-३-०
० २७ काव्यसंग्रह भाग ७ मो.	१५६	०-८-०
० २८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति.	९६	०-२-०
२९ कुमारपाल चरित्र (हिंदी)	२८७	०-६-०
३० थी ३४ सुखसागर गुरुगीता	२००	०-४-०
३५ षड्द्रव्य विचार.	२५०	०-४-०
० ३६ विजापुर वृत्तांत.	९०	०-४-०
३७ साबरमती काव्य.	१०६	०-६-०
३८ प्रतिज्ञा पालन. २०४	११०	०-५-०
३९-४०-४१ जैनगच्छमत प्रबंध संघप्रगति जैनगीता.		१-०-०
४२ जैन धातुप्रतिमा लेख संग्रह		१-०-०
४३ मित्रमैत्री.		०-८-०
४४ शिष्योपनिषद्.		०-२-०
४५ जैनोपनिषद्.	४८	०-३-०
४६-४७ धार्मिक गद्यसंग्रह तथा सदुपदेश भाग १ लो.	९७६	३-०-०
४८ भजन संग्रह भा. ८	९७६	३-०-०
४९ श्रीमद् देवचंद भा. १	१०२८	२-०-०
५० कर्मयोग.	१०१२	३-०-०

५१ आत्मतत्त्व दर्शन.	११२	०-१०-०
५२ भारत सहकार शिक्षण काव्य	१६८	०-१०-०
५३ श्रीमद् देवचंद्र भाग. २	१२००	३-८-०
५४ गहुंली संग्रह भा. २	१३०	०-४-०
५५ कर्मप्रकृतिटीकाभाषांतर	८००	३-०-२
५६ गुरुगीत गुहुंलीसंग्रह	१९०	०-१२-०
५७-५८ आगमसार अने अध्यात्म गीता	४७०	०-६-०
५९ देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह.	१७५	०-०-०
६० पूजासंग्रह.	४१६	१-० ०
६१ भजन पदसंग्रह भा. ९	४५०	१-८-०
६२ भजनपद संग्रह भा. १०	२००	१-०-०

६३ पत्रसदुपदेशभाग बीजो.

६४ ईशावास्योपनिषद्, जैनदृष्टिए विवेचन
जैनधातुमतिमा

६५ लेख संग्रह भाग बीजो.

* आ नीशानीवाळा ग्रंथो सीलकमां नथी.

उपरनां पुस्तको मळवानुं ठेकाणुं.

जैनाचार्य बुद्धिसागरसूरिविरचित.

भजनपद संग्रह भाग १० मो.

परमोपकारी गुरुनी गुंहली तथा स्तुति.

सुविधि जिनेश्वर साहिब साचो. ए राग.

गुरुवा गुणवंत गुरुजी प्राणथी प्यारा:
आतमना आधारारे, गुरुजी प्रभुने मिलावो,
अलख प्रभु ओळखावोरे. गुरुजी.
कथनीथी क्रोड गाउ प्रभुजी छे दूरे,
पासे प्रभुजी प्रेम पूरेरे. गुरुजी.
गायाथी लाख गाउ दूर जणाये,
समजणथी पासमां सुहायेरे. गुरुजी. १
पासे प्रभुजी नथी आंतरुं क्यारे,
आपो आप विचारेरे. गुरुजी.
साकार प्रभु संत परगट पेख्या,
तनु संग आतम देख्यारे. गुरुजी.
ज्ञान आनंदगुणी परगट पोते,
झळहळे निर्मल ज्योतेरे. गुरुजी. २
शुद्ध आतम अनुभवने करावो,
इन्द्रियरसने हठावोरे. गुरुजी.
आतमरूपमां रंगे रमाडो,
आतममां मन वाळोरे. गुरुजी. ३

ज्ञानी गुरुना पद्मां प्रभुजी, विश्वासी शिर उपरेरे;
अनुभवी ते आप प्रभु छे, समजावो दिल सुधरे. प्रभु. मारा. ५
प्रभु न जाति लिंग ने भाति, प्रभु न मनना विचारोरे;
प्रभु जाणे ते आप प्रभुजी, समजावीने सुधारो. प्रभु. मारा. ६
प्रभु परखावे ते सद्गुरुजी, शरणागतने तारोरे;
प्रभु विना म्हने कशुं न गमतुं, गुरु प्रभु दिल प्यारो. प्रभु. मारा. ७
हुं तुं मोहनो भेद भूलावो, आनंदनो द्यो ल्हावोरे;
स्वार्पण करी तुज शरणुं कीधुं, मनमां महेरने लावो. प्रभु. मारा. ८
लाल विना नहीं लाभ कश्यानो, मोति विना नहीं ज्योतिरे;
प्रभु मळतां नहीं पनोती, रहे न सूरत रोती. प्रभु. मारा. ९
नामरूपना मोहथी मरवुं, शीखवी प्रेमी मिलावोरे;
हुं तुं ते एक आतम सत्ता,-रूपे ते सत् परखावो. प्रभु. मारा. १०
मननो मोह शमावो गुरुजी, आतम ज्ञानने आपोरे;
ज्ञानानंद प्रकट ते प्रभुता, रस दै रसमय छापो. प्रभु. मारा. ११
गुरुविना नहीं मुक्ति कदापि, मुजपर करुणा धारोरे;
बुद्धिसागर सद्गुरु प्रेमी, प्राणजीवन आधारो. प्रभु. मारा. १२

गुरुगीत स्तुति.

मारे दिवाळीरे थै आज. ए राग.

मारा मन मान्या गुरुराज, ज्ञानने आपो रे.
मारा ज्ञानी गुरु गुणवंत, दिलमां व्यापो रे—
चार कषायो केडे पडिया, क्षण क्षण संग न चूके रे;
कामना कामनी गति छे वसमी, मन विश्राम न मूके. ज्ञान. मा. १
विषय वासना दारुण विरखी, मन तन फोली खायुं रे;
मोह मायानो पार न पायुं, हुं ? प्रभुने आराधुं. ज्ञा. मा. २

मननी मारामारी जीताजीत, हारंहारा थाती रे;
मन वश आतम सेज न शांति, वात कही नहि जाती. ज्ञा. मा. ३
मन पंथ दर्शन वाद मनोनी, एकेक रीते भराणो रे;
ज्यां जाउं त्यां मनना वादो, मोहे ज्यां त्यां घराणो. ज्ञा. मा. ४
मननी मान्यता मनना धर्मो, आत्मधर्म न जाण्यो रे;
तात्त्विक प्रकृति धर्मने जाण्यो, आतमको न प्रमाण्यो. ज्ञा. मा. ५
वासनावना मोहे भरियो, हर्ष शोकथी भरियो रे;
हुं हुं कर्म पण हुंने न जाणुं, मोह मे दुःखनो दरियो. ज्ञा. मा. ६
मनडुं मर्कट वशमां न आवे, रहे शुभाशुभ भावे रे;
जगरसने मनडुं बहु च्हावे, आतम रसना अभावे. ज्ञा. मा. ७
आतमनिश्चे स्वच्छंदी थै, देव गुरुने न गणतो रे;
आतम रंग प्रगटावे पहेलां, शास्त्रोने नहि भणतो. ज्ञा. मा. ८
आतमज्ञान विनानुं जीवन, खातुं गुरुजी माणो रे;
हवे दया कंइ दिलमां आणो, मारो आतम प्राणो. ज्ञा. मा. ९
श्रद्धा प्रीतिथी तन मन धन, सर्वे तुमपर वार्युं रे;
परमानंद पमाडो परगट, शिवपद पदवुं धार्युं. ज्ञा. मा. १०
तुज मुज भेद विनानी भक्ति, आपो आतमशक्ति रे;
बुद्धिसागर प्रभुपद व्यक्ति, तुज सेवा आसक्ति. ज्ञा. मा. ११

तपियाने बोध.

राग होरी.

तपिया तन न तपावो, तन तापे प्रभु ताप रे. तपिया,
धार तापकी धूणी तापे, देह ताप संतापो;
जबतक दिलमें मोहको तापो, तब तक टले न पच्छापो रे. तपिया. १
कामवासना आशा तापे, मनमां न प्रभुको मिलावो;

शुद्धप्रेमसें प्रभु है पासे, ज्ञानसें प्रभुकुं जगावो रे. तपिया. २
समतासें तन मनकी शांति, जपने पडता न जापो;
मोहतापकुं दूर करो झट, क्रोधकुं मन नहि छापो रे. तपिया. ३
शुद्धप्रेमकी धूनी धखावो, शील लंगोट लगावो;
ज्ञानाग्नि दिलमां प्रकटावो, ऐसा योग कमावो रे. तपिया. ४
नामरूपकी विषय वासना, उनकुं दूर हठावो;
प्रभुसें एकरूप हो जावो, ज्योति ज्योत मिलावो रे. तपिया. ५
दुनियाकुं क्या तप देखाना, प्रभुसें तान लगावो;
आनंदरसका प्याला पीकर, मस्ताना हो जावो रे. तपिया. ६
प्रभुविरहतपसें तन मनका, ताप, धूणी यहां ? तापो;
शुद्धप्रेमसें दिलमां परगट, चिदानंद प्रभु व्याप्यो रे. तपिया. ७
कष्टकी कोडी किंमत कोडि, ऐसा तपकुं न च्हावो;
बुद्धिसागर आतमप्रभु है, आपकुं आप मिलावो रे. तपिया. ८



आत्मधर्म.

राग सोरठ.

आतम धर्म है न्यारा—साधु भाइ आतम धर्म है न्यारा:
मनवाणीकायासें न्यारा, निरंजन निराकारा;
तप जप व्रतसें भिन्न अपारा, ज्यां नहि मोह प्रचारा. साधु. १
सत्त्व रजस्तम गुण कर्मोसें, न्यारा है निर्धारा;
मनसंकल्प विकल्पसें न्यारा, पुद्गल धर्मसें न्यारा. साधु. २
दयासत्यास्तेयादिक सब, साधनधर्मसें न्यारा;
पूर्णानन्द रु पूर्ण ज्ञानमय, आतमरूप अपारा. साधु. ३
नय अरु भंग निक्षेप विचारसें, न्यारा है अविकारा;
बुद्धिसागर आतम धर्मकुं, जाना भयकुं निवारा. साधु. ४



श्री रविसागर गुरु जयंती स्तुति.

राग होरी.

रविसागर मुनि राया, जग जय डंक बजाया, प्रेमे प्रणमो पाया. रवि.
गुर्जर आदि देश सुधार्या, प्रभुमां चित्त लगाया;
जैनोने जैनधर्म जगाया, संतमां श्रेष्ठ सुहाया,
निरंजन आप कहाया. रवि. १
कायानी पण रही नहीं माया, गुरु गुण विश्व छवाया;
सुरनरवर नित्य प्रणमे पाया, प्रेमे तुज गुण गाया,
जगत्मां श्रेष्ठ सुहाया. रवि. २
रवि शशि सागर पृथ्वी वायु, आकाश उपमा पाया;
लब्धि सिद्धि भंडार गुरुजी, तुज चरणे चित्त लाया,
दयाना दरिया डाया. रवि. ३
तुज समरे सहु मंगलमाळा, ध्यानविषे में धार्या;
बहुला भक्त जनोने उद्धार्या, दुर्गुण दोष निवार्या,
हजारो भक्तने तार्या. रवि. ४
सहाय करो गुरु थै अणधार्या, व्हारे आवो संभार्या;
प्रेमी भक्त जनोने तार्या, निश्चय गुण निर्धार्या,
अवधूत जोग जगाया. रवि. ५
गुरु कृपाथी ज्ञान ने मुक्ति, गुरु भक्ति चित्त ठाया;
गुरुविनानां नगुरां नास्तिक, ठाम ठेकाणे न आया,
गुरुशिर सुखिया थाया. रवि. ६
रविसागर गुरु गुण गण गाया, गुरुवर दिलमांहि ध्याया;
बुद्धिसागर सद्गुरु श्रद्धा, प्रीति कृपा रस पाया,
आनन्द दिल उभराया. रवि. ७

योगी.

अवधूत वैराग्य वेष जाया. ए राग. सोरठ—आशावरी.

जोगी ऐसा जोग जमाया, त्याग भभूत लगाया. जोगी.
शुद्धनेमकी मस्ती पाया, योग जटाकूं धराया;
शील लंगोटा सत्संग मुद्रा, क्रिया कुंडल लगाया. जोगी. १
सत्य ग्रहण इच्छाकी झोली, प्रनरूपचीपिया चढाया;
प्रभु तन्मयता तरकूं तपोया, स्थिरता आसन पाया. जोगी. २
स्थिर उपयोगकी पवन पावडी, प्रह्माकाश विचराया;
मतिश्रुत ज्ञानका शंख बजाया, प्रेमका प्राण जगाया. जोगी. ३
मन पवन माया पर वशमें, जीन निशान चढाया;
देह देवलमें प्रकट प्रभु शिव, स्वयं सदा परखाया. जोगी. ४
कर्म काष्ट ओर भक्तिकी धूनी, ज्ञानाग्नि प्रजलाया;
तत्त्वमसि सोऽहं उपासना, अजपाजाप जपाया. जोगी. ५
धारणा कुंडी ध्यानका गांजा, दिल शिलामें घुंटाया;
गुरुगम पानी सेवासाफी, संयम चलम फुंकाया. जोगी. ६
उपयोगका दमजोरे फुंकाया, ब्रह्मसमाधि चढाया;
आतम आनन्द रसकुं पाया, परमब्रह्मरूप पाया. जोगी. ७
अलख अलख मुखसें उच्चराया, पाया सो न कथाया;
नेति कथी निजमांही समाया, ऐसी कमाणी कमाया. जोगी. ८
त्याग नहीं ओर ग्रहण कछु नहीं, आपो आप सुहाया;
बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, अलख अमर हो जाया. जोगी. ९

तपियाने बोध.

राग होरी.

तपिया तन कां तपावे, अंतरमां बहु तापरे. तपिया.
कामनी अग्नि मनडुं तपावे, तन इन्द्रि बळी जावे;
मनमांहि तुं जोने तपासी, धूणी तापे शुं ? थावेरे. तपिया. १
जटा वधारी जोगी बनीने, दिलने क्रोध धखावे;
काम जिहां तिहां राम न प्रगटे, शुं ? लंगोट लगावेरे. तपिया. २
माया मरी नहि मन नहि मरियुं, शुं तनु भस्म लगावे;
चिपीयो राखे नहि चित्त वशमां, दंभ शुं ? कंथा धरावेरे. त. ३
सूरजतापे हक्षो तपे छे, वडला जटाओ वधारे;
राखमांही आलोटे गद्धां, मुक्ति छे मोह मारेरे. तपिया. ४
समता वण शंख फुंके वळे शुं ?, मेख धरे नहीं फावे;
आतमज्ञान विना नहीं मुक्ति, मूढने शुं ? भरमावेरे. तपिया. ५
जलना स्नाने मुक्ति मळे तो, मीनादिक शिव पावे;
आश तज्या वण आसन वाळी, श्यानो ? जोग जगावेरे. तपिया. ६
देहतापथी मनना तापो, वधारे शांत न थावे;
आतमज्ञानथी मनना तापो, शांतपणाने पावेरे. तपिया. ७
मोह काम आशाने त्यागे, त्यागी सहुको थावे;
बाह्य त्यागी पण अंतररागी, त्यागी वने नहि फावेरे. तपिया. ८
मन वश नहि तो वनमां गए शुं ?, लाख चोराशी न जावे;
वासना ज्यां त्यां वन घर सरखां, शुं ? जगने समजावेरे. तपिया. ९
मन नहि दंड्युं दंड धरे शुं ?, वयां मनु जन्म गुमावे;
ज्ञानी गुरुगम ज्ञान ग्रही ले, मनडुं वशमां आवेरे. तपिया. १०
मुक्ति न वर्णे मुक्ति न मरणे, मुक्ति छे मोह हठावे;
बुद्धिसागर गुरुना संगे, परमानंद सुख थावेरे. तपिया. ११

सत्य राज्य.

राग आशावरी.

राज्य खरा एह तेरा, आतम !!! राज्य खरा ए तेरा;
ज्यां नहि तेरा मेरा................................आतम०
बाह्यराज्यकी खटपट नहि जिहां, मोहका नहि अंधेरा;
जडमें त्यागग्रहणकी न वृत्ति, ज्यां नहि मनका फेरा. आतम. १
असंख्यप्रदेशमें आप समाये, प्रगटे आनंद ल्हेरा;
आपोआप स्वरूपे खेले, को पर राग न वैरा. आतम. २
सर्ववासनातीत निरंजन, अनंत नूरका घहेरा;
बुद्धिसागर परमब्रह्ममय,-राज्य मिला वहां ठेरा. आतम. ३

आत्मविचार.

सोरठ वा आशावरी.

आतम आपो आप विचारा, जडसें आतम न्यारा. आतम;
मन मार्या बिनु मुक्ति नहीं है, मन तक है अवतारा;
मनकी माया भव पडछाया, मारना मनरूप मारा. आतम. १
शुभ अशुभ मनका है प्रचारा, मन जीते निस्तारा;
आतमज्ञानसें मन मरत है, आनंद अपरंपारा. आतम. २
ज्ञान रु आनंद आत्मधर्म है, अन्य है मोहविकारा;
बुद्धिसागर पूर्णानंदी, प्रगट्या दिल उजियारा. आतम. ३

माया.

राग आशावरी.

माया नहीं छे म्हारी, आतम !! माया नहीं छे म्हारी;
माने शुं ? म्हारी म्हारी. आतम.

माया स्वप्न क्षणिक पडछाया, साची न मायापारी,
माया पाछळ दुनिया मरी पण, माया न गइ कोइ ल्हारी. आतम. १
जेम जेम माया पाछळ दोडे, तेम तेम दुःख खुवारी;
मायाथी कदि सुख न सान्धुं, दुःखी नर ने नारी. आतम. २
सर्वविश्व छे माया वशमां, नानारूप विचारी;
मायाने म्हारी कहेवामां, संकट दुःख अपारी. आतम. ३
अज्ञान मोहनी मायामांही, मुंरया सहु संसारी;
हुं हुं वृत्ति मायारूपी, माया गति छे न्यारी. आतम. ४
नामरूपनी विषयवासना, लोक वासना भारी;
शास्त्र ने मतपंथ वासना टळतां, आनंद प्रगटे अपारी. आतम. ५
चिदानंद तुज रूप खरु छे, तुजमां न दुःख लगारी;
बुद्धिसागर निजमां आनंद, प्रभुना छे जयकारी. आतम. ६

स्वदेश प्राप्ति.

राग सोरठ.

साधुभाइ देश हमेरा पाया, आतममें आप समाया. साधु.
आदि अंत न पुद्गलसें भिन्न, निरंजन निर्माया;
पंचभूत नहि चंद सूरज नहि, नहि मनवाणी काया. साधु. १
नात जात नहि लिंग भात नहि, अज अविनाशी सुहाया;
राजा सेवक भेद जिहां नहि, नित्य सदा परखाया. साधु. २
मत पंथ दर्शन स्पर्श नहि जिहां, पूर्णानंद जमाया;
बुद्धिसागर पावे सो जाने, भरमे जगत भरमाया. साधु. ३

आत्मा अमर छे.

राग सोरठ.

आतम जन्म मरण नहि तेरा, मोहका ए है फेरा. आतम.
प्राणादिक पुद्गल नहि तुं है, मरे नहि कोउ तेरा;
जडमां चेतन भास भास है, एवुं पुद्गलका घेरा. आतम. १
उपजत नहि कबु विनशत नहि तुम, छोडी मिथ्या अंधेरा;
पुद्गल मायाका पडछाया, मानों न ए तुम तेरा. आतम. २
आतम बैठे निःसंग निर्मल, चिदानंदघन डेरा;
बुद्धिसागर अमर भये हम, रहा न कालका घेरा. आतम. ३

आत्मा कोइनो शिष्य नथी अने गुरु नथी.

राग सोरठ वा आशावरी.

आतम किसका गुरु नहि चेला, सबमें न सबके भेला. आतम.
आपोआप स्वरूपमें खेले, आपो आप अकेला;
जगका गुरु और जगका चेला, नभवत् जगका मेला. आतम. १
जगसें हिलमिल रहेंवे अकेला, नटनागरवत् खेला;
हमकुं हम जानत है ज्ञानें, रहा नहि अंधेरा. आतम. २
आपो आपकुं गावत ध्यावत, मोहका टलना फेरा;
बुद्धिसागर आप प्रभु है, दिया सुगतिमें डेरा. आतम. ३

आतम आपो आप प्रकाशी.

राग सोरठ.

आतम!! आपो आप प्रकाशी, अजरामर अविनाशी. आतम.
पराप्रेमसें दिलमां प्रकाशी, लेश रहत न उदासी;
शुद्धप्रेम प्रगटया विनु तपसें, पगले डगले फांसी. आतम. १

अंतर भूली बाहिर शोधत, जगमें होता हांसी;
मक्का काशी पहाड क्या ढुंढे, जलमें मीन ज्युं प्यासी. आतम. २
सब तीर्थ है आतमपासी, दिलदार है दिलवासी;
बुद्धिसागर परम प्रभुमय, ज्ञानानन्द विलासी. आतम. ३

प्रभुने.

सोरठ वा आशावरी.

प्रभु तुज अकळ कळा न कळाती, समजायां नहि समजाती. प्रभु.
वेरी कूपनी छाया कूपमां, प्रगट थइने समाती;
तेवी रीते मारी बुद्धि, त्हारो पार न पाती. प्रभु. ॥ १ ॥
उदधिनी उंडाइ मापवा, लुणनी पूतळी जाती;
सागररूप बनी ते जाती, माप कदापि न पाती. प्रभु. ॥ २ ॥
वेदागम मत दर्शन शास्त्रो, बांध्यां बहु भली भाति;
धारणा ध्यान समाधियोगे, शांती कंइक जणाती. प्रभु. ॥३॥
अक्षर अगोचर अगम अरूपी, अनंत प्रभा दीपाती;
ढांक्यो सूरज रहे न छानो, तुज महिमा एम भाति. प्रभु. ॥४॥
अनंत जलधिमां बुंदनी सरखी, षड्दर्शन मति थाती;
असंख्य लक्षणे लक्षित करतो, थाकी बुद्धि सुंहाती. प्रभु. ॥५॥
एम छतां पण मारी छाती, तुज प्रेमे उभराती;
बुद्धिसागर आतम ख्याति, चिदानंद सुहाती. प्रभु. ॥ ६ ॥

घर.

सोरठ.

संतो ज्ञाने निज घर जाना, कहां न जाना आना. संतो.
पंचदेह परपंच नहि जिहां, राग न द्वेष ठिकाना;

आठो कर्म न जन्म मरण नहि, असंख्यप्रदेशी माना. संतो. १
वर्ण गंध रस स्पर्श न ज्यांहि, ध्याता ध्येय न ध्याना;
पृथ्वी चंद सूरज नाहि सागर, वर्ते केवलज्ञाना. संतो. २
क्षण क्षण पूर्णानन्द प्रगट है, पूर्णानन्द पिछाना;
आदि अंत न अलख अरूपी, देखंतां मस्ताना. संतो. ३
मस्त भए हम निज घर पाकर, जानत है को श्याना;
बुद्धिसागर आतम पाया, ज्ञानानंद निशाना. संतो. ४

करना ज्ञानी गुरुका शरणा.

राग. आशावरी.

करना ज्ञानी गुरुका शरणा, गुरुसें होत उगरना. करना.
गुरुविन ज्ञान मिले न कदापि, गुरु बिन होत न तरना;
गीतार्थगुरुका शरणसें होत न, जन्म मरणका फिरना. करना. १
आतम ज्ञानी गुरु करनेसें, नासे मिथ्या भ्रमणा;
गुरुरूप होकर गुरुसेवनसें, होता नहीं भव मरना. करना. २
ज्ञानी गुरुविन क्षण नहि रहना, गुरु उपदेश दिल धरना;
बुद्धिसागर परमेश्वर पद–, अनुभवी गुरुकुं करना. करना. ३

मनने.

मन तने शी रीते समजावुं ? कोटि कोटि उपाय करुं पण,
वश करवामां न फावुं. मन.
सर्वविषयनो भोग करे पण, लेश न तृप्ति पावे;
क्षण क्षण विषयो नव नवा चाहे, लेश न संतोष लावे.
मन तुं पलकमां लाज लुंटावे, किणविध वशमां न आवे. मन. १
वायु विजळी करतां अतिवेगी, कथ्युं न काने धारे;

शिखामणने नहि गणकारे, जगमां कोयी न हारे. मन। तने. २
ह्यारी माया भव पडछाया, तुजथी प्रगटे काया;
सर्व जीवोने नाच नचाया, अजब छे ह्यारी माया. मन. ३
श्वाननी पूंछडी पेठे वांकुं, सिधुं न क्यारे थावे;
कोटि वर्ष सुधी वशमां रहे पण, क्षणमां छूटी जावे. मन. ४
तुजने वशमां करवामाटे, ज्ञानोत्साह जगावुं;
तुज साथे लडी महावीर पदवी, लेवामां लय लावुं,
मन तहने ज्ञानवडे वश लावुं, निश्चय एह न डगावुं. मन तने ज्ञाने.५
शुद्धातम उपयोगे आतम, आपो आप रमावुं;
बुद्धिसागर शिव सुख पावुं, जग जश डंको वजावुं,
मन तहने आतममांही समावुं, परमब्रह्म थइ जावुं;
मन तहने आतम० ६



अवळीवाणी.

सोरठ.

संतो अचरिज वात न लागे, समज्या ते अंतरमां जागे;
रहे सदा वैराग्ये...संतो.
राजा घर घर भीखने मागे, सिंह शशाथी भागे;
हंसलो मोति चारो त्यागे, उदधि बळतो आगे. संतो. १
कीडी मेरुने गळी आवे, घोघडो गायन गावे;
मर्कट जगने नाच नचावे, सिंहने बकरी खावे. संतो. २
काचातंतरे हाथी बांध्यो, डगलुं एक न चाले;
पांगळो सब दुनिया फरी म्हाले, देवने सेवक पाळे. संतो ३
यानपात्रपर दरियो चाले, अंधो जगने भाळे;
ब्राह्मण भंगीनेज वटाळे, टाढ घणी उन्हाळे. संतो. ४

संतो पडिया वेश्या प्यारे, राजा चकरां चारे;
शूरा जन नपुंसकथी हारे, सत्य ते वायन व्हारे. संतो. ५
भूप प्रजानी आणा माने, माछलां व्याघने ताणे;
दुनिया भखी भरिया भाणे, मुक्ति लडाइ ठाणे. संतो. ६
उदधि उपर पत्थर तरता, पहाड चले आकाशे;
बुद्धिसागर आतम समजे, सांचुं सद्गु समजाशे. संतो. ७

संतसेवा.

सोरठ.

सेवो संत सदा सुखकारी, प्रभु साकार सदा छे संतो,
आपे शिवसुख भारी. सेवो.
पोतानो रंग देइ दे पलमां, पलकमां पाप निवारी;
पारसमणिथी पण जे अधिका, संगति शिव दातारी. सेवो. १
काशी मक्का तीरथ भटको, पण नहि आवे पारी;
संतनी संगत क्षण पण करतां, भ्रांति हरे दुःखकारी. सेवो. २
जीवंता शास्त्रो छे संतो, साची संतनी यारी;
संत विना वैकुंठ शा खपनुं, ? जो जो शास्त्र विचारी. सेवो. ३
आतमज्ञानी निरभिमानी, समभावी उपकारी;
संतहृदयमां प्रभु परगट छे, समजो नर ने नारी. सेवो. ४
श्रद्धा प्रीतिने बहु माने, सत्य संत दिलधारी;
बुद्धिसागर संतनी सेवा, करतां शांति अपारी. सेवो. ५

आतम !!! क्यां करे म्हारुं त्हारुं.

राग सोरठ.

आतम करे मारुं तारुं, स्वप्न सरिखो दुनिया बाजी,
प्यारुं छे तुजथी न्यारुं. आतम.
कंचन कामिनी सारुं नठारुं, अंते सर्व असार.
मूल्य करी केम मूले मोक्ष, वागे मृत्यु नगारु. आतम. १
असंख्यप्रदेशी अलख निरंजन, चिदानंदरूप त्हारुं;
आतमनो उपयोगी था तुं, गण निज रूपने प्यारुं. आतम. २
जे देखे ते पुद्गलमाया, अज्ञाने अंधारुं;
ज्ञानथकी घटमां उजियारुं, गण निजरूपने सारुं. आतम. ३
चेतो ले हवे निश्चय चेतन, दुनिया देखता दारु;
बुद्धिसागर जागी ले झट, चूक न अवसर चारु. आतम. ४

अहिंसा.

आशावरी.

संतो !!! हिंसा अहिंसा विचारो, समजी अहिंसा धारो. संतो.
सम्यग्दृष्टि अहिंसा साधे, आतमना उपयोगे;
मिथ्यादृष्टि एज छे हिंसा, बहिरातम गुण भोगे. संतो. १
मिथ्यादृष्टि प्रमादे हिंसा, स्वपर जीवोनी घाती;
दुर्गुण व्यसनने मोहपरिणति, हिंसारूप जणाती. संतो. २
शुभवृत्ति सद्वृत्तियोरे, गुणो अहिंसा जाणो;
उपयोगे कर्तव्यनारे, वर्तने धर्म प्रमाणो. संतो. ३
प्रमत्तयोगथी स्वान्यनोरे, प्राण नाश जे थाये;
व्यवहारे हिंसा कहीरे, हिंसा आशयभावे. संतो. ४
हिंसानी बुद्धि वण कर्मो, करतां अहिंसा धारो;
बुद्धिसागर निज उपयोगे, अहिंसा आचारो. संतो. ५

सम्यक्त्व ज्ञानदृष्टि.

राग सोरठ वा आशावरी.

संतो आतमज्ञान लहीजे, समकित दृष्टि विना नहि मुक्ति,
कोटि उपायो कीजे.......................................संतो.
तप जप संयम यात्रा पूजा, करतां स्वर्ग ज यावे;
मोह टळे नहि मूळगो वधारे, भवभ्रमणा नहि जावे. संतो. १
विश्वजीवोनी द्रव्य दया करे, तोपण बाल कहावे;
भाव दया नहीं समकित वण कदि, समजु मनमां आवे. संतो. २
आतमज्ञानी अहिंसा पाळे, सत्यधर्मने धारे;
अज्ञानी हिंसा नहीं टाळे, मोहनां बीज न बाळे. संतो. ३
अज्ञानी पशु सरखो बालक, चक्रवर्ती पण जाणो;
बुद्धिसागर आतम आनंद, पामे मुक्ति पिछाणो. संतो. ४

धर्मी.

राग आशावरी.

संतो धर्मी तेह कहीजे, धर्मीनी संगत कीजे. संतो.
दान दया दम सत्यने धारे, चोरी चुगली निवारे,
ब्रह्मचर्यने भावथी धारे, क्रोध कपट संहारे. संतो. १
न्यायथकी निज जीवनने गाळे, मोहनी वृत्ति बाळे,
देव गुरुनी सेवा सारे, दुर्व्यसनो सहु टाळे. संतो. २
पर उपकारमां प्राण समर्पे, विकथा न लागे प्यारी,
आतम सरखुं विश्वने माने, सात्त्विक प्रेमाचारी. संतो. ३
मुदिता मैत्री मध्यस्थ करुणा, दुर्गुण दोषने वारे,
जूठने त्यागे सत्यने धारे, मानवभव अजवाळे. संतो. ४

जूठनो पक्ष धरे नहीं क्यारे, जीवे संतना प्यारे,
बुद्धिसागर सद्गुरु सेवे, चढनो धर्म व्हारे. संतो. ५

महावीर प्रेम.

निशानी कहा बतावुं रे. गोडी राग.

प्रभु महावीर तुं प्यारोरे, जगजीवन जगदेव. प्रभु.
हरिहर ब्रह्मानो प्रभुरे, तुं हि राम रहिमान;
अल्ला अर्ह जिन खुदारे, बुद्ध विष्णु भगवान. प्रभु. १
नाम अनंतां ताहरांरे, मुखथी कथ्यां नहि जाय;
नाम भिन्न शुद्धातमारे, परमब्रह्म सदाय. प्रभु. २
अनंत लक्षणे लक्षतांरे, अलख अवाच्य सुहाय;
आतम सत्ता व्यक्तिएरे, महावीर दिल प्रगटाय. प्रभु. ३
परमब्रह्म परमातमारे, परमेश्वर आधार;
बुद्धिसागर भेटियारे, आनंद अपरंपार. प्रभु. ४

निद्रा.

निशानी कहा बतावुं रे. ए राग.

अमने ए निद्रा प्यारी रे, आनंद जेमां अपार. अमने.
निंदा विकथा न कामना रे, जन्म जरा नहीं होय;
मोहभावे नहीं जागवुं रे, नडे न अमने कोय. अमने. १
राग द्वेषना द्वैतनुं रे, जेमां जरा नहीं भान;
मननी गति पण ज्यां नहीं रे, आत्मरसे मस्तान. अमने. २
नामरूपना मोहनुं रे, स्वप्न नहीं प्रगटाय;
बुद्धिसागर आतमा रे, ज्योति ज्योते सुहाय. अमने. ३

मनुष्यो ! सद्‌गुणथी प्रभु मळता.

राग. आशावरी.

सद्‌गुणथी प्रभु मळता, मनुष्यो ! ! ! सद्गुणथी प्रभु मळता.
दुर्गुण दुष्ट व्यसन छे यावत्, तावत् प्रभु नहीं मळता;
पत्थरने पोषे प्रभु नहीं मळता, मोहे वधे चंचलता. मनुष्यो ! ! ! १
पूर्ण अहिंसा सत्य पाळतां, सत्य प्रभु झळहळता;
परधन पत्थर स्त्री सहु माता, गणता ते प्रभु वरता. मनुष्यो. २
प्रभुनां नामो जपो सहु त्होये, प्रगटे नहीं ज्ञान सघता;
भक्ति ज्ञान ने समता प्रगटे, दिल्मां प्रगट प्रभु रमता. मनुष्यो. ३
वेष क्रियाकांड मात्रथी गुणवण, क्यारे न होय सफळता;
काम क्रोध लोभ माया टळे तव, प्रगट प्रभु झळहळता. मनुष्यो. ४
अमुक पन्थ मत धर्मने माने, गुण वण नहीं निर्मलता;
विनय विवेक सदाचार शुद्धि, शमदमथी प्रभु मळता. मनुष्यो. ५
मैत्री प्रमोद मध्यस्थ करुणा, ज्ञाने दुर्गुण टळता;
नाम ने रुपनो मोह टळ्या वण, प्रभुना तार्या को न तरता. मनुष्यो.६
मन इन्द्रियने वश करी जेओ, शुद्धचारित्रमां वळता;
शुद्धातम प्रभुपद ते पामे, मोहना मार्या न मरता. मनुष्यो. ७
मनवाणी काया पवित्रता, तप संयम आचरता;
बुद्धिसागर समता पामे, सर्वे जीवो शिव वरता. मनुष्यो. ८

मृत्युजीत.

अब हम अमर भए न मरेंगे. ए राग.

अब हम उतर गए भव पारा, मृत्यु भयकुं निवारा. अब.
प्राण तनुका जन्म है मृत्यु, हम है उससे न्यारा;
आतमका नहि जन्म मरण है, निश्चय ए निर्धारा. अब. १

अज अविनाशी अमर अलख हम, तन मनकुं हि निवारा;
कालके काल महाकाल हम, शुद्धरूप मोह उगारा. अव. १
ब्रह्मरूप हम ब्रह्म समाए, ज्यां नहीं द्वैत पसारा;
देह रहा संसारकेमांही, हम नहीं है संसारा. अव. २
सबसें न्यारा शुद्धब्रह्म हम, पावन अपार न्यारा;
हम हैं प्यारी हम हैं प्यारा, गुण पर्यायाधारा. अव. ४
पंचभूतसें न्यारा हम हैं, सर्व विश्व आधारा;
बुद्धिसागर आतम पाया, आनंद अपरंपारा. अव. ५

अवळीवाणी.

सोरठ.

हमने ए सब ज्ञाने दीठा, अज्ञानीकुं यह अनीठा.–
ज्ञानी मनमें मीठा.................................हमने.
एक बुंदमां अब्धि समायो, सब संसार समाया;
एक अनेक न तेज न तम नहि, तिहां जाकर ए गाया. हमने. १
चन्द्रसें अग्नि ज्वलत है भारी, रवि शीतलता मकाशे;
मूषक खावे सब सर्पोकुं, पंगु गगने विलासे. हमने. २
एक नपुंसक विश्वकुं जीते, नारी विश्व नचावे;
अन्धक साचुं नाणुं परखे, संतकुं वेश्या भावे. हमने. ३
दासकी इन्द्र करत है सेवा, खद्योत रविकुं हरावे;
पल्वलमें सब दुनिया डूब गइ, भारड महीं स्थिर थावे. हमने. ४
पृथ्वी उपर नाव चलत है, गौ सब जगकुं खावे;
बुद्धिसागर गुरुगम जाने, वह शिवसुखकुं पावे. हमने. ५

ज्ञानी गुरु करो.

सोरठ.

सद्गुरु करशो ज्ञानी, लोको !!! सद्गुरु करशो ज्ञानी;
अज्ञानी गुरु तरे नहीं तारे, जड मोही अभिमानी. लोको.
लोभी लालचु हठवादी बहु, जूठी जेनी वाणी;
कंचन कामिनीना रागी, व्यसनी दुर्गुण खाणी. लोको. १
क्रोध करे ने शापो आपे, हिंसा जूठ निशानी;
चोरी चाडी द्रोही पापी, संग करो नहीं जाणी. लोको. २
भक्ति उपासना कर्म न जाणे, कुगुरुनी ए एंधाणी;
आतमज्ञाननो अनुभव नहि कंइ, करतो धर्मनी हानि. लोको. ३
धर्म न जाणे कर्म न जाणे, करतो बहु नादानी;
धर्म शास्त्रनो मर्म न जाणे, वाद करे मति ताणी. लोको. ४
आतमज्ञानथी प्रभु परखावे, सद्गुरुनी ए निशानी;
प्रभु महावीर तत्त्व प्रबोधे, नय सापेक्षे प्रमाणी. लोको. ५
ध्यान समाधिथी जे पूरा, सम्यग्दृष्टि दानी;
आत्मरसे रसिया मस्तानी, आपे रसनी ल्हाणी. लोको. ६
जीवंतां मुक्ति सुख माणे, अमृत वर्षे वाणी;
बुद्धिसागर सद्गुरु देवा, मळिया प्रभु लयतानी. लोको. ७

दुर्व्यसनोनो त्याग.

छंडो दुर्व्यसनो नरनार, नहिं तो दुःखी थशो निर्धार. छंडो.
वेश्या संगे दुःख विपत्ति, धन बल नष्ट ज थाय;
परनारीना प्रेमे पडतां, सहु शक्ति विणसाय. छंडो. १
दारुनुं पान ते नरकद्वार छे, दारुथी दुःख अपार;
धर्म न प्रगटे मांसने खातां, हिंसा नरकनुं द्वार. छंडो. २

गांजो पीवे ते गांडो ने वांडो, भांग चडस दुःखकार;
होको चलम बीडी अफीण छंडो, दुःखनां ते दातार. छंडो. ३
अकरांतिया थै खूब न खावुं, खावो सात्त्विक आहार;
सट्टा जुगारथी सुख नहीं शांति, चोरीथी क्लेश अपार. छंडो. ४
दुर्व्यसनीनो संग करो नहीं, दुष्ट धरो ना आचार;
दुष्टजनोनी पासे रहेतां, प्रगटे दुष्टाचार. छंडो. ५
हिंसा जूठुं चोरी जारी, कषाय पाप अपार;
पाप करतां मनने वारो, धर्म करो सुखकार. छंडो. ६
दुर्व्यसनोने दुर्गुण त्यागो, धर्मी बनो नरनार;
बुद्धिसागर सद्गुरु संगत, करतां सुख अपार. छंडो. ७

आत्मशुद्धिथी मुक्ति.

राम जपो रहिमान जपो पण, दिलशुद्धि वण नहि मुक्ति.
ताप तपो वनवास रहो पण, समता वण नहि यदि मुक्ति. १
जटा वधारे मुक्ति मळे तो, वडनी पण थावे मुक्ति;
केशने लुंचे मस्तक मुंडे, मुक्ति नहीं समजो युक्ति. २
तीरथ जल स्नाने नहीं मुक्ति, अज्ञानीने चतुर्गति;
आतम ज्ञानथी क्षणमां मुक्ति, जो होवे मनमां नीति. ३
करे क्रिया पण न्याय न नीति, ज्ञानविना किरिया जूठी;
भावविना भक्ति नहि फळती, ज्ञानविना पूजा धूठी. ४
शुष्कज्ञानथी मळे न मुक्ति, वाद विवादो बहु प्रगटे;
मोह मर्यावण कोनी न मुक्ति, मन मरतां माया विघटे. ५
आतमज्ञानी निरभिमानी, समभावी पामे मुक्ति;
बुद्धिसागर अनंत आनंद, पामे जीवंत मुक्ति थती. ६

मनुष्यो !!! मानवभव नहीं हारो.

राग आशावरी.

मनुष्यो !!! मानव भव नहीं हारो, निज आतमने सुधारो. मनुष्यो.
क्षण क्षण दिल्मां प्रभुने संभारो, ममता अहंता वारो;
धन सत्ता अभिमान निवारो, दिल्मां दया सत्य धारो. मनुष्यो. १
राग रोष अरि प्रगट्या संहारो, त्यागो दुष्ट विचारो;
आतम सरीखा सहु जीव भाळो, मन प्रगट्यो मोह मारो. मनुष्यो. २
शत्रु उपर शमनीत धारो, प्रभुमां मनडुं वाळो;
गुणीपणानी अहंता टाळो, टाळो दुराचारो. मनुष्यो. ३
तन धन यौवन गर्वने गाळो, कामनी वृत्ति विदारो;
दान दया दम तप जप पूजा, धर्मनां साधन सारो. मनुष्यो. ४
सद्गुण धारो जन्म सुधारो, प्रभु मळशे निर्धारो;
बुद्धिसागर आतम तारो, समजीने नहीं हारो. मनुष्यो. ५

आतम !!! आप स्वरूप संभारो.

राग सोरठ.

आतम आप स्वरूप संभारो,
चिदानंद तुज धर्म खरो छे, निज उपयोगे धारो. आतम०
जड क्रियाने जड तो करे छे, आतम उपयोग किरिया;
आत्म स्वभावे आतमधर्म छे, समजी ज्ञानी तरिया. आतम. १
हरिहर ब्रह्मा देव देवी सहु, आतमना छे दासा;
प्रकृतिवश्यी नहि प्रभुता, धर एवा विश्वासा. आतम. २
आनंदनो दरियो तुं सदा छे, तुं प्यारो तुं प्यारो;
हुं तुं ते ज्यां भेद नहीं त्यां, प्रगटे छे निर्धारो. आतम. ३

नभथी पण तुं सूक्ष्म अरूपी, गुण पर्यायाधारो;
बुद्धिसागर अलख निरंजन, आपो आप सुधारो. आतम. ४

खरा जन परमेश्वरने पामे.

राग आशावरी.

परमेश्वरने पामे, खरा जन परमेश्वरने पामे;
ठरता शिवपद ठामे..............................खरा.
दुर्गुण दुर्व्यसनो दूरे टाळे, अहिंसा सत्य पाळे;
चोरी जारी अनीति निवारे, लघुतायी जग चाले. खरा. १
क्रोध मान मायाबीज बाळे, लोभ प्रगटतो खाळे;
क्षण क्षण परमेश्वर संभारे, दुर्जन संगति वारे. खरा. २
राग ने रोष हण्याथी मुक्ति, सर्व कोइ जग पामे;
वेषक्रियाकांडपक्षे न मुक्ति, समभावे शिव जामे. खरा. ३
आतमज्ञानथी भक्ति भावे, आतम शुद्धि थावे;
साक्षी भावे आत्मोपयोगे, आप प्रभु परखावे. खरा. ४
जैन मुसलमान हिंदु ख्रीस्ति, बौद्धादिक प्रभु पावे;
बुद्धिसागर समपरिणामे, दिल्मां प्रभु प्रगटावे. खरा. ५

मृत्यु पाछळ अमरता.

राग देशाख.

अज अविनाशी हुं आतमा, म्हने कोइ न रोशो;
ओळखशो म्हने ज्ञानथी, आपो आपने जोशो.
आतम रूपने ओळखो, कोना मार्या न मरशो. १
देह प्राण शाश्वत नहीं, रह्या नहि कदि रहेशे;
नाम ने देह भिन्न आतमा, जाणे ते शिव लेशे. आतम. २

जगमां कोई न कोईनुं, योग तेनो वियोग;
प्यारो प्यारी न जडविषे, न्यारा देहने भोग. आतम. ३
आंसु न पाडशो पाछळे, समजो सहु लोको;
आतमा हुं छुं मरुं नहीं, पाडो नहि अरे पोको. आतम. ४
नामने रूपनो अंत छे, यादी तेनी शुं ? राखो;
भोळा वयां भूला भमो, आतमरस चाखो. आतम. ५
निज उपयोगमां आतमा, रही देहने छंडे;
साक्षी बनी दुःख भोगवे, मोह त्यां नहीं खंडे. आतम. ६
अंतरमां आनंद छे, कोइ इच्छा न भीति;
आतमनी न्यारी गति, न्यारी पुद्गलरीति. आतम. ७
भक्त शिष्य सहु लोकने, जीवंतां खमावुं;
आतम उपयोगे रही, निज देशमां जावुं. आतम. ८
फरो अने फरशो फरी, मुज नामनी यादी;
मुज पाछळ प्रभुदेशमां, आवशो शिव सादी. आतम. ९
आतमरूपे जीवता, धन्या नहीं मरवानुं;
आतम प्रभुने पामियो, हवे नहीं खरवानुं. आतम. १०
जीवंतां मरी जीववुं, ब्रह्म जीवन लहियुं;
निश्चय शुद्धोपयोगमां, बाकी जड नहि रहियुं. आतम. ११
जडजगमां देह प्राणने, कर्मनी बहु माया;
आतमज्ञाने जागतां, जाण्या पडछाया. आतम. १२
अग्नि बाळे छे देहने, नहीं आतम बाळे;
आतमना उपयोगमां, जोर कोनुं न चाले. आतम. १३
मन बुद्धि पहोंचे नहीं, एवुं आतम ठाम;
आतम अमने न अन्यनुं, तिहां किंचित् काम. आतम. १४
मरवुं शीखो मर्या पूरवे, शोक चिंता न करशो;
मन मार्याविण मानवो !!!, कदि ठाम न ठरशो. आतम. १५

मन वाणीगतनी रची, सर्वे जगनी माया;
मानी शुभाशुभ तेहमां, मोहाजन भरमाया. आतम. १६
मन वाणीगतना मने, जन्म मरणो थातां;
आतम ओळखी पामतां, मरणो टळी जातां. आतम. १७
सर्वे शुभाशुभ कल्पना, मनमां प्रगटाती;
समभावे उपयोगथी, टळी अंते जाती. आतम. १८
सर्वे शुभाशुभ कल्पना, कदी उगी नहीं प्रगटे;
शुद्धातम गुण रूप छे, जाणे माया विघटे. आतम. १९
ज्ञानीने काळ न खाय छे, मोहीने काळ खातो;
आतमना उपयोगमां, काळ भासो न जातो. आतम. २०
परमब्रह्म परमातमा, निज आतम पोते;
देह भावने छंडतां, मळे ज्योतिमां ज्योते. आतम. २१
शोधी लीधो निज देशने, निज देशमां जाशुं;
पूर्णानन्दमां लहेरथी, अदृश्य सुहाशुं. आतम. २२
जन्म मरण छे कर्मथी, व्यवहारथी धारो;
शुद्धातम उपयोगमां, नहीं कर्मनो चारो. आतम. २३
आत्मतत्त्व उपजे नहीं, नहीं विणसे क्यारे;
जन्म मरण उपचारथी, जाणे ते निज तारे. आतम. २४
पुद्गलनी माया सकल, पुद्गलमां समाती;
आतम अनुभव आवतां, निर्भय थै छाती. आतम. २५
पुद्गल संगे आतमा, निजभानने भूल्यो;
आतमज्ञानने पामतां, भेद सघळो खूल्यो. आतम. २६
आतम निज रूपमां भळ्यो, थयो आतम प्रकाशी;
आकाश पेठे अनुभव्यो, अरूपी अविनाशी. आतम. २७
उपयोग धारा प्रवाहथी, थयुं घट अजवाळुं;
पूर्णानन्द रस अनुभवुं, अनंत जीवन भाळुं. आतम. २८

नमुंरे नमुं मन वाणीने, नमुं देहने भावे;
तमसंगे आतम थयो, आपोआप स्वभावे. आतम. २९
नमुंरे नमुं गुरु देवने, कर्युं पट अजवाळुं;
पूर्णकृपा करी पोषर्यां, उघार्युं मोहताळुं. आतम. ३०
नमुंरे नमुं सर्वविश्वने, उपग्रहने दीपा,
आत्मोन्नतिक्रम हेतुमां, उपकार महिमा. आतम. ३१
नमुंरे नमुं कर्मप्रकृति, निज साथे रही जे;
समभाव तेपर आवतां, जेह रीजे न खीजे. आतम. ३२
मृत्युनो पडदो वटावीने, जतां आगळ शांति;
तनु माणनाश वियोगथी, भावी पूर्णोत्क्रान्ति. आतम. ३३
सर्वथा पूरण मुक्तिमां, नहीं जन्मने मरणुं;
मुक्ति मळशे ए भावमां, कर्युं महावीर शरणुं; आतम. ३४
वस्त्रसमुं तनु बदलवुं, एमां शोक न भीति;
आकाशसम निज आतमा, ध्यावुं उपयोग ज्योति. आतम. ३५
मुजपर प्रीति थाय तो, शुद्ध आतम ध्याशो;
आतम आनंद पामशो, पछी दूरे न थाशो. आतम. ३६
एकेक दृष्टिथी दर्शनो, सहु प्रगट्यां पेखो;
असंख्यदृष्टि छे आत्ममां, अनुभव लही देखो. आतम. ३७
सर्व दृष्टि सापेक्षथी, निजमां समजाइ;
मतपंथ कल्पना सहु टळी, रह्यो निजमां समाइ. आतम. ३८
एकांत दृष्टियो सहु शमी, अनेकांतप्रकाशे;
हठ कदाग्रह नहि रह्यो, आपोआप विलासे. आतम. ३९
लख्युं कथ्युं जे रुचे नहीं, त्यां ज समता धारो;
मन आतमनी भिन्नता, ओळखी निज तारो. आतम. ४०
देह रहे वा नहीं रहे, तेनो शोक न भीति;
पुद्गल पुद्गल रीतिमां, वर्ते तेह नीति. आतम. ४१

समये समये मृत्यु छे, मनमोह विचारे;
समये समये जीवन छे, शुद्ध उपयोग धारे. आतम. ४२
देह टळ्या छतां आतमा, अमे जीवता जाणो;
एवा जीवता ओळखे, तेह जाग्यो ज मानो. आतम. ४३
आतमरूपे जे थया, अमने जीव्या ते जाणे;
देहथी जीवता जाणता, रह्या ते अज्ञाने. आतम. ४४
प्राण देहरूप नहि अमे, रडो देहने शाने ?
नित्य आतमा तेहने, रडवुं छे अस्थाने. आतम. ४५
जड देहनी शी प्रीतडी ! आतमप्रेम ते साचो;
आतमरुचिने धारशो, आतममांहि राचो. आतम. ४६
आतममां सहु धर्म छे, जाणी आतम रमशो;
आतमरसने पामतां, सहेजे जडरस वमशो. आतम. ४७
प्रगटे नहि मन स्वप्नमां, पंचइन्द्रियभोग;
आतमरस प्रगटे तदा, शुद्ध गुणसंयोग. आतम. ४८
आतमरसने चाखतां, सहेजे जडरस टळतो;
आतम आपोआपने, आपरूपे मळतो. आतम. ४९
एवी दशा उपयोगमां, नहीं मरणनी भ्रान्ति;
आपोआप स्वभावमां, वर्ते अध्यातमशांति. आतम. ५०
जड तो जडमांहि मळे, आतम आतममांहि;
आतमना उपयोगमां, नहीं मरणनी छांहि. आतम. ५१
जड जडरूपे नहीं मरे, एम निश्चय जाणो;
आतम आतमरूपमां, नहीं मरण ज मानो. आतम. ५२

चोपाइ.

असंख्यप्रदेशी छे दरबार, आतमप्रभुनो ज्यां निर्धार;
उपयोगे त्यां करवो वास, ज्यां नहि परपुद्गलनी आश. ५३

अनंत ज्योति झळके ज्यांय, आपस्वभावे जावुं त्यांय;
मन बुद्धिनो नहीं प्रवेश, अलख निरंजन निर्भयदेश. ५४
गया अने ज्यां जाशे संत, गया पछी नहीं आवे अंत;
आतम एवो शुद्धप्रदेश, पामंतां नहि रहेतो क्लेश. ५५
निश्चयनयथी शुद्ध स्वरूप, अनेकांतथी रूपारूप;
राग द्वेषनो द्वैताभाव, पहोंने नहि जड जगना दाव. ५६
एवा शुद्धातमनुं तान, उपयोगे तेनुं छे भान;
पछी भले तन रहे न प्राण, सरखां घर वन ने शमसान. ५७
रोइ रोइने रुवो एम, आतमभान प्रगटे गुणक्षेम;
शोक करीने शोचो एह, अनुभवो आतम वैदेह. ५८
आतम देशमां जश विहार, कीधो तनु छंडी निर्धार;
खम्या खमाव्या सर्वे जीव, देह त्यजंतां रही न रीव. ५९
स्थूलदेहनो नाश ज थाय, मोह टळ्या वण दुःख न जाय;
कार्मण देहनो नाश ज थाय, पूर्ण मोक्ष त्यारे प्रगटाय. ६०
राग द्वेषनो क्षय जो थाय, केवलज्ञान तदा प्रगटाय;
देह छतां ज्ञानी वैदेह, जीवन्मुक्त दशा छे एह. ६१
अनंत जीवन पामे जेह, आवी पाछो कहे न तेह;
पाम्यो ते निजमांही समाय, वैखरीथी शुं वर्णव्युं जाय. ६२
तिरोभावी शक्तियो जेह, आविर्भावे थावे तेह;
परमातमपद ते छे सत्य, पामंतां नहि बाकी कृत्य. ६३
आतम आनंद पाम्यो जेह, इन्द्रिय सुखथी विरम्यो तेह;
आतम आनंद रसनां ल्हाण, अनुभव्यां कैं पामी ज्ञान. ६४

सोहिणी.

पाछळ अमारी आववा, आतम अनुभव पामशो;
मननी गति ज्यां नहि रहे, त्यां ठाम ठरीने जामशो. ६५

सात्विक भक्ति सुद्धिने, सेवायकी आगळ वहो;
परब्रह्मनो अनुभव थशे, आनंदरूपे थइ रहो. ६६
जडमां अने मनमां रही जे, ग्रहण त्यागनी कल्पना;
ए ग्रहण त्यागनी वृत्ति वण, रहेवो नहीं किंचित् मणा. ६७
जडमां शुभाशुभ वृत्तिनी, जव कल्पना उठे नहीं;
तव ज्ञान आनंद प्रकटता, अनुभव खरो भासे सही. ६८
शुद्धात्मना उपयोगथी, साक्षी बनी सहु देखवुं;
प्रारब्धकर्मो भोगवा, थातुं प्रवर्तन पेखवुं. ६९
मन इन्द्रिय प्राणने, देहनुं, जीवन कर्म छे सही;
उपयोगथी साक्षी बनी, सहेजे वहो शांति लही. ७०
शुद्धात्मना उपयोगमां, रहीने स्वभावे म्हालशो;
मोहे विचारो जे उठे ते, बंध करीने चालशो. ७१
सर्वे शुभाशुभ परिणति ते, आत्मथी न्यारी गणो;
तेमां न मुंझाशो कदि, कर्तव्यना पाठो भणो. ७२
आसक्तिवण कर्तव्यने, करवां ज ए व्यवहार छे;
व्यवहारनय ए धर्मनो, पोषक महा आधार छे. ७३
जडना शुभाशुभभावमां, मुंझो नहीं मुंझो नहीं;
ए जीवतां मुक्तिदशा, परब्रह्मरस पामो सही. ७४
मनमां शुभाशुभ वृत्तियो, उठे नहीं ते मुक्ति छे;
ए मुक्ति मानगी पामियो, त्यां मृत्यु नहीं उत्पत्ति छे. ७५
जडना ज पर्यायो सकल, जडथी उठे जडमां भळे;
जड द्रव्यथी न्यारा नहीं, जाणे ज ते आतम मळे. ७६
जड द्रव्यना भेगो रहे, जडद्रव्यरूपे नहीं थने;
एवोज आतम हुं सदा, नामी अनामी अज भणे. ७७
. जगतुमां रहेवुं अने, जड जगतुथी न्यारो रह्यो;
नामो अनंतां गुन थयां, प्रण नामवण निश्चय रह्यो. ७८

देहो अनंतां धारियां पण, देहरूपे हुं नहीं;
आनंदघन हुं आतमा, अविनाशी ईश्वर सत् सही. ७९
भूतो ज भूतोमां भळे, आतम न अग्निथी बळे;
छेदाय नहीं शस्त्रोथकी, सुकाय नहीं गाळ्यो गळे. ८०
एवोज हुं छुं आतमा, मन देहथी न्यारो सही;
आतम प्रकाशे आत्मने, त्यां मरणनी भ्रमणा नहीं. ८१
एवा ज आपोआपनो, उपयोग अंतरमां रह्यो;
प्राणो तनु रहो ना रहो, आनंदमांही गहगह्यो. ८२
मारुं मरण ने हुं मरुं, ए मोहनी भ्रांति टळी;
तन मनविषे हुं हुं थतुं, ते मोहनी वृत्ति गळी. ८३

हरिगीत.

जे जे निमित्ते देहनुं पडवुं थवानुं थाय छे,
त्यां साक्षीभावे देखतां आतम नहीं भरमाय छे;
मन तन संबंधे प्रगटतुं प्रारब्ध भोगववुं सही,
उपयोग साक्षी भावथी सुरता ज अंतरमां रही. ८४
मन इन्द्रियोने देहथी भोगाय सुख दुःख भोगने,
ज्ञाता अज्ञ बहु जातनी भोगवाय संकट रोगने;
साक्षी बनीने आतमा समभावथी सहु भोगवे,
जीवन क्षणे क्षण नव नवुं आनंद उत्सव उझवे. ८५
शुद्धात्म आनंद उत्सवे रहेतां ज देह टळे यदा,
तोपण अहो आनंद छे जो नहीं टळे रहीये तदा;
प्यारी गणेली वासना टळतां न आतम हुं टळुं,
शुद्धात्म निज पर्यायमां आविर्भावे हुं मळुं. ८६
जे आत्मज्ञानी आतमा ते ओळखे मुजने खरो,
अज्ञानी तनुने ओळखे मुंजाय थातो गळगळो;

जे देहना ते देहीओ ने आत्मना ते ज्ञानिओ,
जे आत्मना छे ज्ञानिओ ते पामता गुण वानिओ. ८७
ओळखाण नामने देहथी ओळखाण साचुं नहीं करी,
जे नामरूपे ओळखो ते हुं नहीं माया थकी;
मारो अमारी पाछळे आतम म्हने दिल धारशी,
सात्त्विक परामिकस्टे थाशे दशा निज सारिशी. ८८
आतम अमर निज जाणशो तन मन क्षणिक छे जाणजुं,
सहुमां अने सहु भिन्न पणुं ब्रह्म दिलमां आणजुं;
आ विश्वनो छे पाण तेनो स्वामी आतम जाणशो,
जो मोहथी मुंझाय ना तो शुद्धब्रह्म पिछाणशो. ८९
निर्मोहथी जो इन्द्रियो पाने प्रवर्ते निजगुणे,
जो मोहवण मन चिंतवे तो निर्भय आतम सद्गुणे;
विषयो न बांधे आत्मने उपयोगथी आतम जगे,
परब्रह्ममां प्रीति परा आनंद व्यापे रगरगे. ९०
जे मन अने विषयोविना आनंद रस प्रगटे खरो,
ते ब्रह्मरस घट जाणवो पाम्यो ज भवजलधि तर्यो;
आतमरसे रसिया थया बंधाय नहि विषयोविषे,
सर्वे करे न्यारा रहे आसक्तिवण निर्मल दिसे. ९१

चोपाइ.

शरीर पुद्गलमां आकाश, रह्युं छतां नहि लेपज खास;
ज्ञानीने पुद्गलनो योग, तेम ज तेमां होय अयोग. ९२
शरीर देवल आतम भूप, अनंत ज्योते झलके रूप;
प्रधान उपयोग ज तस जाण, तप जप संयम सैन्य वखाण. ९३
देह देवले आतमराज, आतमज्ञाने करतो राज्य;
पूर्णानन्दनी क्षण क्षण लहेर, समभावे नहि रागने झेर. ९४

शरीर प्रगटी विणशी जाय, आतम आपस्वरूपे सुहाय;
आतमना उपयोगी थया, मरण भ्रांतिथी दूरे गया. ९५
आतम एवो जाणे जेह, देहवियोगे रडे न तेह;
प्राणादिकनो थाय वियोग, तव तेने नहि भीति शोक. ९६
उपजे विणसे तेनो अंत, आतम पूर्ण अनादि अनंत;
आतम तुं बीजो नहीं कोइ, जोइ जोइने जोशो जोइ. ९७
प्रगटे ज्यारे आतमप्रकाश, त्यारे प्रगटे हर्ष विलास;
पूर्वकर्मनिर्जरणा करे, नवां न बांधे मुक्ति वरे. ९८
आपोआप प्रभुने मळ्यो, आतमरूप न जावे कळ्यो;
अनेकदृष्टियोगे दृश्य, अनुभव्यो आतम अदृश्य. ९९
अनंत आनंद अपरंपार, आतममां सत् छे निर्धार;
ज्ञानानन्द ते आतम जाण, प्रगटे प्रभु प्रगट्या ज प्रमाण. १००
ज्ञानानन्दनो आविर्भाव, सत्य मोक्ष ते निश्चय लाव;
ज्ञानानन्द ते आतमधर्म, बाकी बीजुं जाण ज भर्म. १०१
ज्ञानानन्द प्रकटता हेत, सर्वयोग साधन संकेत;
ज्ञानानन्द ज प्रगट्यो ज्यांय, आतम प्रगट्यो जाणो त्यांय. १०२
ज्ञानने आनंद शक्ति ज्यांय, प्रगटी मोहतुं द्वैत न त्यांय;
एवारूपे जीव्या जेह, मरे न देह छतां वैदेह. १०३
एवा संत प्रभु साकार, संग करो तेनो नरनार;
जैनधर्म समजावे मर्म, भूलावे मन माया भर्म. १०४
ज्ञानानंद प्रकटता जेह, रोकड धर्मने जाणे तेह;
मृत्यु पहेलां मरी सुखपाय, आपोआप प्रभु थे जाय. १०५
साध्यधर्म आतममां एह, ज्ञानानन्द प्रकटता जेह;
आतमधर्मनी सांखी लह्यो, स्वयं स्वयं जोइ सुख लह्यो. १०६
निज धर्मे वर्ते सहु द्रव्य, कोइ कोइमां पेसे न भव्य;
आतमधर्म ते आतममांय, अन्यद्रव्यमां मळे न क्यांय. १०७

आत्मद्रव्यने काल न खाय, द्रव्य न कोइ विणशी जाय;
निज उपयोगे गुण पर्याय, प्रगटे आतम मुक्त सुहाय. १०८
आतम अमर अजर वर्ताय, निश्चयदृष्टि जाण्यो जाय;
देहवियोग समय जब आय, आतम उपयोगे वर्ताय. १०९
आतम ते परब्रह्म छे, जाण्यो आपोआप;
ज्ञानानंदे अनुभव्यो, टळ्या सर्व संताप. ११०
मृत्युविनाशक ग्रन्थ ए, भणे सुणे नरनार;
मृत्युघातनो जयकरी, पामे शांति अपार. १११
अठयोत्तर गाथावडे, रच्यो ग्रन्थ सुखकार;
आत्मिकशांति तुष्टिने, मंगल सुखदातार. ११२
ओगणिश अठयोत्तरतणी, भाद्रवद पंचमी वेश;
बुद्धिसागर आत्ममां, आनंद हर्ष हमेश. ११३

अँर्ह ॐ महावीर शांतिः ३

आत्मानी शुद्ध परिणातिरूपस्त्री.

राग. सोरठ.

आतम परखो अपनी नारी, देहकुं नारी मानत भूले;
दुःखी सब संसारी.................................आतम०
रूपरंगधारक जो नारी, देह चामडी धारी;
उपजे विणसे दुःखकी क्यारी, जूठी है तस यारी. आतम० १
मनकी शुभाशुभ परिणति नारी, चतुर्गति दुःखकारी;
शुद्धपरिणति नारी प्यारी, जान लें निजसें न न्यारी. आतम० २
ज्ञानानन्दस्वरूपी परिणति, मिलतां प्रभुता भारी;
वर्ण गंधरस स्पर्श न जिसकुं, खेले खेल अपारी. आतम० ३

अज अविनाशी न मरे कबहु, एकस्वरूप जयकारी;
बुद्धिसागरशुद्ध परिणति, परब्रह्मपति नारी. आतम० ४

आत्मकुटुंब.

राग. सोरठ.

आतम!! आत्म कुटुंबने देखो, मन माया जग कुटुंब छे जूठुं;
तेने दूर उवेखो.................................आतम०
भक्तिमाता बोधपिता छे, कर्मयोग छे भाइ;
उपासना छे बहेनी नीति, जीवननी छे कमाइ. आतम० १
शुद्धपरिणति साची स्त्री छे, शुद्धस्वरूप सुहाइ;
निजथी भिन्न कदापि न थावे, पूर्णानन्द सदायी. आतम० २
सात्विक परिणति सासु साची, ध्यान ते ससरो पेखो;
केवलज्ञान ते पुत्र पवित्र ज, प्रगटे निश्चय एको. आतम० ३
असंख्यप्रदेशी साचुं घर छे, टळे खरे नहीं क्यारे;
अंतरदृष्टि प्रगटे ज्यारे, कुटुंब प्रगटतुं त्यारे. आतम० ४
आत्मकुटुंबनी साथे रमवुं, शिक्षा छे सुखकारी;
बुद्धिसागर आनंद मंगल, आत्मकुटुंब बलिहारी. आतम० ५

पंथवाडा.

निशदिन जोउं रहारी वाटडी. ए राग. मारु.

मतपंथ दर्शनवाडामां, पशु थै न बंधाशो;
रागद्वेषनी वृत्तिने, पोषी दुःखी थाशो. मत० १
मतपंथ दर्शन भेदथी, धर्म सुधो प्रगटे;
धर्मशास्त्र मतभेदथी, शुद्धबुद्धि विघटे. मत० २

तर्कबुद्धिना वादथी, शुष्कता क्लेश थावे;
मारुं ते सारुं सहु गणे, मन मोहमभावे. मत० ३
देव गुरुने धर्मना, जुजुआ ग्रन्थ पंथो;
मनमां मान्यता जुजुवी, नहीं मुंझाशो संतो. मत० ४
असंख्यमतपंथ थै गया, थाय छे वळी थाशे;
आत्मसमा गणी जीवने, वर्ते शिव पाशे. मत० ५
ज्ञान अने समभावथी, सत्य जाणो ने पाळो;
रागद्वेषनी वृत्तियो, प्रगटतां टाळो. मत० ६
प्राचीन अर्वाचीन जे, धर्मनाशना झघडा;
करीने रागद्वेषथी, महापंडित बगड्या. मत० ७
सिंहसमा संत ज्ञानीओ, वाडामांही न रहेता;
प्रभु महावीर देवना, बोधने दिल वहेता. मत० ८
सत्य दया दान दम धरो, तजो दुर्गुणवृत्ति;
पशु पंखी नरनारीनी, करो सेवा भक्ति. मत० ९
वीतराग महावीरनो, वीतरागी जे धर्म;
प्रकट करो निज आत्ममां, टाळो आठे कर्म. मत० १०
सद्गुण नीति धारशो, सर्वव्यसनो छंडो;
बुद्धिसागर आत्ममां, साचो रह मंडो. मत० ११

आत्मसमविश्वने देख.

सोरठ.

आतम! आतमसम जग देखो, वर्णादिकनी ममता त्यागी;
सर्वमां आतम पेखो..............................आतम०
वर्ण धर्मने देशना भेदे, प्रगट्यो मोह उवेखो;
सर्वजीवोथी हळीमळी चालो, सत्ताए आतम एको. आतम० १

उच्च नीच भेद, मनमां न धारो, शुद्ध स्वरूप संभारो;
रागद्वेषे मुंझो न मनमां, लेजो मार्ग तमारो. आतम० २
प्रभुसम रहेतां प्रभु मळे छे, आपोआप विचारो;
बुद्धिसागर आतम प्रभुने, पलक पलक संभारो. आतम० ३

आतम ! जगमें न हे कोउ तेरा.

सोरठ वा आशावरी.

आतम !!! जगमें न है को तेरा, स्वारथके संबंधी हैं सब;
मोहका है अंधेरा.......................आतम०
रागसें जानत है जो मेरा, वह सब नहि है तेरा;
संयोगका वियोग है निश्चय, क्या करे राग रु वैरा. आतम० १
स्वप्न सरीखा सब है संबंध, पंखीका ज्युं मेला;
आखर खाली होगा डेरा, तनु मट्टीका ढेरा. आतम० २
आतमकुं उपयोगे समरले, नहीं रहे भवका फेरा;
बुद्धिसागर अनंत ज्योति, परखी ले ब्रह्मचेरा. आतम० ३

आत्मबाग.

आतम !!! आतम बागमां फरशो, दुनिया मोह हवा मेरीली;
त्यां न कदा संचरशो...................................आतम !
आतम बागमां समशीतलता, ज्ञाननो भानु प्रकाशे;
आनंद अमृत वायु वातो, जन्मजरादुःख नासे. आतम० १
दर्शन चंद्रमा नित्य प्रकाशे, शक्ति अनंत उल्लासे;
अनंत गुण पेल्लवोयो विलासे, पर्याय पुष्प विकासे. आतम० २
असंख्यप्रदेशीआतम बागमां, भूख तृषा नहीं लागे;
माया मोहनुं जोरपणुं नहीं, रागद्वेष न जागे. आतम० ३

अज अविनाशी अमर अरूपी, भानम घागने जाणो;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, परमानंद प्रमाणो. आनन० ४

रामराम हरि.

सोरठ.

सबमन रामराम हरि गावे, पण नहीं प्रभुने पावे. सब०
एक राम दशरथ नंदन छे, बीजो घट घट बोले;
सत्ताराम छे जगमां व्यापक, समजी आतम तोले. सब० १
अगण्य गुणातीत विश्वयी न्यारो, शुद्ध राम कोइ ध्यावे;
हरि पण एवी रीते समजो, ध्याने ते दिल पावे. सब० २
फोनोग्राफ ज राम हरि कहे, पण ते मुक्ति न जावे;
नीति सदाचार समतायोगे, नामविना शिव थावे. सब० ३
आतम तेहिज राम हरि ब्रह्म, अरिहंत जाण्यो जावे;
अल्ला बुद्ध अनंता नामे, समजे गुण घट आवे. सब० ४
नाम पोकारे शांति न थावे, मनडुं न वशमां आवे;
शुद्धातमरूप जाणी गावे, आतमराम सुहावे. सब० ५
गावे बजावे न दिलडुं बुजे, अंध अंध दोरी जावे;
चिदानंद आतम महावीर ज, कोइक घट प्रगटावे. सब० ६
शुद्धातम महावीर छे राम ज, मूरख झघडा मचावे;
नाम असंख्य ने अर्थ छे एकज, ज्ञानीने सत्य भावे. सब० ७
भिन्न भिन्न वपु आतमराम छे, प्रगटावो गुणदावे;
बुद्धिसागर राम अरिहंत, आपोआप स्वभावे. सब० ८

मननी मान्यता.

सोरठ वा आशावरी.

ज्यां त्यां मान्यता छे जग मननी,
अनुभववण जग जन सहु भूल्या, ममता मत दर्शननी. ज्यां.
मतिभेदे धर्मो छे जूदा, भिन्नता छे घरघरनी;
रागद्वेषे स्वारथभेदे, भिन्नदशा छे तननी. ज्यां० १
एक थइ नहीं थाशे न क्यारे, मननी मान्यता धरणी;
आतम आप स्वरुपे थयावण, टळे न मननी करणी. ज्यां० २
शुद्धातम अनुभवरस पामे, रहे न मननी कतरणी;
मननी मान्यता भेद टळे सहु, परमानंदनी तरणी. ज्यां० ३
अज्ञानी अंधा उंधेला, ग्रहे न मुक्ति निःसरणी;
बुद्धिसागरप्रभु घट प्रगटे, चर्चा घरनी न वननी. ज्यां० ४

आतम !! मननुं कह्युं नहिं करवुं.

आशावरी.

आतम ! मननुं कह्युं नहिं करवुं, दुनियामां छे मननुं राज्य ज;
त्यां नहीं जन्म ने मरवुं....................आतम०
मनना मोहे जन्म ने मरवुं, लाख चोराशी फरवुं;
मन ते स्वर्ग नरक छे जाणी, आपस्वरुपने स्मरवुं. आतम० १
मननी माया जग पडछाया, मनथी मरवुं तरवुं;
आतम उपयोगे नहिं मरवुं, तरवुं नहि अवतरवुं. आतम० २
शुद्धातम उपयोगे रहेवुं, आनंदरुपने वरवुं;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरुपी, चिदानंदपद धरवुं. आतम० ३

संतो महावीरवाटे चालो.

राग आसावरी.

संतो महावीर वाटे चालो, आडुं अवळु न चालो. संतो०
अज्ञान रागने रोषने टाळो, भवमां मन वाळो:
मत पंथ दर्शन मोहने मारो, मतनी मिथ्या चालो संतो० १
सुख दुःख मानापमानमां समता, धरी प्रभुने संभारो:
सर्वशुभाशुभमां बनी साक्षी, संवर धर्म संभाळो. संतो० २
गच्छक्रिया मतमोह निवारो, निजपरिणतिने सुधारो:
देवगुरुनी श्रद्धा धारो, दोष समजता वारो. संतो० ३
निःसंग साक्षी उपयोगी थै, शुद्धातममां म्हालो:
मारग शूरानो न कंटाळो, वीर बनी वीर माळो. संतो० ४
क्षण क्षण महावीर दिल संभारो, आवे हठ मत आरो:
बुद्धिसागर महावीर वाटे, आनंद सहु चालो. संतो० ५

सबजग मतकी मारामारी.

सब जग मतकी मारामारी, खोटी म्हारी त्हारी मत है,
भूले नर अरु नारी....................................सब.
अपने मतमें सब हैं रागी, अन्यके मतमें न यारी:
दुनियामें जहां तहां है ऐसा, मतकी बात है प्यारी. सब० १
अपनी अपनी गावे सबजन, पक्षराग मन धारी;
रागद्वेषमें सत्य न सूझत, भूले पंडित भारी. सब० २
अपनी अपनी ताणे सब जन, मत त्यां युक्तिकुं धारी:
मतका मतपंथ प्रगटत विघटत, जानत क्या संसारी. सब० ३
रागद्वेष रहित महावीर हैं, उसका बोध विचारी;
बुद्धिसागर आतम पामत, उतरगए भवपारी. सब० ४

शुद्ध स्वदेशी व्रत.

सोरठ.

हमारे शुद्ध स्वदेशी थावुं, शुद्ध स्वदेशी कमावुं. अमारे०
असंख्यप्रदेशी आतमदेश ज, कर्मरहित थै जावुं;
मोह अशुद्धता दूर हठावी, आतमशुद्धि पावुं. अमारे० १
रागनेद्वेषथकी ज अशुद्धि, समभावे शुद्ध थावुं;
वर्ण देशना मोहे अशुद्धि, तेने दूर हठावुं. अमारे० २
आतम सरखा जग सहु जीवो, शुद्धप्रेमे भावुं;
भेद खेदने द्वेष त्यजीने, निजदेशे लय लावुं. अमारे० ३
बाह्यदेशमां मारुं न तारुं, आतमदेशने च्हावुं;
अनंत ज्ञानानन्दने ध्यावुं, शुद्धस्वदेशे समावुं. अमारे० ४
परब्रह्म शुद्धातम निर्मल, आपोआप सुहावुं;
बुद्धिसागर ब्रह्म स्वदेशो, आपोआपने गावुं. अमारे० ५

स्वराज्य प्राप्ति.

राग आशावरी वा सारंग.

अमारे राज्य अमारुं लेवुं, परनुं राज्य ते जडमायानुं;
जडनुं जडने देवुं………… …………अमारे०
असंख्यप्रदेशी आत्मराज्य छे, मोह त्यजी त्यां रहेवुं;
कर्मराज देवां चूकववां, समताए दुःख स्हेवुं. अमारे० १
सत्य स्वतंत्रने पूर्णानन्दी, आदि अंत न एवुं;
परदेशीमोहराज न पेसे, मननुं होय न कहेवुं. अमारे० २
अलख निरञ्जन नित्य जे शोभे, ज्योते जोया जेवुं;
बुद्धिसागर ब्रह्मराज्यमां, मस्त बनीने रहेवुं. अमारे० ३

अमारुं आतमराज्य मझानुं.

राग आशावरी वा सारंग.

अमारुं आतमराज्य मझानुं, आनन्दरद्धि यत्नां नहि छानुं;
ज्यां कोइ मोटुं न न्हानुं.......... ....अमारुं०
काम क्रोध मान माया न मत्सर, लोभ न रोगनुं टाणुं;
कावादावा युद्ध न झघडा, स्वारथनुं नहीं टाणुं. अमारुं० १
राजा प्रजा नहीं कायदा भीति, मृत्युनुं नहीं नजराणुं;
मोहादिकनुं ज्यां न धींगाणुं, ज्ञानानन्द ठिकानुं. अमारुं० २
आधि व्याधि जन्म मरण नहीं, अनंतगुणनुं खानुं;
बुद्धिसागर आतमराज्यमां, सर्वे सरखा निशानुं. अमारुं. ३

मुक्ति.

सोरठ.

साधुभाइ सब कोइ मुक्तिकुं पावे, मनका मोह टळत
तब क्षणमें, नरनारी शिव जावे..... ....साधु०
हिंदु मुसल्मीन बौद्ध ख्रीस्त हो, गृही त्यागी हो जावे;
प्रभु महावीर जिन उपदेशे, मुक्ति है समभावे. साधु० १
राम राम अल्ला जपनां क्या ?, मोह न यदि दूर थावे;
तपनान है जिहां तिहां न मुक्ति, मुक्ति है कर्म हठावे. साधु० २
जड चेतन सब जगकी उपर, समताभाव जो आवे;
समतां मुक्ति होती निश्चय, आतम उपयोग दावे. साधु० ३
आतोमय प्रभुकुं सरजी, प्रभुजीमें लय लावे;
बुद्धिसागर आनंद अमृत, पीके अमर हो जावे. साधु० ४

आत्माका मन शिष्य.

सोरठ.

करना आतमका मन चेला, जबतक मनका आतम चेला;
तबतक ठेलंठेला.....................करना०
आतमका मन चेला करना, वात हि है मुश्केला;
गुरुगमबोधे आतमज्ञाने, मन होत चेला सहेला. करना० १
मनकी मारामारी जिताजित, मन है समजु घहेला;
मन जीत्या तब जगकुं जीत्या, मन साथे शिव वहेला. करना० २
आतमके वश जब मन आवत, तब है आतम अकेला;
बुद्धिसागर आतम गुरुवीर, सब वीरोंमें पहेला. करना० ३

आतम निज उपयोगसें तरना.

आशावरी.

आतम!! निज उपयोगसें तरना, मनका मोहसें मरना. आतम०
चिदानंद निजरूप समरना, परमानंद रस झरना;
साक्षी होकर कर्मोदयमें, समताभावकुं चरना. आतम० १
मनकी कल्पना सर्व शुभाशुभ, उसकुं झट परिहरना:
आतमका उपयोगसें धर्म है, क्रियासें है भव फिरना. आतम० २
ज्ञानी कर्म करत है तोभी, निर्लेप है दिल धरना;
मन परिणाम क्रियासें न्यारा, आतमज्ञानी समजना. आतम० ३
सर्व संगमें निःसंगी है, आतम ज्ञानसें धरना;
बुद्धिसागर अलख निरंजन, ज्योति ज्योतसें मिलना. आतम० ४

संत.

कयांथी आ संभळाय मधुरस्वर ए राग.

संत छे एवा सत्य जगत्मां, संत छे एवा सत्य;
करे जे शुभ कृत्य.......... जगत्मां०
आतमप्रभुमां मन धरेरे, राग न धरता रीस;
सुख दुःखमां समभावथीरे, वर्ते विश्वावीस. जगत्मां० १
जेनी आंख दयामयीरे, दिलडुं बने पवित्र;
समभावे जे देखतारे, शत्रु मित्र कलत्र. जगत्मां० २
मारुं न तारुं जग रखुंरे, प्रभु उपर शुद्धप्रेम;
आतमसम सहु जीवनेरे, माने अंतर क्षेम. जगत्मां० ३
हिंसा जूठ चोरी नहींरे, निंदा नहीं व्यभिचार;
लोभ क्रोध माया नहींरे, लेश नहीं अहंकार. जगत्मां० ४
विषसमुं परधन गणेरे, मात समी परनार;
गुण देखे त्यां प्रेमधरेरे, दानी ज्ञानी उदार जगत्मां० ५
गंगापेठे पवित्र छेरे, जेनी मनवच काय;
गंभीर सागरनी परेरे, मेरु सम स्थिरता य जगत्मां० ६
शांत दांत त्यागी धर्मीरे, नहीं दुर्व्यसनो दोष;
दुष्टाचार न धारतारे, करता चारित्रपोष. जगत्मां० ७
नवीनकर्म न बांधतारे, हणता सत्ताकर्म;
कर्मोदय सुख दुःखविषेरे, आतम उपयोग धर्म. जगत्मां० ८
परमार्थे जीवन धरेरे, करता जग उपकार;
मत पंथ दर्शन हठ नहींरे, सत्याचार विचार. जगत्मां० ९
सात्विकसेवाभक्तिथीरे, करता दिलनी शुद्धि;
विषयादिक नहीं वासनारे, सात्विक धारे बुद्धि. जगत्मां० १०

समता सरवर झीलतारे, हंस सरीखा संत;
बुद्धिसागर प्रभु समारे, करे आतम भगवंत. जगनूमां० ११

श्रावक.

राग प्रभात.

श्रावक एवा जाणो साचा, दयावंत उपकारीरे;
देवगुरुने धर्मनी श्रद्धा, विवेक किरिया धारीरे. श्रावक० १
समकित श्रावक व्रतने धारे, करे न दुर्जन यारीरे;
स्वाधिकारे कर्म करे सहु, दुष्टासक्ति निवारीरे. श्रावक० २
केफी चीजो व्यसनो छंडे, थाय नहीं व्यभिचारीरे;
दुर्गुण प्रगट्या दूर निवारे, साधु संगति प्यारीरे. श्रावक० ३
दान शीयल तप भावना धारे, दुष्टवासना वारीरे;
आतमशुद्धि करवा रसियो, गुरुगम धर्म विचारीरे. श्रावक. ४
प्राण पडे पण सत्य न छंडे, उत्तमनीति धारीरे;
स्वाधिकारे सर्व गुणोने, धरतो ने व्यवहारीरे. श्रावक० ५
समता सामायिकने धारे, राग रोप संहारीरे;
षट् आवश्यक करतो भावे, गुरुपर प्रीति भारीरे. श्रावक० ६
बनी प्रमाणिक धंधो करतो, चार भावना धारीरे;
सर्वजीवोना हितमां जीवे, सर्वकला ग्रही सारीरे. श्रावक० ७
सद्वर्तनमां प्राण समर्पे, जाय न धर्मने हारीरे;
सोगन जूठा खाय न क्यारे, जिनवर आणा धारीरे. श्रावक० ८
गुरुमुखथी शास्त्रो सांभळतो, सेवा भक्ति वधारीरे;
विनयी गंभीर दाता साचो, वर्ते भूल सुधारीरे. श्रावक० ९
देशकाल अनुसारे वर्ते, आवक खर्च विचारीरे;
बाललग्न आदि कुरीवाजो, छंडे शक्ति समारीरे. श्रावक० १०

अज्ञानीने पदारोपणनां, कार्य करे गुणधारीरे;
संसारिक्रियोमां रसरंग, करतो मोहने मारीरे. भारक० ११
कर्म करे पण अंतर न्यारो, दिलमां प्रभु अवधारीरे;
सर्वविषे पण सर्वथी न्यारो, शुद्धातममां विहारीरे. भारक० १२
आतमना उपयोगे रहेतो, परम प्रभु अवतारीरे;
बुद्धिसागर सद्गुरुमांही, भारकनी बलिहारीरे. भारक० १३

प्रभुरस पामेला मस्त संतो.

राग प्रभात.

प्रभुरस पामेला संतोनी, अंतरमां आनंद प्रगटेरे;
प्रभुरसथी भींजेला हृदयमां, परम प्रेमरस पगटेरे. प्रभु० १
शुद्धातम प्रभुरस छे आनंद, पाम्यां न होय उदासीरे;
लघु बालकवत् निर्दोषी दिल, होय न भाशी निराशीरे. प्रभु०
प्रभुरस पामी अहरसमांहि, संत न रसिया थातारे;
प्रभुरसे रसिया जगमांहि, हर्ष शोक नहि पातारे. प्रभु०
प्रभुरस पाम्या प्रभुरूप थईया, आपोआप विलासीरे;
बुद्धिसागर संत जीवंता, घटमां वैकुंठवासीरे. प्रभु०

खरी ए प्रभु मलवानी निशानी.

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो. ए राग.

प्रभु मलवानी निशानी, खरी ए प्रभु मलवानी निशानी;
साची संतोए मानी..... .... खरी०
भूख्याने भोजन तरस्याने पाणी, बोलो मीठी वाणी;
उंचने नीचनो भेद गण्यावण, करो उपकार कमाणी. खरी०

धर्मशास्त्र मत पंथ कदाग्रह, करो न ताणाताणी;
दिलशुद्धिए प्रभु दिल प्रगटे, समभावे मुक्ति जाणी. खरी० २
सर्वजीवोनी हिंसा टाळो, हिंसा पापनी खाणी;
हणो हणावो नहिं जीवोने. जीववुं इच्छे प्राणी. खरी० ३
आत्मसमा जगजीवो मानी, सत्य दया दिल आणी;
चोरी ज्ञारी कपटने त्यागो, धर्मथी शांति पिछानी. खरी० ४
आतमज्ञानने शुद्धप्रेमे, करो न कोइने हानि;
दुःख विपत्ति संकट सहेवां, भक्तिनी करी ल्हाणी. खरी० ५
सात्त्विकभक्ति ज्ञान उपासना, पामी नीति मझानी;
बुद्धिसागर आपोआप ज, प्रगट प्रभु ऐंधानी. खरी० ६



महावीर भजन.

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो ए राग.

वीरभजन सुखकारी, जगत्मां वीरभजन सुखकारी;
समजी भजो दिलधारी....................................जगत्मां० १
वीर वीर महावीर जपंतां, मननी शुद्धि थनारी;
रवि उगे तम टळतुं यथा तेम, मननी माया जनारी. जगत्मां० २
वीर महावीर भजतां भावे, मोह टळे दुःखकारी;
परमब्रह्म महावीर पोते, प्रकट प्रभुता भारी. जगत्मां० ३
खातां पीतां हरतां फरतां, वीर भजो नरनारी;
उठतां बेठतां काम करंतां, वीर छे मंगळकारी. जगत्मां० ४
शुद्धातम परब्रह्म महावीर, भजन छे आनंदकारी;
बुद्धिसागर वीर भजंतां, प्रगटे प्रभुना प्यारी. जगत्मां० ५

आत्मा.

सोरठ.

आपोआपहि पाया, निरंजन आपोआपहि प्याया;
देह न देही छाया ....निरंजन०
आतमकुं कहां मातपिता सुत, आतमकुं कहां भ्राता;
आतम पुत्र कन्या न दादा, आप दादाने भाता. निरंजन०
आतम मातपिता नहि नारी, पुत्र न मित्र न भ्राता;
सरूप है और अरूप नाहि, ज्ञान नहीं और ज्ञाता. निरंजन०
आपहि कर्ता आप अकर्ता, आप न ध्याता अध्याता;
आप हि कर्म अकर्म अगोचर, आप हि दाता अदाता. निरंजन०
आपहि अस्ति आपहि नास्ति, सदसद्रूप कहाया;
आपहि साधन साध्य ह सिद्धि, साधन भिन्न सुहाया. निरंजन०
ज्ञानज्ञेय और आपहि ज्ञानी, गुणी निर्गुणी कहाया;
बुद्धिसागर अलख अरूपी, आपोआपकुं पाया. निरंजन०

अवधूत !!! नाम न रूप हमारा.

सोरठ.

अवधूत नाम न रूप हमारा, चिदानंद घन प्रभु परब्रह्म;
सबमें है सब न्यारा.................. .... .अवधूत०
नहि हम हिंदु जैन मुसल्मीन, गोत्रि न वर्ण अढारा;
जात भात नहि लिंग न वेषी, नहि आचार विचारा. अवधूत०
नहि हम धर्मी नाहि अधर्मी, कर्म न करणी क्यारा;
कुछ नहि लेना कुछ नहि देना, दान नहि दातारा. अवधूत०
वर्ण गंध रस स्पर्श नहि हम, जडका नहि आकारा;
पृथ्वी जल आकाश न अग्नि, चंद सूरज नहि तारा. अवधूत०

नहि हम मरते नहि हम जीते, प्राण न वायु पसारा;
नहि हम भोगी नहि हम जोगी, नहि मन नहि अवतारा. अ० ४
निश्चयनयसें आतम ऐसा, कोउ न पावत पारा,
बुद्धिसागर अलख अरूपी, आनंदरूप अपारा. अवधूत० ५

दुनिया हमकुं न कबहि पिछाने.

सोरठ वा आशावरी.

दुनिया हमकुं न कबहि पिछाने, अलख निरंजन आतम हम है;
ज्ञान विना क्या जाने.......... ....दुनिया०
मन इन्द्री कायामें भूली, मायाकुं ब्रह्म माने;
देहवेषमें हमकुं जाने, मुंझे मिथ्याज्ञाने. दुनिया० १
पंचविषयमें दुनिया डूली, भूखी भरिया भाणे;
आप आपका मनमें मशगुल, क्या पागल क्या श्याने. दुनिया० २
आतमज्ञानी होय सो हमकुं, आतमरूपे जाने;
बुद्धिसागर दिलमें परगट, परमेश्वरकुं प्रमाने. दुनिया० ३

आतम ! स्वर्ग नरक मन माना.

राग आशावरी.

आतम !!! स्वर्ग नरक मन जाना, सब दुःखका मन ठाना. आ०
कबहु मन होवत है श्याना, कबहु होता दिवाना;
शुभाशुभ मन कल्पना माना, मनका न ठाम ठिकाना. आतम !!! १
मनवृत्तिका नाशसें मुक्ति, परमानंद पद पाना,
बुद्धिसागर प्रभु मस्ताना, ठरना ठाम ठिकाना. आतम !! २

हमेरा पार न कोउ पाता.

आशावरी.

हमेरा पार न कोउ पाता, भिन्न भिन्न मनके सब लोको;
मतमतभेदसें ध्याता.........................हमेरा०
एक एक दृष्टिसें देखत, आपमतें उजमाता;
पर दर्शन मत खंडन करतें, मोहे वनी मतमाता. हमेरा. १
सब दृष्टि भेगीकर देखे, अंशसें हमहि जनाता;
दर्पनमें नहि विश्व प्रकाशत, दर्पनमें जग माता. हमेरा० २
आतमरूपमें जो कोउ आते, हमरूप होइ समाता;
मन बुद्धि ममता मायामें, मूढजनो भरमाता. हमेरा० ३
गति हमेरी हमहि जाने, मोही खत्ता खाता;
बुद्धिसागर अलख निरंजन, निजनिजकुं परखाता. हमेरा० ४

अब हम उतरगए भव पारा.

आशावरी.

अब हम उतर गए भव पारा, भव मुक्ति दोउ सम भासी,
आनंद अपरंपारा..................................अब.
शुद्धातमका अनुभव पाया, साधने साध्य समारा;
अपकीर्ति कीर्ति सम लागत, माया भ्रान्ति निवारा. अब० १
त्याग राग समभावी होतें, त्रिगुणातीत पसारा;
अवधूत मस्त भया हम आतम, मोह फालकुं मारा. अब० २
शुभ अशुभ परिणाम न जगमें, रहा न सारा नठारा;
रागद्वेषकी भ्रांति निवारी, जग नाहि द्वेषी प्यारा. अब० ३
मनमें सुख दुःख करत न विषयो, शुद्धस्वरूप हमारा;
बुद्धिसागर मस्ताना दिल, जगमें है जग न्यारा. अब० ४

भये हम आतम मस्त दिवाना.

आशावरी.

भये हम आतम मस्त दिवाना, दुनियाकी हमकुं नहि परवाह;
सब जग नाटक माना........................भये०
दुनियाका अभिप्रायमें हमने, हर्ष शोक नहि माना;
प्रभुमस्तीमें हम मस्ताने, हम नहि पागल श्याना. भये० १
प्रभुस्वरूप हम किसकुं गाना, रहा नहि कछु छाना;
आतम आपोआप प्रकाश्यो, किसका करना ध्याना. भये० २
प्रभुमस्तीकी दिवानीमें, दिल दिल्दारकुं जाना;
प्रारब्धे देहादिक वर्तन, होवत पीना खाना. भये० ३
दुनियासे आतमका खेलो, न्यारा सत्य पिछाना;
बुद्धिसागरब्रह्मचिदानंद, रसमें है गुल्ताना. भये० ४

आतम !!! सबसे हिलमिल चलना.

आतम ! सबसें हिलमिल चलना, आतमसम सब जगजीवो है;
प्रभुमयजीवन धरना........................आतम०
नरनारी सब बाह्य भेद है, आतमरूप समजना;
हिंदु मुसल्मीन खीस्ति बौद्धो, आतमरूप समरना. आतम० १
देश जातिका भेदकुं मिथ्या, मानी सबसें मिलना;
शुद्धप्रेमसे सर्व जीवोंकी, साची सेवा करना. आतम० २
धर्मभेदमें समता धरना, मोहसें है जग मरना;
आतमरसका रसिया होकर, शुद्धब्रह्मकुं वरना. आतम० ३
आतमशुद्धिसें है मुक्ति, पक्षपात नहि करना;
निर्गुण आतममस्तीकुं वरना, भवसागरकुं तरना. आतम० ४
भोजनपाणी सबकुं देना, ज्ञानसें जग उद्धरना;
बुद्धिसागर चिदानंदरस, पीकर जीवन धरना. आतम० ५

आतम !!! आतमकुं खुश करना.

आशावरी.

आतम !! आतमकुं खुश करना, अन्यकी खुशामतमें गुलामी;
आपस्वभाव विचरना.......... ....आतम०
रीझवना क्या अन्यजनोंकुं, आपोआप रीझवना;
परकी आशा दुःख निराशा, निज प्रभुताइ स्मरना. आतम !! १
मन इन्द्रियकुं खुश करनेंसे, क्षण क्षण होता मरना;
मोहगुलामी बडी हरामी, उससे है नहि तरना. आतम० २
जडसुख प्रभुताकी आशामें, परकुं नहि करगरना;
शुद्धब्रह्ममस्तीमें रहकर, फकड होकर फरना. आतम० ३
निज आतमकुं कोउ न उद्धरे, आपोआप उद्धरना;
बुद्धिसागर स्वतंत्र आतम, चिदानंदपद वरना. आतम० ४

आतम!!! परकुं क्या समजाना.

आशावरी.

आतम ! परकुं क्या समजाना, आपोआप समजकर रहेना;
होना नहीं नादाना आतम०
मानत है में परकुं बुझाया, अहंवृत्तिभ्रमखाना;
भवितव्यता जिसकी है जैसी, ऐसा होता जाना. आतम० १
भाविभावमें निमित्त होना, पर उपदेशमें माना;
ऐसा ज्ञान समजकर आतम !!! करना नहि अभिमाना. आतम० २
निज मन समजाया नाहि समजे, परको कैसे बुजाना;
जबतक आतमके वश नहि मन, तबतक नाटकखाना. आतम० ३
आपोआपकुं समजाना है, होकर जगमें दिवाना;
बुद्धिसागर परमप्रभुमें, रसिया है मस्ताना. आतम० ४

हमकुं ऐसी निद्रा आइ.

आशावरी.

हमकुं ऐसी निद्रा आइ, जामें दुनियादारी भूली,
ममता सब विसराइ.................................हमकुं०
ध्याता ध्येय अरु ध्यानकी वृत्ति, विलयपनाकुं पाइ;
ऐसी अवधूत निद्रा पाकर, आनन्दघन छवाइ हमकुं० १
नामरूपकी वृत्ति नहि कछु, मरण जीवन कुछ नाहि;
मन तन देहका भान नहि कछु, त्रिगुणातीतता छाइ. हमकुं० २
आधि व्याधि उपाधि नहि कछु, निद्रा समाधि सुहाइ;
बुद्धिसागरचिदानंदघन,-रससें अखियां घेराइ. हमकुं० ३

आतम ! साक्षी होकर रहेना.

आशावरी.

आतम ! साक्षी होकर रहेना, नाम रु रूपमें है अरु नाहि;
उसमें न लेना न देना..........................आतम०
अस्ति नास्तिमय तुं है आतम, सर्वविश्वरूप चेना;
आपोआप समर मभु तुं है, प्रकट है आनंदघेना. आतम० १
सर्वका साक्षी आतम ! तुं है, वाच्य अवाच्य तुं है ना;
अज अविनाशी अलख अरूपी, व्यापक ज्ञानसें कहेना. आतम० २
तेरी गति आतम ! तुंहि जाने, हुंतुंवृत्ति न वहेना;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, पूर्णचिदानंद चेना. आतम० ३

सबका धर्म है न्यारा न्यारा.

आशावरी.

सबका धर्म है न्यारा न्यारा, निज निजरूपी आपका,
धर्म है अगम अपारा............................सबका०
मनका धर्म सो मनमें रहेना, तनका तनमें धारा;
आत्मस्वभावे आत्मधर्म है, सबसे नहि संगारा. सबका० १
सर्वद्रव्य निज धर्मही धरते, ऐसा ज्ञान विचारा;
ज्ञान ओ आनंद आत्मधर्म है, निज उपयोगे निहारा. सबका० २
आतम आपोआप धर्ममें, रहना मुक्ति पसारा;
बुद्धिसागर शुद्धात्मका, धर्म है अंतर प्यारा. सबका० ३

आतम आपोआप प्रकाशी.

आशावरी.

आतम आपोआप प्रकाशी, नाहि घरी ओर नहि वनवासी;
नाहि यति सन्यासी आतम०
नहि ब्रह्मचारी नहि व्यभिचारी, नाहीं फकीर उदासी;
नहीं भर्ता वा नहीं अभर्ता हम, नहीं भूखे अरु प्यासी. आतम० १
नहीं गुरु वा नहि हम चेला, नहि हम स्वर्गी वा निराशी;
रागी न त्यागी न भोगी न योगी न, हर्ष न शोक विलासी. आ० २
नहि मनवाणी काया पुद्गल, आतम हम अविनाशी;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, ज्ञानानन्द उजासी. आतम० ३

हमेरा आतमरूप है जाना.

आशावरी.

हमेरा आतमरूप है जाना, नामरूपकी माया न हम है;
सबका साक्षी है माना.......................हमेरा०
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति न हम है, हम नहि दशाना दिवाना;
सर्व जगत्का हम है प्रकाशी, सघाए एक सुहाना. हमेरा० १
एक अनेक न एक अनेक है, जाना कथेसें न जाना;
सदसद्रूपी तुर्यातीत है, परमेश्वर परमाना. हमेरा० २
जडमें त्यागग्रहणकी न बुद्धि, त्यागका त्यागकुं माना;
जडचेतन सब जगमें समता, पूर्ण स्वरूप पहिचाना. हमेरा० ३
मेरा तेरा है नहि जग कछु, है नाहि मानापमाना;
बुद्धिसागरप्रभुमस्ताना, आनंदरस गुल्ताना. हमेरा० ४

मायावस्त्र खरी पडयुं.

राग मारु.

निशदिन जोउनारी वाटडी ए राग.

मायावस्त्र खरी पड्युं, थयो आतमा नागो;
लाज न मर्यादा रही, शुद्ध उपयोगे जाग्यो. माया. १
नागानी नहेनशाहीनी, कोइ आवे न तोले;
आनन्दरस पेरायली, आंखो पेनमां डूले. माया. २
लघु बालकवत् आतमा, निर्दोषी खेले;
सर्वविश्व प्रिय थइ पड्यो, शुद्धप्रेमी न ठेले. माया. ३
प्रकृति पहेरणां वधू हर्यां, धातासम थै बेठो;
निर्भोगी थयो आतमा, बुद्धि अंतर पेठो. माया. ४

नागार्थी समनी दुनिया, सट आघी भागी;
छुट्टो आकाशवत् आतमा, शुद्ध चेतना जागी. माया. ५
मायरुं तायरुं नहि रह्युं, शुद्ध आनंद उल्लसे;
नव नव ज्ञेयनी वर्तना, ज्ञानयोगे विलसे. माया. ६
परा पश्यंती वाखनी,–दशा नाणी जणाइ;
बुद्धिसागर आतमा, ज्योति ज्योत सुहाइ. माया. ७

अवधूत नाम न रूप हमेरा.

राग सोरठ.

अवधूत नाम न रूप हमेरा, आतमज्ञानमें आतम जाग्यो;
मिट गया अंधेरा..............................अवधूत०
नामरूपकी वासना पूरी, मगटे राग रु वैरा;
नामरूपका मोह पलाया, हर्ष न शोकका चहेरा. अव० १
मिथ्या नामकुं रूपकुं दुनिया, निंदो स्तवो लख फेरा;
उसमें हमकुं शोक न मीति, गगनगढ़ दिया डेरा. अव० २
ज्ञानानन्दकी मस्त फकीरी, जहां नहि मेरा तेरा;
बुद्धिसागरशुद्धातम प्रभु, अनंत नूर अकेला. अव० ३

गुणानुरागी थाशोरे.

: राग गोडी.

गुणानुरागी थाशोरे, ज्यां त्यांथी ग्रहो सत्य. गुणानुरागी.
दुर्गुण दोष न देखवारे, कर्मलगी ते होय;
सद्गुण ज्यां त्यां देखवारे, दोष त्यां अचरिज न्होय. गुणा० १
सद्गुणरागथी मगटतीरे, सम्यग्दृष्टि वेश;
सम्यग्दृष्टि पलयकरीरे, नासे रागने द्वेष. गुणानुरागी. २

दोषे सहु जीवो भर्यारे, दोषोने उवेख;
स्वार्थमतादिक मोह तजीरे, सम्यग्गुणोने पेख. गुणानुरागी. ३
निंदादोषनी दृष्टिथीरे, प्रगट थतां झट वार;
परी मध्यस्थनी भावनारे, गुण देखो धरो प्यार. गुणानुरागी. ४
रजस्तमोगुण सत्त्वनारे, गुण अवगुणनो विवेक;
सत्वगुणोथी आत्मनारे, गुण देखो धरो टेक. गुणानुरागी. ५
गुणरागी पहेलां थवुंरे, गुण छे प्रभुनुं स्वरूप;
बुद्धिसागरगुरुगुणीरे, सेवतां टळे धूप. गुणानुरागी. ६

अब हम पढपढ गुणकर थाके.

सोरठ.

अब हम पढपढ गुणकर थाके, आपोआप स्वरूपे है हम;
ज्ञानानन्दसे पाके.................. ....अब.
बडे बडे पंडित प्रोफेसर, मतपंथदर्शनी छाके;
कंचनकामिनीमोहे झुंझे, दास बने आशाके. अब. १
शङ्करजीर पण वहां नहि पहोंचे, शाब्दिकोंके थाके;
नैयायिकके बडे तडाके, पहोंचे न युक्तिफडाके. अब. २
मन संकल्प विकल्प मिटे तब, जागत आतमझांके;
बुद्धिसागरब्रह्मप्रभुकी, प्रभुता कोउ न ढांके. अब. ३

सर्वनयोनी सापेक्षदृष्टिए सर्वसत्य समजाय छे.

राग गोडी.

नयोनी सापेक्षाएरे, सर्व सत्य समजाय. नयोनी.
सर्वप्रकारे सत्यनीरे, सर्व वातु समजाय;
रागरोषशांति टळेरे, दृढ कदाग्रह जाय. नयोनी. १

सर्वेधर्मदर्शनविषेरे, अरसपरस मतभेद;
विरुद्धाचारविचारनीरे, दृष्टिना टळे खेद. नयोनी. २
दर्शन धर्मना भेदथीरे, युद्धादिक जे थाय;
वेर अहंतादिक टळेरे, मध्यस्थे सत्य जणाय. नयोनी. ३
नयसापेक्षनी दृष्टिथीरे, मध्यस्थ समता थाय;
सर्वांशे एकातमारे, भावदशा प्रगटाय. नयोनी. ४
प्रभुमहावीरे जणावियुंरे, सर्वनयोनुं ज्ञान;
बुद्धिसागर आतमारे, शुद्ध रुपो गुणखाण. नयोनी. ५

आतम!!! आप स्वभावमें रमना.

सोरठ.

आतम आपस्वभावमें रमना, मनकी मायामें दुःख छापा;
त्यागी दे सब भ्रमणा...आतम.
पुण्यपापफलसुखदुःख प्रगटे, समभावे वह सहना;
मनमें काम कषायो प्रगटे, उसकुं ज्ञाने दमना. आतम. १
कबही अमीरी कबहु फकीरी, राजा रंक है भ्रमणा;
ऊंच नीच अरु सारा खोटा, सब है मनका सपना. आतम. २
आतममें आनंदरस भोजन, आतमज्ञानसें रमना;
आतमका उपयोगे रहना, नाशे जन्म रु मरना. आतम. ३
सत्ताए प्रभु तुं है आतम, लेन है धर्म मनशरणा;
तेराश्रय मनरुचे साहिब, तारक है तुम तरणा. आतम. ४
उपयोगे निज आतमशुद्धि, करना है नितिकरणा;
बुद्धिसागर सहज प्रगटे, शीतल ज्योति उपशमना. आतम ५

अमारो पार न को जन पामे.

सोरठ.

अमारो पार न को जन पामे, शाब्दिक तार्किक पंडित थाक्या;
ठरिया नहि निज ठामे..............................अमारो.
जेमां जेटली बुद्धि तेटली, वाट हमारी जणावे;
मन बुद्धिथी पेलीपार हुं, त्यां कोइ भेदु आवे. अमारो. १
मुजने मूढाजन शुं ? जाणे, दृष्टिरागी न पावे;
सौमां हुं पण सौथी न्यारो, पावे कयो नहि जावे. अमारो. २
रागने रोष टळे घटमांही, प्रगटुं आनंदभावे;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, हुंहुं ज्ञानस्वभावे. अमारो. ३

अमारी पाछळ कोइ न लागो.

सोरठ.

छायक थै अम पासे आवो, तो फकड थै फरशो;
पाणीयारा मुन्सी जेवा, पासे पग नहीं धरशो. अमारो. ३
दुनियामां जीवंतां मरीने, अम पासे संचरशो;
दुनिया भूलो तो अम पासे, नहि तो नाहक मरशो. अमारो. ४
मुज रीझवतां दुनिया खीजशे, श्रद्धावण नहीं टरशो;
काळना मार्या क्यारे न मरशो, समजी संग जो करशो. अमारो. ५
आतमरूपे अमने जाणी, मन देह जग विसरशो;
बुद्धिसागर अंतर आनंद, आतमसंगति वरशो. अमारो. ६

आतम मनइ[य वश करना.

सोरठ.

आतम ! ! ! मनइन्द्री वश करना, जबतक मनइन्द्री वश नहीं है;
तबतक नहीं है तरना.....................आतम०
इन्द्र चन्द्रकी पदवी सहल है, सहल है नभमें फिरना;
मनइन्द्रीकुं जीतना दुर्लभ, सहल है पढना गुणना. आतम० १
मनइन्द्रीके मोहसें मरना, चारगति अवतरना;
आतममें नहि होत उतरना, दुःख दावानल जलना. आतम० २
आतमज्ञानसें मनइन्द्रीकुं, वशकर मुक्ति वरना;
बुद्धिसागरब्रह्मस्वरूपी, उपयोगे सुख धरना. आतम० ३

आतमअनुभव विरला जाने.

सोरठ.

आतमअनुभव विरला जाने, मरजीवा अलमस्त फकीरो;
आतमरसकुं पाने................आतम०
वेदागम बाइबल कुरानकुं, पढकर प्रभु न पिछाने;
राग रोष काम दूर करे तब, आपोआप पहिचाने. आतम० १

अमारी फकीरी मस्ती भरेली.

सोरठ.

अमारी फकीरी मस्ती भरेली, दुनियाथाते टहापण नहि वर्तु.
आंतर आनंद हेली ....अमारी०
परमातम परमेश्वररूपमां, चेतना मस्त बनेली;
दुनियादारी दूरे ठेली, ईश्वर एक छे वेली. अमारी० १
मनोवृत्ति प्रेमे थै चेली, सुरत लही थै छे छकेली;
रही नहि मननी ठेलाठेली, वासना येगे मरेली. अमारी० २
स्वतंत्रता निर्भयता केलि, ज्ञान वसंत फुलेली;
बहिरानप्रवृत्ति न रहेली, प्रभुरूपप्रवृत्ति ठरेली. अमारी० ३
बुद्धि थै प्रभु पामतां घेली, वृत्ति रही नहि मेली;
अनुभवप्रज्ञा प्रगटी फेली, प्रगटी वधाइ वहेली. अमारी० ४
मतपंथदर्शनथी वेंटेली, चेतना ब्रह्ममां खेली;
बुद्धिसागर मस्त फकीरी, प्रगटी लाली भरेली. अमारी० ५

आतम धर्म हे आनंदज्ञाना.

सोरठ.

आतम धर्म है आनंद ज्ञाना, पुण्य पाप दो धर्म है न्यारा,
जाने सो जैन माना............................आतम.
पुण्यसें सुख यश पूजा दोवत, पापसें दुःख अपमाना;
आत्मधर्म दोनोसे जूदा, समजे कोउ श्याना. आतम. १
पुण्य पाप दो पुद्गलबाजी, संध्यारागसमाना;
पुण्य पाप स्वप्नेकी माया, मोहसें नादि सुझाना. आतम. २
राग त्याग दो मनका योग है, अंतर्से भिन्न जाना;
बुद्धिसागर आतमधर्ममें, हुवा हम मस्ताना. आतम. ३

आतमनूर.

इन्वाली न्यारनी. ए राग.

मेरा आतम आनन्द नूर, अबीरम आरगरा;
हम लालन मस्त फकीर, अबीरम पान लहा.
आतम है परमातमारे, जो धोवे सो पाय;
आपोआपहि आतमारे, ज्ञानानन्द उदार.
दुनिया भूली दिलमेंरे, खोजो हजराहजूर; अबी० १
मेंनी ज्ञानीकुं मद्य दिन्नेरे, वरसत आनंदनूर.
जिसमें बंध रु काटनेरे, अबि रहा तुं समाय; अबी० २
देखे आतम मद्य खुमिरे, देखो नयन मिलाय.
मस्त चिदानंदमय मझरे, निरखी हुवा मस्तान; अबी० ३
बुद्धिसागर आतमेंरे, हुवा परमगुलतान.
अबी० ४

मनुष्यो परमेश्वर दिल धरना.

सोरठ.

मनुष्यो!!! परमेश्वर दिल धरना, न्याय नीतिका वर्तन करना;
धर्म कर्म आचरना........ ....मनुष्यो.
स्वार्थ वैर आदि दोषोकुं, मनमेंसे परिहरना;
हिंसा न करनी जूठ न कहना, दया सतकुं धरना. मनुष्यो. १
चोरी अरु व्यभिचार न करना, पापपुंज परिहरना;
झूठा सोगन कबहु न खाना, आतमघात न करना. मनुष्यो. २
दुर्व्यसनोमें न फसना, सद्गुणगण दिल धरना;
बुद्धिसागर प्रभु गुरुवर्यकी, सेवाभक्ति सुधरना.
मनुष्यो. ३

मनुष्यो!!! मननी प्रतीत न करशो.

राग आशावरी.

मननी प्रतीति न करशो, मनुष्यो मननी प्रतीत न करशो. ॥
मन जीत्युं मन मरी गयुं बहु, एवी अहंता न धरशो;
मार्युं कहेतां पाछुं जागे, मन विश्वासे मरशो. मनुष्यो० १
राग रोष प्रगटे ज्यांसुधी, त्यांसुधी नहीं ठरशो;
मन छे नर्क स्वर्ग भव बाजी, मन कहे तेम न करशो. मनुष्यो० २
ज्ञानी योगी तपसी संतो, !!! चेतीने संचरशो;
हुं तुं स्फुरणा' मोहे प्रगटे, मनसंगे भव फरशो. मनुष्यो० ३
ममता अहंता कामविकारो, जोइ जोइ संहरशो;
हुं ज्ञानी योगी हुं तपसी, हुं हुं मन परिहरशो. मनुष्यो० ४
मन शयताननी अकळकळा छे, पलपल उपयोग धरशो;
दुर्गुण हरशो सद्गुण वरशो, नहींतो दुःखे मरशो. मनुष्यो० ५
क्षयोपशम उपशम गुण पामी, अहंवृत्ति न धरशो;
बुद्धिसागर आतमभावे, उपयोगी थै ठरशो. मनुष्यो० ६

आतम!!! मोहने मारी नाखो,

आशावरी,

आतम! मोहने मारी नाखो, मोहथकी नहीं सुखने शांति;
प्राणांते सत्य भाखो.................................आतम.
कंचनकामिनीमोह त्यजीने, आतमसुखने चाखो;
मनवच कायथी हिंसा त्यागो, आतममां मन राखो. आतम. १
परधन पुद्गल सर्व गणीने, त्यागो ममता वळापो;
बुद्धिसागरशुद्धोपयोगे, जपवो अजपाजापो. आतम. २

सद्गुरु आपतरे पर तारे.

आशावरी वा सारंग.

सद्गुरु आपतरे पर तारे, मोह मगरवां मारे. सद्गुरु०
कंचन कामिनी मोह निवारे, दया दान दम धारे;
भक्तजनोंकी चढ़वा व्हारे, पढ़वा न मायाजाळे. सद्गुरु. १
भवपंथवासनानेगने वारे, आतमरूप संभारे;
साक्षी द्रष्टार्थे जग चाले, शुद्धब्रह्म निज भाळे. सद्गुरु. २
हर्षने शोकनीग्रंथि संहारे, ममता अहंता टाळे;
सत्य शौच समता गुण धारे, भव्यजीवोंने उद्धारे. सद्गुरु. ३
शुद्धातम उपयोगे म्हाले, समयी विश्व निहाळे;
कर्मकांड सब मोहने टाळे, सद्गु सापेक्षे विचारे. सद्गुरु. ४
पारसमणि सद्गु जग अजवाळे, ज्ञानी कर्म निवारे;
बुद्धिसागरगुरुभक्तिथी, शिष्यो सद्गु पद भाळे. सद्गुरु. ५

आतम ! दुनियाकुं भूलजाना.

आशावरी.

आतम ! दुनियाकुं विसरना, रागद्वेष न जडमें करना;
समताभावे विचरना...आतम.
जाग्रत् होतां स्वप्न है मिथ्या, ऐसा ज्ञानसें माना;
स्वप्नसरी सब दुनिया मानी, उसमें नहि मुंझाना. आतम. १
अलख अरूपी अज अविनाशी, आतम तुं गुणखाना;
तेरा वारे मनकुं करले, निर्भय हो मस्ताना. आतम. २
आपोआपकुं है समजाना, मनमें नहि गभराना;
जिसका संयोग वियोग है उसका, हर्ष शोक तज स्याना. आतम.३
शुद्धातमरूप तेरा समरले, होवत नहि पस्ताना;
बुद्धिसागर पडजा पाया, रहा न मन अभिमाना. आतम. ४

मनुष्यो ! हळीमळी संपी रहेशो.

आशावरी.

मनुष्यो ! हळीमळी संपी रहेशो, कर्माधीन छे सर्वे जीवो;
आनन्दमय सर्वो रहेशो . .. .मनुष्यो.
सर्वजीवोना गुणने देखो, दुर्गुण सामुं न जोशो;
स्नेहीजनोनी इच्छा न करशो, शत्रो मनना दोषो. मनुष्यो. १
पोतानी भूल पोते जोशो, पश्चात्तापथी शोधो;
परमेश्वरने दिलमां धरशो, पाप करेलां धोशो. मनुष्यो. २
सत्तास्पर्धाथी न कुटाशो, भूलवाने कंइ देशो;
नरभवने जड मूर्तिने लिया, ज्ञानी मुक्ति लेशो. मनुष्यो. ३
आपसमां अहंकार न करशो, कोई पाई न लेशो;
सर्वजीवोनो घात न करशो, सहुनां ए कहेशो. मनुष्यो. ४
चोरी धाडी व्यसन निवारो, न्याय नीतिथी रहेशो;
देव गुरुने वंदन करशो, शास्त्रमां न पोषो. मनुष्यो. ५
सौनां सद्गुणो देखो येसे, नास्तिकतामां भोगो;
शासनमां भक्ति अनुसारे, दुःखीने सहायो. मनुष्यो. ६
सर्वेश्वर सहायने मनशो, गुरु संतने पोषो;
बुद्धिसागरसद्गुरु शब्दो, एवा नहीं अहेशो. मनुष्यो. ७

आनन्द !!! कोने हणो न हणाशो.

कव्वाली.

आनन्द !!! कोने हणो न हणाशो, हणनारने मनुवोने न रहो;
हणवुं हित करो . ... .आनंद.
मनवाणी काया नहीं, हणा न विचार करो;
अहिंसा मन धरो, ते विचार हितकारी. आनंद. १

दयाविनानो धर्म न कोइ, रन जीव बचावो;
दयायकी दिलमां परमेश्वर, प्रगटे निश्चय दावो.
दयाविनानुं वर्तन पाप ज, हिंसाबुद्धि हठावो;
कोइनुं बूरु करो नहीं क्यारे !! पाठ दयाना पढावो. आतम.
जन्तुओनी करो न हिंसा, दिलमां दया वहेवरावो:
पशुपंखीपनुरक्त न पीवो, अन्योने नहि पावो. आतम.
हिंसामय व्यवानी राज्य ना, धंधो करो न करावो;
अहिंसाना स्वर्गराज्यमां, विचरो ने विचरावो. आतम. ४
सर्वमहद्विपांहि अहिंसा, उपयोग दिलमां लावो;
जीवंतां प्रभुपद पाम्यानो, लाहेणो ल्यो ल्हावो. आतम. ५
सेवा भाक कर्मो सफळ्यां, आतमशुद्धि जमावो;
बुद्धिसागरधर्म अहिंसा, पाळो प्रेमे पळावो. आतम. ६

आतम. ७

आतम !!! आपस्वरूपमां म्हालो.

सोरठ.

आतम !!! आप स्वरूपमां म्हालो, राग ने द्वेष कर्पावण चालो;
आतमसम जग भाळो........ ....आतम.
प्रतिक्षण आतम ! निज यात्रामां, मोहनी वृत्ति टाळो.
थाहतुं सहतुं अमृत ल्हाणुं, अंतर्मां पनवाळो. आतम. १
मरण जीवनमां निर्भय थने, अहंपणाने वाळो;
नामने रूपमां निर्मोहभावे, रहीने जीवन गाळो. आतम. २
क्षण क्षण दिल महावीरने समरो, आयुष्य एळे न हारो;
बुद्धिसागर शुद्धातमप्रभु, चिदानंदपद म्हालो. आतम. ३

आतम ! अहंपना नहि करना.

राग. आशावरी.

अहंपना नहि करना, आतम ! अहंपना नहि करना ॥
हम है ज्ञानी व्रतीगुणी हम, ऐसी न वृत्ति धरना;
नाम रु रूपकी अहंवृत्तिकुं, दिलमें प्रकटती हरना. आतम. १
हम है साधु अन्य असाधु, अहंकार परिहरना;
गुणीपनाका क्या अभिमाना, निरहंपनेसें ठरना. आतम. २
अण्घा अभिमान धरना बूरा, चतुर्गतिमें फरना;
अहंपनेसें होवत मृत्यु, निरहंपनेसें तरना. आतम. ३
नाम रु रूपका त्यज अहंकारा, अनहंपनेसें विचरना;
बुद्धिसागर आतम उजागर, परमानंदपद वरना. आतम. ४

आतम ! अलखप्रदेशमां चालो.

आशावरी.

आतम ! अलखप्रदेशमां चालो, मुसाफरीनां साधन बदली;
बीजां लेइने चालो.......................................आतम !०
घोडा बदली रथने बदली, बीजां लेइने चालो;
म्हारुं त्हारुं मोहने टाळी, ज्ञाने पंथ निहाळो. आतम. १
प्रेमीओने करी प्रणामो, आगळ यात्रामां म्हालो;
जडनुं जडने निजनुं निजने, आपी जीवन गाळो. आतम. २
दिव्य प्रकाशमां आगळ चालो, ठाठ त्यजी दो ठालो;
अनंत आनंदघनमां म्हालो, शुद्धातम गणो व्हालो. आतम. ३
दर्शन ज्ञानने चारित्ररुपी, आपोआपने भाळो;
बुद्धिसागर आतमभावे, आपोआप निहाळो. आतम. ४

॥ आतम ! प्रभु नाम समजी समरीए ॥

सोरठ.

आतम ! प्रभु नाम समजी समरीए, प्रभुनां नामो असंख्य विचारी;
नामरूपमोह हरीए.......................................आतम० ॥
देहमां व्यापक आतम प्रभु छे, ते हुं निश्चय धरीए;
कायादिक कर्म प्रकृति माया, हुं तुं तेमां न करीए. आतम. १
सर्व प्रभु नाम वाच्य छे आतम, चिदानंद घट वरीए;
सर्वनां साक्षी थैने रहीए, निर्लेपी थै ठरीए. आतम. २
रागने रोषमांहि न भळीए, उपयोगे शुद्धळीए;
पराभक्तिने सात्त्विक ज्ञानथी, आगळ जे प्रभु वरीए. आतम. ३
संग छतां निःसंगी रहीए, मोहरुचि संहरीए;
ध्याता ध्येयने ध्यान छे आतम, गुणगुणी एकत्व ठरीए. आतम. ४
आतम आनंदरस पामीने, अन्यरसोमां न भळीए:
बुद्धिसागर आतम निश्चय, पातां न फेरा फरीए. आतम. ५

चेतन !! ब्रह्ममां प्रेम जगावो.

आशावरी.

चेतन ! ब्रह्ममां प्रेम जगावो, काया माया मोह त्यजीने;
शुद्धब्रह्म थै जावो.......................................चेतन. ॥
पद्मसुगंधे कमळमां भ्रमरो, मरतो प्रेमनो दावो;
प्रेम पतंगियुं दीपकमां मरे, आतममां प्रेम लावो. चेतन. १
श्रवणना प्रेमे हरणने नाग ज, भान भूले दिल भावो;
आतमप्रेममां सर्व स्वार्पण, करीने प्राण गुमावो. चेतन. २
प्रभुना प्रेमनी न्यारी खुमारी, आनंदघन प्रगटावो;
बुद्धिसागर आतमप्रेमी, ले तुं जीवन ल्हावो. चेतन. ३

आतम ! समताभावे विचरशो.

आशावरी.

आतम ! समताभावे विचरशो, पलपल महावीरप्रभुने स्मरशो;
मनतुं कशुं नहीं करशो आतम०
अनीति दोषमां डगलुं न भरशो, दुष्टवृत्ति परिहरशो;
सुख दुःख आवे हर्षचिंतावण, आतम उपयोग धरशो. आतम. १
कर्मोदयमां साक्षी थेने, शुद्धज्योते झळहळशो;
नामने रूपनी वासना वारी, आतमशुद्धिए फरशो. आतम. २
दर्शनज्ञानचारित्रस्वरूपी, निजरूप क्षण न विसरशो;
आतम तुं परब्रह्म निरंजन, सद्गतधर्मे ठरशो. आतम. ३
आपोआप स्वरूप विचारो, जडमां अहंता न धरशो;
आतम कर्मनो भेद विचारी, देहाध्यासने हरशो. आतम. ४
शुद्धबुद्धिए आतम निश्चय, धारी भवोदधि तरशो;
बुद्धिसागर अलख अरूपी, चिदानंदपद वरशो. आतम. ५

स्वराज्य लायक देश.

ओधवजी सन्देशो शामने. ए राग.

स्वराज्य लायक देश खंड ते जाणजो,
ज्यां नरनारी ज्ञानी सद्गुणी होयजो;
न्याय ने नीतिथी वर्ते माणो जतां,
वैर तजेने नडे न कोने कोयजो. स्वराज्य. १
दारु चोरी झारी दुर्व्यसनो तजे,
मूनामरकी करे न जातां प्राणजो;
साधु संतनी सेवा करता भावथी,
करे न स्वार्थे जूठी ताणाताणजो. स्वराज्य. २

धर्मभेदथी खेद करी जे नहीं लडे,
धर्मदेवने वर्णनां सनमानवजो:
कुटुंब कबीलो करे न कोर्टे नहीं चडे,
सत्यने न्याये लेवा साचा दावजो. स्वराज्य. ३

घेर घेरमां वेर नहीं हिंसा नहीं,
मोटा नाना पाळे सत्याचारजो:
व्यक्तियोने अस्पर्श्यनां नहीं वारवे,
दया दान दम धरतां नरने नारजो. स्वराज्य. ४

पक्षीजाना दुःखेदुःखी जे सदा,
करता कर्मे अरसपरस उपकारजो;
पशुपंखीने मनुष्यहिंसा नहीं करे,
मैत्रीभावे धारे धर्माचारजो. स्वराज्य. ५

मन साइने अन्योनुं भलुं जे करे,
धरे सरलता लेश नहीं अभिमानजो;
मनवाणी ने कायामां ज पवित्रता,
धारे निशदिन करता साचुं ज्ञानजो. स्वराज्य. ६

दुष्कर्मने केडी वस्तुनो वळे,
करे न वननां अन्यजीवोनी घोरजो;
देव संदनां होय न धाडाधाडुजो,
नाम पडे पण बने न कोइ चोरजो. स्वराज्य. ७

पक्षीजाना धर्मनो द्वेष करे नहीं;
मवकाओ ज्यां निर्बलने नहि सापजो;
भ्रातभी अन्यायो ज्यां नहि रहे,
धनसंपत्नां माणांने नहि मापजो. स्वराज्य. ८

अत्यावीओ उपर पण करुणा धरी,

प्राणांते पण करे न को व्यभिचारजो;
सती जति सन्तान घणां गुणीओतणां,
आत्मसमुं जग देखे नरने नारजो. स्वराज्य. ९
न्याय थता जनताना निर्मळबुद्धिथी,
सदा सुलेहे वर्ते सत्यप्रवर्तनजो;
जूल्मने खून करे नहि मनआवेशथी,
करे न दोषो मोहे बनीने अंधजो. स्वराज्य. १०
सरखी रीते न्याय थता सहु लोकना,
करे न कोइ कोइनणुं अपमानजो;
शुद्धप्रेमथी मित्र बनी संपी रहे,
खमे खमावे जनो परस्पर मानजो. स्वराज्य. ११
दोषो टाळे ग्रहे गुणो पस्ताइने,
चामडीमोहे करे न काळां कर्मजो;
काम क्रोध इर्ष्यादिकनो त्यागी बने,
प्रभु गुरुने दिल्मां धारे धर्मजो. स्वराज्य. १२
ज्ञान योगने सेवाभक्ति जागती,
मन वाणी कायाने वश करनारजो;
मोहनणी प्रबळतानीनुं ज्यां जोर नहि,
अरसपरसमां वर्ते साचो प्यारजो. स्वराज्य. १३
स्वराज्य लायक एवां ज्यां नर नारीओ,
स्वतंत्रता सुख शांति होय प्रधानजो;
बुद्धिसागर स्वराज्य आनन्दाश्रमां,
समभावे प्रगटे घटमां भगवानजो. स्वराज्य. १४

दिलमें क्या करना अभिमाना.

आशावरी.

दिलमें क्या करना अभिमाना, संजमनाका गुण नहि पाया,
फोगट दिलमें फुल्याना...... ....दिलमें.
लक्ष्मी किन्ही पर दान दिया नहि, मन धनमेंहि लुभाना,
सचा किन्ही समजा नहि पारा, ध्यानतनावें दिवाना. दिलमें. १
किया परी अहंकार भया बहोत, दिलमें न मलकुं पिछाना,
भव भव जन संयम नहि पाया, देह नाम बुलसाना. दिलमें. २
विद्युद्रंग ह हरिश्चक्रर्णवत्, अस्थिर सब पहिचाना,
बुद्धिसागर शुद्धातम सब, दुनिया नाटकखाना. दिलमें. ३

आतम सरीखुं सहु जग धारुं.

राग आशावरी.

आतम सरीखुं सहु जग धारुं, सर्वजीवोने हणुं न हणावुं,
हणतां हर्ष न धारुं ....आतम.
कोपर राखने रोष करुं नहीं, हिंसाबुद्धि निवारुं;
मुजसम जगमां सर्वजीवोनुं, जीवन धारुं प्यारुं. आतम. १
धर्मने जातिवर्णना भेदथी, कोइनी हचि न धारुं;
वैरी उपर वैर न राखुं, शत्रुने न संहारुं. आतम. २
सर्वविश्वना मानव मुजसम, समदृष्टिथी भाळुं;
समदृष्टिथी सर्वजीवोना, हितमां जीवन गाळुं. आतम. ३
आतमरूपे सर्वजीवोने, देखुं ने संभारुं;
विणा पर्यायो शुभाशुभ, कल्पना मनथी वारु. आतम. ४
अधिकारे कर्म अदा करी, निष्क्रिय निजने विचारुं;
बुद्धिसागर दिल अनुवाळुं, निजतत्त्व निहाळुं. आतम. ५

आतम !!! समताभावकुं धरना.

आशावरी.

आतम !!! समताभावकुं धरना, शुभ अशुभ दो भावकुं हरना;
निज उपयोगे विहरना........................आतम.
समतासें सब कर्म निजरना, क्षणमें केवल वरना;
शुद्धातम निजरूप समरना, पुण्यपाप परिहरना. आतम. १
क्रोधादिकका उपशम करना, उससे निश्चय तरना;
क्षण क्षणमें नहि होत है मरना, मगटत अमृत झरना. आतम. २
जीवनमरणमें मोह न करना, अनासक्तिसें फरना;
बुद्धिसागरसमता शरणा, करके कबहु न डरना. आतम. ३



मनुष्यो !!! आतमधर्मने धरशो.

राग आशावरी वा सारंग.

मनुष्यो !!! आतमधर्मने धरशो, धर्ममेदथी द्वेष धरीने;
मारामारी न करशो........................मनुष्यो !!!
मुंडे मुंडे भिन्न भिन्न मन, कोपर द्वेष न धरशो;
एकमतो कदि थयो न थाशे, धर्मयुद्ध परिहरशो. मनुष्यो. १
धर्मना भेदे मारामारी, कापाकापी न करशो;
धर्मोमांथी सत्यने लेशो, पक्षापक्षी न करशो. मनुष्यो. २
शास्त्रोमांथी सारुं ग्रहशो, मध्यस्थबुद्धि धरशो;
रागने रोष व्याख्यान छोडो, आतम धर्म न वरशो. मनुष्यो. ३
महावीरसर्ववीतराग थवाने, समताभावे विचरशो;
मतसंप्रदायनमोहे न मुंझो, सत्यविचारे न मरशो. मनुष्यो. ४
मानवधर्म प्रगट करवाने, सर्व कषायो हरशो;
हिंसा जूठुं चोरी मारो, दुष्टसंगु दूर करशो. मनुष्यो. ५

दुर्गुण दुर्व्यसनो ने अनीति, तेनां पगलुं न भरजो;
आत्मज्ञानने सद्गुण वरजो, तेथी भवोदधि तरजो. मनुष्यो. ६

महावीरप्रभु वाचाने, सत्यविचारे विचरजो;
बुद्धिसागरमानवधर्मे, निजमानव उद्धरजो. मनुष्यो. ७

साचाब्राह्मण जगमां तेओ जाणवा.

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने. ए राग.

साचाब्राह्मण जगमां तेओ जाणवा,
ब्रह्मने जाणे ब्रह्मनुं वर्तन होयजो;
ब्रह्मनी विद्या भणे भणावे विश्वने,
अहिंसामय विचार वर्तन जोयजो. साचा. १
सत्यने जाणे सत्यने बोले सत्यनुं--
वर्तन मनवाणीकायाथी थायजो;
करे न चोरी प्राण जतां पण जे कदा,
व्यभिचारीनी वाटे न क्यारे जायजो. साचा. २
बालवयनी उमर सुधी जे धरे,
ब्रह्मचर्यने करता ज्ञानाभ्यासजो;
लक्ष्मीना लोभी नहि संतोषे रहे,
धरता परमेश्वर उपर विश्वासजो. साचा. ३
गुणने कर्मथी ब्राह्मणपणुं प्रगटाय छे,
जन्मथकी नहि आतम ब्राह्मण थायजो;
न्यायने नीति शुद्धप्रेम समभावथी,
मानवमांहि ब्राह्मणपणुं प्रगटायजो. साचा. ४
युद्ध करे नहि दारु पीवे नहीं जरा,
पशुपंखी जळचरनुं मांस न खायजो;

देवनानामे पशुपंखीने नहीं हणे,
करे न हिंसामय यज्ञोने क्यांयजो. साचा. ५
न्हावा धोवा मात्रथी नहि ब्राह्मणपणुं,
जनोइ धरवा मात्रथी नहि प्रगटायजो;
काम क्रोधने कपट कलाना त्यागथी,
पाखंड व्हेमना त्यागथी गुण सोहायजो साचा. ६
खेती नोकरी पीलण कर्मो नहि करे,
विद्यावण बीजीवृत्तिनो त्यागजो;
धर्मना मोहे अन्यधर्मीओ साथमां,
द्वेष धरे नहीं राखे साचो रागजो. साचा. ७
दुर्गुणव्यसनो प्राणपडे पण नहीं धरे,
अन्यजीवोने पीडे नहि तलभारजो;
जूठी साक्षी पूरे नहि निंदा त्यजे,
सात्विक पानने सात्विक ले आहारजो. साचा ८
जूठां शास्त्रो ग्रन्थो जे रचतो नहीं,
पेटनेमाटे करे न धूरां पापजो;
जाति मात्रथी ब्राह्मणना अभिमानथी,
पक्षापक्षी करे न देता शापजो. साचा. ९
सद्गुण सत्याचारथी छे ब्राह्मणपणुं,
ज्ञानविना नहि क्रियामात्रथी जोयजो;
जातिमात्रथी गुण कर्मोंवण शुं वळे ?,
ढोंग व्हेमथी गुण प्रगटे नहि कोयजो. साचा. १०
सर्वनयापेक्षाए सघळा धर्मनी,
एक वाक्यतानो देतो उपदेशजो;

सत्यधर्मने धारे आतमशुद्धता,
हेने जेना सद्‌गु वर्ने उद्देशजो.
एवा ब्राह्मणने ब्राह्मणोओ विश्वमां,
सर्वलोकनुं सत्य करे कल्याणजो;
बुद्धिसागर साचा ब्राह्मण संगथी,
पोह टळेने मळे प्रभु भगवान्‌जो. साचा. ११

साचा. १२

राज्याधिकारी वर्ग.

उधरनो राग.

राज्यवणो अधिकारी वर्ग ते सत्य छे,
लांच न लेवे करे न पक्षापक्षजो;
दया घणी दिलमांने सत्य वदे सदा,
वफादारने पूर्ण प्रमाणिक दक्षजो. राज्य. १
क्षमाविनानी सत्तायी दोषो वधे,
प्रचारदर्पी थाय घणा अन्यायजो;
सत्ता मदथी निज भूले नहि शुभरे,
मनवाणी कायानी शुद्धि न थायजो. राज्य. २
व्यभिचार हिंसा चोरी जूठुं तजे,
ढुघाइने द्वेष नहीं वडभारजो;
विनय विवेकने लघुता दिलमांवा घणी,
केफी वस्तु दारुनो परिहारजो. राज्य. ३
प्रजाराज्यनुं श्रेय सदा जे साधवो,
जूल्म अनीति वारे याता दंडजो;
पशुपंखी मानवनी शांति राखजो,
चोरो खूनी ठोकने देवो दंडजो. राज्य. ४

पाप करे नहि प्राणांते पण जे कदा,
अदा करे निज फर्जने धारी धर्मजो;
एवा सत्तावाळा ज्यां छे राज्यमां,
प्रजा अने राजाने त्यां छे शर्मजो. राज्य. ५

क्रूर अने लुच्चा स्वार्थी अधिकारीओ,
हाजीहा करनाराने बदमाशजो;
राजाने ते प्रजासंघना शत्रुओ,
लडे लडावे करे प्रतिज्ञा नाशजो. राज्य. ६

सूक्ष्मदृष्टिथी नीति न्यायने पारखे,
प्रभुविश्वासी सभ्य करे परमार्थजो;
प्रजासंघने देश राज्यना अग्रणी,
समजे शास्त्रोनां रुडां वाक्यार्थजो. राज्य. ७

धीर वीर गंभीर ने दाता सद्गुणी,
चावुं सहेवुं शुद्धप्रीति धरनारजो;
अधिकारनो उपयोग ज सारो करे,
धरे प्रजाहित सत्य विचाराचारजो. राज्य. ८

गमखाइने अपराधीओनुं करे,
भलुं मनें अंतरमां रहे निष्कामजो;
गुण टाळे सर्वजीवोथी मित्रता,
बनी मध्यस्थ ज खर्चे धर्मे दामजो. राज्य. ९

सज्जनतानां लक्षण जाणे आचरे,
देश प्रजाने करे न भूपनो द्रोहजो;
उत्साही धैर्यी आनंदी बनी रहे,
करे न जूठो दुनियादारी मोहजो. राज्य. १०

एवा सत्ताधिकारी उर्या नौकरो,
देवराज्यमां आनंद शांति अपारनो;
बुद्धिसागर सुदावत मद्य पामवा,
लायक एवा अधिकारी नरनारनो.   राज्य. ११

आतम! तेरी सत्यकमाणी.

आशावरी.

आतम! तेरी सत्यकमाणी, जडकी कमाणी जूठी जानी;
तनधन है धूलधाणी............................आतम.
मेरुसम सुरणके मन्दिर, पदवी इन्द्र इन्द्राणी;
शहेनशाही अधूवरानी, इन्द्रजाल सब मानी.   आतम० १
सुंदर काया मन अरु वाणी, स्वप्नसमी समजानी;
ज्ञानानन्दमें सर्व समानी, समजे योगी ज्ञानी.   आतम० २
अनंतवीर्य उपयोग निशानी, अनुभवसे दिल मानी;
बुद्धिसागर दिल मस्तानी, भयी ऋद्धि गुल्तानी.   आतम० ३

आतम!!! देखो आतम नूरा.

आशावरी.

आतम!!! देखो आतमनूरा, असंख्यप्रदेशी परतट स्पारक;
आनन्दरसभरपूरा...............................आतम०
देखे है और देखे न्यारा, आतेभार दूरा;
हा दर्शन सब के आर हि, निजनिजसे नहीं दूरा.   आतम० १

आतम आनंदअमृत छंडके, पी नहि मोहधतूरा;
आपस्वभावे खेलो आतम, प्रगटे अनुभवतूरा. आतम० ३
सब जगका साक्षी निःसंगी, चेतन्य ब्रह्म है शूरा;
बुद्धिसागर अलख निरंजन, व्यापक जग मशहूरा. आतम० ४

आत्मतत्त्वना ज्ञानी साचा त्यागीओ.

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने. ए राग.

आ मतत्त्वना ज्ञानी साचा त्यागीओ,
कंचन कामिनी त्यागे बाहिर् त्यागजो;
आत्मनी आसक्ति नहि अंतर् त्याग छे,
तनधन मोहना त्यागे आतमरागजो. आ० १
हिंसा जूठुं चोरी मैथुन त्यागथी,
काम क्रोध लोभादिक त्यागे धर्मजो;
गुणवण भगवां धोळां पहेरे शुं थयुं ?
मुंडे लुंचे टळे न आठे कर्मजो. आ० २
ब्रह्मचर्यने रक्षे वाडो जाळवी,
धर्मक्रिया मतभेदे द्वेषनो त्यागजो;
सद्वर्तनने पूर्णप्रमाणिक जे रहे,
सात्विकत्यागे वधे सत्त्ववैराग्यजो. आ० ३
क्षमा सरलता मार्दव मुक्तिने धरे,
तपजप संयम ध्यान समाधि धारजो;
मनवाणी कायाथी शौचने धारता,
मनवचकायनी गुप्तिना धरनारजो. आ० ४

नयसापेक्षे सत्यधर्मने बोधता,
धर्मभेदथी करे नहीं तकरारजो;
इन्द्रियपशुने मनपर काबु धारता,
द्रव्यक्षेत्रने कालभाव व्यवहारजो. आ० ५
सागरवरगंभीरा धीरा वीर जे,
पंचसमितिधारक करे उपकारजो;
आतमना उपयोगे वर्ते आत्ममां,
मैत्रीआदिभावना भावे धारजो. आ० ६
देवगुरुने धर्मनी श्रद्धा मांहिर्या,
आतमशुद्धिना पाळे आचारजो;
तमोरजोगुण त्यागपणाथी त्यागता,
दुर्गुणदुर्व्यसनादिकनो परिहारजो. आ० ७
समताभावे आत्मरूपमां म्हालता,
रागद्वेषना त्यागे त्यागी पापजो;
आत्मराज्यमां स्वतंत्र थैने खेलता,
राजयोगने साधी पद स्थापजो. आ० ८
ज्ञानानन्दने भगवती प्रभु जे थया,
तेओने वंदे सेवे सुख थायजो;
बुद्धिसागरआनंदमंगलता वरे,
त्यागीसंतसमागम क्षण सुखदायजो. आ० ९

राज्यक्षोभ विनाश.

राज्यक्षोभ विणसाय, वदा तो राज्यक्षोभ विणसाय;
क्रूर पूर्व हुआ जनो रे, आगेवानी थाय;
स्वार्थी दुर्जन अग्रणी रे, धर्मांधजनसमुदाय. वदा. १

द्वेष कुसंपने वैरथी रे, फाटाफूटने घात;
राजाव्यसनीने निर्गुणी रे, द्रोही मगटे जात. तदा. २
बीकण वायला बुद्धथलो रे, सेनापतिने प्रधान;
देशकाळ नहीं जाणता रे, मूरख ने नादान. तदा. ३
संप करतां न आवडे रे, पक्षनी ताणाताण;
राजाप्रजामां दुर्गुणो रे, हुल्लड ने तोफान. तदा. ४
राजाप्रजा ने नोकरो रे, करता पक्षापक्ष;
अन्याय जूल्म वधे घणा रे, महाजनवर्ग न दक्ष. तदा. ५
अरसपरस खाइ जवा रे, धरे विचाराचार;
एकबीजाना पक्षनी रे, करता अनीतिए व्हार. तदा. ६
आळ परस्पर दे घणां रे, करता मारामार;
फायदाओने तोडता रे, दुःख अशांति अपार. तदा. ७
हलका नीच तोफानीओ रे, थाता आगेवान;
संतसभ्य शाणाजनो रे, पामे बहुअपमान. तदा. ८
महाजनवर्गने अवगणे रे, सुलेहनीतिनो भंग;
फूट पडे लश्करविषे रे, भेद ने खेदना रंग. तदा, ९
ज्ञानी पंडित गृहस्थनी रे, यती घणी हलकाइ;
धर्मगुरुओ कुसंपीला रे, दुष्टोनो धीट्टाइ. तदा. १०
राज्यना सघळ अंगमां रे, कोगमां भेदाभेद;
चोरी झारी वधे घणी रे, मगटे पापथी खेद. तदा. ११
देशराज्यसंघकोग्मां रे, लक्षण पडतीनां एह,
बुद्धिसागरधर्मथी रे, संपथी उन्नति रेह.

समजशो लोको सत्य सदाय. तदा. १२



अमारो आतम भूप भलेरो.

आशावरी.

अवसर वेर वेर नहि आवे—ए राग.

अमारो आतम भूप भलेरो, राग ने द्वेषनो जेने न चहेरो;
लेतो आनंद ल्हेरो.................................अमारो०
अगुरु लघुपर्याय रहेलो, गुणपर्याय भरेलो:
दुनियादारीमां डाह्यो ने घेलो, चेतना साथ मळेलो. अमारो. १
मोटामोटापंडित थावथा, अलख न जाय कळेलो;
बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, खेले ज्ञानना खेलो. अमारो. २

अमारो अंतर आतमचेलो.

आशावरी.

अमारो अंतर आतमचेलो, आप हि ज्ञानी आप हि घेलो;
खेले नवनव खेलो.................................अमारो०
मनवाणीदेह सुधरेलो, कर्मनी संगे मेलो;
झीले आनंदरसना गेलो, गुरुसेवामां ठरेलो. अमारो० १
असंख्यनयदर्शनने भणेलो, निष्कामभाव भरेलो;
अंतरमां उपयोगे रहेलो, गुरुसेवामां पहेलो. अमारो० २
आपगुरुरूप परखामां वहेलो, मस्तुजीवनमय चहेरो:
बुद्धिसागर आतम मेळो, ज्योतिज्योत भळेलो. अमारो० ३

अलख अमे कोइना मार्या न मरीए.

आशावरी.

अलख अमे कोइना मार्या न मरीए, देह छे नाशी हम अविनाशी;
कोना डराव्या न डरीए..................................अलख०
नभ सहुमांही पण नहीं मरतुं, हणतां यदि फरीफरीए;
छेदाउं भेदाउं न जरीए, अग्निना बाळ्या न बळीए. अ० १
आयु खये तनु प्राण पडे तो, काळथी नहि थरथरीए;
आतमने काळ खाय न क्यारे, कोने नहीं करगरीए. अ० २
करी केशरियां निर्भय शूरा, वीर बनी संचरीए,
अंतरमां आतम उपयोगे, फक्कड थैने फरीए. अ० ३
आपोआप स्वरूप समरीए, फर्ज अदा निज करीए;
बुद्धिसागर आनंद वरीए, कर्मभर्म परिहरीए. अ० ४

अलख अमे मर्या न क्यारे मरशुं.

आशावरी.

अलख अमे मर्या न क्यारे मरशुं, अज अविनाशी अमरअजर हम;
ब्रह्मस्वरूप समरशुं..अलख०
देह प्राण पंचभूतमां भळशे, ठाम अमे निज ठरशुं;
सत्यने छंडी जूठुं न करशुं, मय चंचळता न धरशुं. अलख० १
पुद्गलनुं पुद्गलमां जाणी, वियोगे शोक न करशुं;
आतमधण सहु मिथ्या मानी, मोहनुं मोहने धरशुं. अलख० २
उपजे मरे सहु पुद्गलस्कंधो, साक्षी बनीने विचरशुं;
बुद्धिसागरब्रह्मसनातन, ज्ञानानन्दने वरशुं. अलख० ३

॥ अरिहंत आतम नजरे आया ॥

जिनदर्शन मोहनगारा—ए राग.

अरिहंत आतम नजरे आया, जाके मनवाणी नहीं काया रे. अरिहंत०
मनवाणीकायासें अगोचर, निरगई मोहकी छाया;
अस्तिनास्ति विकल्प है नहि है, अजरअशरीर गवाया रे. अरिहंत०॥ १
कर्ता भक्ता हर्ता अहर्ता, षट्कारकमयराया;
पूरणआनंद पूरणज्ञाने, परमब्रह्म सुहाया रे. अरिहंत०॥ २
ऐसा आतम सबका साक्षी, हुं तुं भेद विनाया;
बुद्धिसागर आपोआपहीं, परमेश्वर परखाया रे. अरिहंत०॥ ३

आतम! कर्मसें कुच्छ न डरना.

सोरठ.

कर्मसें कुच्छ न डरना, आतम!! कर्मसें कुच्छ न डरना;
कर्मका स्वभाव जाणतां नहि, निर्भय होकर फिरना. आतम.
आतमज्ञान प्रकाशे अन्तर, क्षणमें जिनसे सरजना;
कार्यो करतां निर्लेपभावे, कर्म न ले कुच्छ अपना. आतम० १
आतम उपयोगे सब करतां, किसकी भीति न धरना;
करना वो पिछे कबहु न टरना, अच्छा होकर मरना. आतम० २
भव चंवरका खेदकुं हरना, आनन्दवहके तरना;
बुद्धिसागरआनंदवरना, आपोआपकुं वरना. आतम० ३

प्रभुदर्शन घटमें पाया.

जिनदर्शन मोहनगारा, जिने कर्मकलंक पखारा रे—ए राग.

प्रभुदर्शन घटमें पाया, घट आनंदसे उभराया रे. प्रभु०
आपोआप प्रभु सबव्यापक, नाटक नहीं दाया;
पूर्णज्ञान ए पूर्णानन्दी, परब्रह्म परखाया रे. प्रभु० १

अलख अरूपी अज अविनाशी, अनंतशक्ति सुहाया;
सबका साक्षी चैतन्य चिद्घन, परापश्यंती गाया रे. प्रभु० २
चाह अचाह न त्याग ग्रहण नहि, आपमें आप समाया;
बुद्धिसागर शुद्धोपयोगे, आप प्रभु हो जाया रे. प्रभु० ३

आतम!!! पीजा अमीरसप्याली.

सोरठ.

आतम!!! पीजा अमीरसप्याली, जेनी घेनथी जग भूलातुं;
प्रगटे आनंदलाली.......................................आतम०
ज्ञाननी प्याली अनुभवफाकी, प्रेमपशालावाळी;
ध्याननी अग्नियकी ज उकाळी, संतयोगीजन प्यारी. आतम० १
अमीरसप्याली पीतां खुमारी, प्रगटे न उतरी उतारी;
जन्ममरणनां स्वप्न टळे सहु, प्रेमे पीवो नरनारी. आतम० २
आनंदशांतिनी घेन चढे बहु, निर्मळदिल अजवाळी;
बुद्धिसागरमस्तफकीरी, ब्रह्मखुदाइ निहाळी. आतम० ३

संतो!!! आतमरूप समरना.

आशावरी.

संतो! आतमरूप समरना, मायासें है जन्म रु मरणा;
निजउपयोगे तरना...................................संतो०
कालका काल महाकाल तुं, तेरा न जन्म रु मरणा;
निश्चयनयसें बंध न मुक्ति, अंतरदृष्टि धरना. संतो० १
आतमरूपका ज्ञान विना कछु, मिटत नहीं मोहभ्रमणा;
ज्ञान विना सबसाधन निष्फल, लाखचोराशीमें फिरना. संतो० २
आपोआपकुं जानो संतो, भवसागरकुं उतरना;
बुद्धिसागर अलख निरञ्जन, परमातमपद वरना. संतो० ३

आतम ! चारवरणरूप थावो.

आशावरी.

आतम!! चारवरणरूप थावो, सद्गुणने सत्कर्मथी वर्ण ज;
समजी शिवसुख पावो.... .... आतम०
चारे वर्णने स्वागीननोनी, सेवाथी शूद्र कहावो;
निष्कामभावे सेवा ने भक्ति, करी रहो शूद्रनो ल्हावो. आतम० १
आत्मप्रभुनुं शूद्र चरण छे, पूजाय पहेलुं ते भावो;
सेवक बन कोइ स्वामी बने नहीं, शूद्र थई दिल लावो. आतम० २
शूद्र बन्या पछी आत्मगुणोनो, सेवा ने व्यापार थावे;
मन इन्द्रियादि पशुपालनथी, वैश्यपणुं ज सुहावे. आतम० ३
दोषविकारोशत्रु सामा, धर्मयुद्ध करो फावे;
मोहने जीते सद्गुणरक्षी, क्षत्रिय आतम थावे. आतम० ४
क्षत्रियधर्मे अरिहंत पदवी, अंतर्नां प्रगटावो;
परिषह उपसर्ग स्थिर थावो, मोहने मारी हठावो. आतम० ५
रागद्वेष हण्याथी क्षत्रिय, वर्णपणे थै जावो;
ज्ञान ने ध्यान समाधियोगे, केवलज्ञान जगावो. आतम० ६
समरसभावे केवल प्रगटे, ब्राह्मण आप सुहावो;
बाह्यवर्णमां मुंझे ते मूरख, आतमवर्ण कमावो. आतम० ७
सत्त्वरजसने तमनी प्रकृति, कर्मथी न्यारा थावो;
त्यारे सिद्धबुद्धपरमातम, परमब्रह्मने पावो. आतम० ८
मनवचवाणी साधन तेथी, आतमवर्ग जमावो;
बाह्यजगत्मां वर्णना मोहे, पशुवत्ने दुःखदावो. आतम० ९
आतमना उपयोगे वर्णो, भावना निश्चय भावो;
भावनाथी आचार प्रगटतां, सम्यक्त्व द्विजत्व पावो. आतम० १०
आतममां ज्ञानचारित्रवर्णनो, करवो आविर्भावो;
बुद्धिसागर आनंदरसनुं, पान करी मस्त थावो. आतम० ११

ब्रह्मसागरमां समाणी,

सहियां मुने भय लाग्यो एक दिनको. ए राग.

ब्रह्मसागरमां समाणी, नदीओ ब्रह्मसागरमां समाणी;
सागरमां भळीदर्शननदीओ, बनी सागरनुं पाणी. नदीओ०
ब्रह्म, सत्ताए एकात्मा छे, वीरप्रभुनी वाणी;
बुद्धि ध्यानसमाधि लहीने, आतममांहि विलाणी. नदीओ० १
पंडितो वादंवादा करीने, करता ताणाताणी;
ब्रह्मसागरमां उंडा उतरतां, भूल करेली जणाणी. न० २
एकेकदृष्टिए दर्शन प्रगटयां, हठनिजपक्षनो ताणी;
सर्वदृष्टिसापेक्षाए घट, जाणंतां गुणखाणी. न० ३
सर्वे मत पंथ दर्शनमांही, समताए मुक्ति प्रमाणी;
दुर्गुण टाळी सद्गुण लेतां, पामो प्रभुनो निशानी. न० ४
मतपंथ दर्शन निर्मोही थै, ईश्वर लेजो पिछानी;
बुद्धिसागरब्रह्मसागरमां, ब्रह्मभावे भळो ज्ञानी. न० ५

प्रभो ! तुज सागर समनयवाणी.

सहियां मुने भयलाग्यो एक दिनको. ए राग.

प्रभो ! तुज सागरसम नयवाणी, सर्वदृष्टि ज्यां समाणी. प्रभो !!!
जेटलावचन पथो छे तेटला, नयदर्शन रह्यो जाणी;
सापेक्षे नयदृष्टि अनेकान्त,–श्रुतसागरमां समाणी. प्रभो० १
तरंगसमा मत दर्शन पन्थो, उपजे विणसे त्यो जाणी;
असंख्यनयनी दृष्टिए ध्रुवता, ब्रह्मसागरनी मानी. प्रभो० २
केवलज्ञानी महावीर प्यारी, उपदेशशैली पिछानी;
बुद्धिसागरब्रह्मसागरमां, स्नानकरी थयो ज्ञानी. प्रभो० ३

खरो ए प्रभु पाम्यानी निशानी,

सोरठ.

खरी ए प्रभु पाम्यानी निशानी, सात्विकज्ञानने सात्विकभक्ति;
आनंदजोय कमाणी..खरी.
देहाध्यास रहे नहि मनमां, होय न ताणाताणी;
आंखोमां अमृत दिल्मां दया बहु, वृत्ति नहीं अभिमानी. खरी० १
रागद्वेषनी वृत्ति हणाणी, सत्यने मीठीवाणी;
न्याय नीतिवर्त्तन गुणखाणी, समता दिल प्रगटाणी. खरी० २
अनासक्तने आतमज्ञानी, वर्ते साध्य पिछाणी;
बुद्धिसागर जोवंतां सुख, कर्मयोगी मस्तानी. खरी० ३

आतम!!! कर्मयोगी तव मानुं.

आशावरी.

कर्मयोगी तव मानुं, आतम ! कर्मयोगी तव मानुं. आतम.
लाखोकामिनीओपोवचे, धीर मेरुसमजाणुं;
मानापमानमां लाभालाभे, हर्ष न शोक पिछानुं. आतम० १
जीवनमरणमां हर्ष न चिन्ता, योगीपणुं नहि छानुं;
कर्तव्यो करतां रहेवानुं, दिल सद्गुणनुं थाणुं. आतम० २
सार्शानि:संगभावे महानुं, जीवन वहे मस्तानुं;
अहंवृत्तिनुं बीज दहाणुं, छानो रहे नहीं भानु. आतम० ३
चिदानंदमय चेतन माणुं, अनुभवमांही जणाणु;
बुद्धिसागर आतमभानु, न्हाणुं वापु महानुं. आतम० ४

चाखो ज्ञानानन्दपान.

चाखो ज्ञानानन्दपान, अमीरसी चाखो ज्ञानानन्दपान.
आतमाऽसंख्यप्रदेशे उपज्युं, अनुभववेलीसुतान;
दयामेघना जलथी सिंचाणुं, संयममंडपतान. अमी० १
चारित्रकाथो समकितचूनो, मेळवतां वधे वान;
सत्यसोपारी एकताएलची, बीडां बहुगुणवान. अमी० २
संतजनोने पाननां बीडां, आपी करो सन्मान;
बुद्धिसागरपरमानन्दमां, बनी गयो गुल्तान. अमी० ३

आतम !!! अनुभवभांगकुं पीना.

आशावरी.

आतम ! ! ! अनुभवभांगकुं पीना, ब्रह्मजीवनसें जीना. आतम०
ध्यानशिलापर गुणमशाला, वाटके करना झीना;
समताजलसें सम्यग् धोना, उपयोगे हो लीना. आतम० १
दिलप्यालामें अनुभवभांगका, आनन्दरसकुं पीना;
बुद्धिसागर आत्म उजागर, प्रगटे परम प्रभु चिह्ना. आतम० २

हमेरा घरकुं हमने पिछाना.

आशावरी.

हमेरा घरकुं हमने पिछाना, आदि न अंत न देहथी न्यारा;
ज्ञानानन्द वखाना............ ....हमेरा.
चलता न जरता न खरता न पडता, असंख्यप्रदेशी माना;
काला न पीला न राता न श्वेता, लंबा न चौडा जाना. हमेरा० १

उंचा न नीचा न भारे न हलका, स्पर्श न शब्द न ठाना;
बावन बहार् परासें न्यारा, तुर्यातीत ठिकाना. हमेरा० २
निद्रा न स्वप्न न जाग्रत् जूदा, निर्लेप नभ उपमाना;
घट घट व्यापक ज्ञानी सो समजे, पीना नहीं जिहां खाना. हमेरा० ३
पिंड न खंड न पूर्ण अखंडित, अज अविनाशी सुहाना;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, हमघर हममें समाना. हमेरा. ४

हमने ऐसी हवा खूब खाई.

आशावरी.

हमने ऐसी हवा खूब खाइ, आधि व्याधि उपाधि टळी सब;
आनंदघन छवाइ.... ....हमने०
वायुसें न्यारी अपरंपारी, तिनभुवन नाहि माइ;
सबमें है वह सबसें न्यारी, भ्रांति मिटे मगटाइ. हमने० १
सत्यचिदानंदरससें रसाइ, ज्योतिज्योतिरूप छाही:
जन्ममरण नहि राग न द्वेषा, उलटी अखियां सुहाइ. हमने० २
मन बुद्धि चित्त नहि अभिमाना, घटघटमेंहि समाइ;
बुद्धिसागर ब्रह्म हवा स्वच्छ, पाइ न गातां गवाइ. हमने० ३

हमेरा आतम तीर्थ अपारा.

आशावरी.

हमेरा आतम तीर्थ अपारा, दर्शनज्ञान चरणमय आतम;
सबतीरथ आधारा.... ....हमेरा०
आतम तीर्थमें नाहीं उपाधि, है नहीं मोहमचारा;
आतमतीर्थसें सब तीरथकी, उत्पत्ति निर्धारा. हमेरा० १

ज्ञानानन्द प्रकटता जहां है, वह तीरथ है प्यारा;
ज्ञानसमाधिसें आत्मतीर्थका, ज्ञानानन्द उजियारा. हमेरा० २
आतममें सब तीर्थो समाये, जानत नाहि गमारा;
बुद्धिसागर आतमतीरथ, आपोआप विचारा. हमेरा० ३

हमेरो आतमप्रभु है प्यारो.

हमेरो आतमप्रभु है प्यारो, घटघटव्यापक जगमें विलासी;
सबमें है सब न्यारो.... ....हमेरो०
आत्मवण दिल क्षण न सुहावत, लागत जग सब खारो;
जल विन कमल न मत्स्य न जीवत, जगजीवन आधारो. ह० १
हिंदु मुसल्मीन पारसी ख्रीस्ति, बौद्ध रु जैनमें धारो;
सर्व प्राणीमें है प्रभुआतम, उच्च न नीच नठारो. हमेरो० २
राम रहिमान अरिहंत हरिहर, नाम अनेक प्रकारो;
बुद्धिसागर ब्रह्ममहावीर, सच्चिदानंद अपारो. हमेरो० ३

आतम !!! मोहसें नहि भरमाना.

सोरठ.

आतम ! मोहसें नहि भरमाना, मोह महाशयतानअरि है;
उसकुं न दिलमें लाना............................आतम०
काम क्रोध मान माया लोभ रु, निन्दा मोह है जाना;
सर्वशुभाशुभ कल्पना मोह है, उसकुं न दिलमें लाना. आतम० १
जबतक दिलमें मोह प्रगटता, तबतक ज्ञान क्या ध्याना;
यावत् रागरु द्वेष है दिलमें, तावत् तुम दुःखखाना. आतम० २

मोह पराधीन है तुम मानव, मानव तेरा न दाना;
मोहगुलामीपनामें जीवो, करते है मोहखाना. मानव ३
मानव ! छोड दे मोहगुलामी, ज्ञानमें हो मरदाना;
बुद्धिसागर मानव संगे, हो ना महादस्ताना. मानव० ४

हमने ऐसी समाधि लगाइ.

आशावरी.

हमने ऐसी समाधि लगाइ, ध्यान ह ध्याताध्येयको भेद न;
मन बुद्धि बिसराइ. हमने०
नाम ह रूपको मोह नहि कछु, वासना सबहि बिलाइ;
पिंड ब्रह्मांडको आश्रय नहि कुछ, उलटि अलखियां सुहाइ. हमने० १
राग न द्वेष न हर्ष न चिंता, अनंतज्योति जगाइ;
अनंतआनंद उलट्यो हृदयमां, निरगइ मोहलडाइ; हमने० २
बंध न मोक्ष न जन्ममरण नहि, समता ममता न कांइ;
बुद्धिसागर ब्रह्ममहावीर, परमब्रह्मता पाइ. हमने० ३

खेलुं छुं हुं तो बाजीगरनी बाजी.

खेलुं छुं हुं तो बाजीगरनी बाजी, थाउं न राजी नराजी. खेलुं०
आतमनटकी माया विलक्षण, जाणे शुं ? ब्राह्मण काजी;
आतमअर्पे प्रकृति माया, तावे थै रही नाची. खेलुं० १
प्रकृति रही जीवोपर गाजी, ब्रह्मदासी थनी छाजी;
निःसंग साक्षी आतम ईश्वर, विश्वमां रहियो गाजी. खेलुं० २
खेल हमारा अगम अपारा, जाणे नहीं जडवानी;
बुद्धिसागर आतमखेली, खेलनो थयो राजी. खेलुं० ३

हमने ध्यानपतंग उडाया.

आशावरी

हमने ध्यानपतंग उडाया, उलटोअखियांसे देखत हम;
सुरतातान लगाया......................हमने०
अनुभवज्ञानकी दोरी लंबी, उसका पार न पाया;
आतमगगनमें उंचा उडता, आनंदल्हेरे सुहाया. हमने० १
श्रुतज्ञानका दोरक साथे, बुद्धिप्रकाश वढाया;
बुद्धिसागर केवलज्ञानकी, ज्योतिमें ज्योति समाया. हमने० २

आतम!!! तुम सबसें हो न्यारा.

आशावरी.

आतम तुम सबसें हो न्यारा, नामरूपसे भिन्न निरञ्जन;
चिदानंदआधारा..............................आतम०
नामरूपमें आतम तुम नहि, यशअपयशसें न्यारा;
दुनिया देखत सो नाहि तुम हो, आप स्मरी लें प्यारा. आतम० १
पुण्य पाप फल सुख अरु दुःखसें, मानामानसें न्यारा;
उच नहि अरु नीच नहीं तुम, मोहका सब है पसारा. आतम० २
अज अविनाशी अलख अरूपी, ज्ञानसें है उजियारा;
बुद्धिसागर परब्रह्म तुम, मिटगया सब अंधियारा. आतम० ३

हमने अनहदवाद्य वजाया.

सोरठ.

हमने अनहदवाद्य वजाया, तनमनना भान ज विसराना;
पार न ध्वनिका पाया.... ....हमने०
सर्ववृत्तियां तन्मय होकर, आप हि आप सुनाया;
आप हि गाया आप हि पाया, अनहद आनंद छाया. हमने० १

पद चकोकुं भेद गगनगढ, नितनिशान चढाया;
ध्याता ध्येय ह ध्यान कछु नहि, कथनीमें नहि आया. हम
अनहदध्वनिसें अग्रे जाकर, परापारकुं पाया;
बुद्धिसागर ऐसे सो माने, गानेसें न जनाया. हम

आतम!!! निजनो सेवा सारी.

आशावरी राग

आतम!! निजनी सेवा सारी, निजभक्ति गुणकारी. आतम०
आतमशुद्धिअर्थे द्रव्यने, भावथी सेवा सारी;
देहदेवळमां आतमदेव छे, भक्ति करो भयहारी. आतम०
मनवचतनुनुं रक्षण पुष्टि, मन नसंयम धारी;
आतमने परमातम करवा, समजो अपेक्षा विचारी. आतम० २
गुण प्रगटाववा दुर्गुण हरवा, निजआतमहितकारी;
उपकार सत्कर्म भक्तिने सेवा, आतमशुद्धिकारी. आतम० ३
आतमनी करे आतम सेवा. भक्ति अपेक्षा धारी;
आतमभक्तिए आतम प्रगटे, परमातम सुखकारी. आतम० ४
अष्टांगयोग ते आतमभक्ति, चरणसेवा जयकारी;
खानपानादि सघळी प्रवृत्ति, सेवारूप छे सारी. आतम. ५
सम्यग्ज्ञानीनी सर्वप्रवृत्ति,-वृत्ति छे सेवा प्यारी;
बुद्धिसागरआतमप्रभुनी, सेवा असंख्यप्रकारी. आतम० ६

हमारा भजनोकुं नहिं गाना.

आशावरी.

हमारा भजनोकुं नहि गाना, हम है पागल बडा दिवाना;
तुमभी होगा दिवाना.......................................हमारा०
कथापारद खाना जैसा, जैसा सोमल खाना;
ऐसे ज्ञानविना भजनोकुं, गानेसें पस्ताना. हमारा० १

गात गवैया भजनोकुं बहुत, ऐसा न होत है गाना;
वही भजनहै अनहदध्वनिका, मन होवत मस्ताना. हमारा० २
ज्ञान ग्रहणकर पदगानेसें, शिवपुर झटिति जाना;
बुद्धिसागर पक्का जो है, उसका अच्छा गाना. हमारा० ३

हमकुं जाने सो हे ज्ञानी.

आशावरी.

हमकुं जाने सो है ज्ञानी, जाने क्या हमकुं अज्ञानी;
हम आतम गुणखानि..... ....हमकुं.
दुनिया शोधे सो अज्ञानी, समजे क्या दुनिया दिवानी;
हमकुं जाने सो हमकुं पावे, लेना हमकुं पिछानी. हमकुं० १
हम नहि तनुमनधनजडवस्तु, अग्नि वायु न नभ पानि;
बुद्धिसागरशुद्धातमकी, अंतरध्वनि यह जानी. हमकुं० २

अब हम अवधूत होकर फिरते.

आशावरी.

अब हम अवधूत होकर फिरते, आतम अवधूत मस्तदशामें;
नाहीं जीते नहीं मरते...................................अब०
दुनिया दिवानी च्हाये सो बोलो. हम नहीं कोउसें डरते;
आतममें हम मग्न भये है, आतम सहेलकुं करते. अब० १
सबसें न्यारी गति हमारी, उलटी नदी उतरते;
वर्तन पागल जैसा हमारा, नकल करे सो मरते; अब० २
कबहु हमारी संग न करना, करते सो न उगरते;
बुद्धिसागर आनंदघन हम, आतम आप समरते. अब० ३

मनुष्यो!!! करशो परउपकारो.

आशावरी.

मनुष्यो!!! करशो परउपकारो, तन धन ऐळे न हारो. मनुष्यो० ॥
अवसर मळियो फेर न आवे, मळे न मनु जन्मारो;
गयो अवसर पाछो नहीं आवे, करी ल्यो जन्म सुधारो. मनुष्यो० १
दुर्गुण दुर्व्यसनोने निवारो, संतसमागम धारो:
दोष उवेखीं सद्गुण देखो, दुःखीनां दुःख टाळो. मनुष्यो० २
मोह मपतानतुं कयुं न करशो, करशो धर्मविचारो:
उपकारनो प्रतिबदलो न इच्छो, काम प्रगटतो मारो. मनुष्यो० ३
काया माया अहंता न करशो, धरशो धर्माचारो;
दान दया दम सम आचरशो, निर्दोषजीवन गाळो. मनुष्यो० ४
परपीडायां पाप छे मानो, निजपरिणतिने सुधारो;
बुद्धिसागरप्रभुभक्तिथी, निजआतमने उद्धारो. मनुष्यो० ५

हमारा वर्तन सबही तमासा.

आशावरी.

हमारा वर्तन सबही तमासा, कथनी रहेणी सबी न खुशी.
जळबिचमें ज्युं बतासा...... ....हमारा०
हम सर्वज्ञ नहीं है संतो!!! संतोके हम दासा;
लिखे पढे हम बालक खेला, भाखुं तोतडी भाषा. हमारा० १
हमकुं हम न पिछान शकेंहे, स्वमसरीखा विलासा;
दुनिया हमपर कबहु न रखना, गुरुपनका विश्वासा. हमारा० २
गति हमारी प्रभु जानत है, हम है प्रभुका प्यासा;
बुद्धिसागरमकप्रभुका, देखा दिव्य तमासा. हमारा० ३

आतम!! सद्‌गुणसें सुख पाता.

आशावरी.

आतम सद्गुणसें सुख पाता, दुर्गुणसें दुःख पाता. आतम.
सद्‌गुणसें किमत हे जनकी, होता जगमख्याता;
राज्य रु लक्ष्मीकी किमत नहि कछु, दुर्गुणी खत्ता खाता. आतम० १
दुर्गुणी व्यसनी चक्रीकुं कोउ, अंतरसें नहि चहाता;
इसलिये दान दया दम संयम, ज्ञान विवेक महत्ता. आतम० २
सद्गुण वण तन धन यौवनकी, किमत कोडी न ज्ञाता;
शेठ राजा हुवे तोभी कुच्छ न, प्रगटन दिलमें अज्ञाता. आतम० ३
न्याय नीति भक्ति उपकार न, क्या दिलमें हरखाता;
मोहमें माता जडमें राता, एकदिन नर्कमे जाता. आतम० ४
यत्र तत्र सद्गुण पूजाता, सद्‌गुणी नहि पस्ताता;
बुद्धिसागरसंतकी संगसें, गुणगण दिल प्रकटाता. आतम० ५

प्रभु म्हने कोटि उपाये उगारो.

आशावरी.

प्रभु म्हने कोटि उपाये उगारो, लखुं उपदेशुं भूल हजारो;
अवगुण दोष अपारो.............................प्रभु.
बालक उन्मत्त जेवो बनीने, करुं हुं जे जे लवारो;
सत्य जूठ सहु जाणे प्रभो तुं, शुद्ध करीने उद्धारो. प्रभु० १
एक पलकमां तें उद्धार्या, मुज सरीखा हजारो;
मुज दोषो सामुं नहीं जोशो, फक्त दया करी तारो, प्रभु० २

गांडो घेलो पण भक्त हुं तारो, तुं छे माणर्थी प्यारो;
अलख अकळ तुजने न लखुं हुं, तेमां नहीं दोष मारो. प्रभु० ३
तुज स्मरतां मन करतां, प्रगटे दोष विकारो;
सत्त्वाथी नबळो हारे त्यां, करशो न्यायविचारो. प्रभु० ४
अज्ञानी हुं भूलुं तेमां, भूलनो हेतु सुधारो;
तुज शरणे आव्या पछी मारो, तुज शिर छे सहु भारो. प्रभु० ५
तारो हूवे ने ज्ञानी भूले, हुं अज्ञान छुं बाळो;
तारो उगारो तमारो आधारो, दोष हवे शुं मारो. प्रभु० ६
जेवी बुद्धि तेवी रीते, थयो हुं महावीर तारो;
बुद्धिसागर प्यारे आवो, अरजी उरमां स्वीकारो. प्रभु० ७

जगत्में हम है सबसें नठारा.

आशावरी.

जगत्में हम हैं सबसें नठारा, सबजीवोंकी निंदा जबतक;
तबतक हमहीं नठारा...... . ... जगत्में०
जबतक राग रु रोष प्रगटत है, तब तक दोष अपारा;
गुणीपनाका क्या अहंकारा, जबतक दिलमें विकारा. जगत्में० १
निंदोतो सब हमकुं निंदो, धो हमकुं धिक्कारा;
हमहीं हमकुं निंदत गर्हत, पश्चाताप अपारा. जगत्में० २
ज्ञानपनाका गर्व क्या करना, हम हैं मूर्ख गवारा;
बकवादी हम करत लबारा, हमपर मोहसवारा. जगत्में० ३
परब्रह्ममहावीरप्रभुका, शरण किया सुखकारा;
बुद्धिसागरसंतजनोंकी, संगत्से है उद्धारा. जगत्में० ४

जगतमें सबसें हम है सारा.

आशावरी.

जगतुमें सबसें हम है सारा, सर्वद्रव्य निजधर्मसें सारा;
कोउ न वर्ते नठारा................................जगतुमें ॥
सापेक्षासें सारा नठारा, मन बुद्धिसें विचारा;
जड चेतन निजभावसें सारा, ए सब है व्यवहारा. जगतुमें० १
चिदानंदमय ब्रह्म प्रभु है, आतम हम निर्धारा:
जड जग करत है सेवा हमारी, निश्चयसें अविकारा. जगतुमें० २
निश्चयनयसें कर्म न हम है, हम है आतम प्यारा;
अनंत गुण पर्यव एकरूपी, राग रु रोपसें न्यारा. जगतुमें० ३
देना नहि आतम धिकारा, ज्ञानानंद आधारा;
बुद्धिसागर आतम हम है, निश्चय उपयोग धारा. जगतुमें० ४

हमारा मनका नहि है ठिकाना.

हमारा मनका नहि है ठिकाना, गति हमारी हमहि जाने;
हमकुं विसरजाना..हमारा;
गुरुगमविन मत्कृतभजनोपर, आकीनकुं नहि छाना:
जिनवर गणधर ऋषि मुनिवरकी, वाणी करणी प्रमाना. हमारा०१
बुद्धि हमारी नयबहुरंगी, प्रभुपरभये है दिवाना;
हम है हमारे तानमें रसिये, हमकुं न छेडो श्याना. हमारा० २
हमकुं कबहु नहि अनुसरना, करना महावीरध्याना;
बुद्धिसागर अनंत ब्रह्महै, आपोआप मकाना. हमारा० ३

दयासम धर्म न को जग सारो.

राग आशावरी. सोरठरागेणाऽपिगीयते.

दयासम धर्म न को जग सारो, दयाविना प्रभु दर्शन नहीं छे;
हिंसाबुद्धिवारो.... ....दया०
दयाविषे सत्य तप जप भक्ति, समाइ जाय विचारो;
दयासमो कोइ धर्म न मोटो, जीवदया चित्त धारो. दया० १
रहेमविना रहिमान मळे नहीं, दया प्रभुरूप धारो;
द्रव्यने भाव दयाथी अळगा, तेना अधर्मांचारो. दया० २
दयाविनानुं सत्य छे जूठुं, न्याय ते मोह विकारो;
अहिंसानो रुचिप्रवृत्ति, धरतां धर्माधारो.
सत्य दयावंत जगमां सघळा, निर्दय नवळा धारो; दया० ३
हिंसक लोकोथी प्रभु दूरे, मानवभव नहीं हारो. दया० ४
प्रभुमहावीरे दयाधर्मथी, कीधो विश्वोद्धारो:
बुद्धिसागरदयाधर्मथी, लोको!!! आतम तारो. दया० ५

क्षमापना.

आपस्वभावमां रे अवधूत सदा मगनमें रहेना. ए राग.

सघळा जीवने रे, आज खमावुं साचा भावे,
क्रोध मान माया ने लोभे, जीवो हण्या हणाव्या;
ताप्या परिताप्या जे में, आजे सर्वे खमाव्या. सघळा० १
जाने काने जीवोनुं, बूरुं कीधुं भावे;
लखचोराशी योनि भमतां, खमावुं समतादावे. सघळा० २
मनमां अन्यजीवोना, घातक कर्या विचारो;
विचारोने गर्हुं छुं, त्यागुं हिंसाचारो. सघळा० ३

एकेन्द्री आदिथी मांडी, पंचेन्द्री सहुजीवो;
करी करावी हिंसा निंदु, गर्हु पामी दीवो. सघळा० ४
हिंसा जूठुं चोरी शारी, कुकर्म निंदु जाणी;
परिग्रहयोगे हिंसा कीधी, खमावुं धर्मने आणी. सघळा० ५
युद्धादिकहिंसककार्योथी, मार्या जीव खमावुं;
धर्मभेदना द्वेषे मार्या, पश्चात्तापे भावुं. सघळा० ६
गृहावासमां सर्वारंभे, मारेलाने खमावुं;
त्यागावस्थामां परमादे, संताप्याने शमावुं. सघळा० ७
मिथ्याविरतिकषाययोगनां, निंदु गर्हु पापो;
आस्रवकर्मो निंदु गर्हु, माफी जीवो आपो. सघळा० ८
लडाइ टंटा द्वेषने निंदा,-करी जीव संताप्या;
रागद्वेषे कामे मुंझी, जीवो जे जे काप्या. सघळा० ९
पशुपंखी जलचर संताप्यां, कूडां दोषां आळ्यो;
हांसी चाडीचूगली कीधी, दीधी द्वेषे गाळो. सघळा० १०
दुःखियाना न्याये अन्याये, हिंस्या जेजे प्राणी;
अधर्ममांहि धर्मने मानी, अशुद्धपरिणति आणी. सघळा० ११
अधर्म कीधा सघळा निंदु, कीधा दुष्टविचारो;
इर्ष्याथी पापो जे कीधां, निंदु पापाचारो. सघळा० १२
अनंतभवनां पापो निंदु, वैरनी वृत्ति त्यागुं;
रागरूपनी वृत्ति त्यागुं, सर्वने पाये लागुं. सघळा० १३
निमित्त थैने अन्यजीवोने, कर्यों जे वंचाव्यां;
मनवाणी कायाथी कंइ पण, मनडांने दुहाव्यां. सघळा० १४
मैथुनआदिकर्म जे कीधां, खेती आदि कर्मो;
तेथी जीवो जेह विणास्या, उपदेश्या जे भर्मो. सघळा० १५
मरणे आव्या जीवो मार्या, साधु हण्या हणाव्या;
देवगुरुने धर्मनी निंदा, कीधी जीव सताव्या. सघळा० १६

जीवोने शत्रुओ मानी, तेओने ज मराव्या;
मायाने वळी अनुमोद्या जे, आजे तेह खमाव्या. सघळा० १७
आगन्यारी कोइ जीवो उपर, राखी वैरबुद्धि;
निंदु गर्हु सघळुं भावे, करुं आतमनी शुद्धि. सघळा० १८
देवोने देवीओ निंद्यां, निंदुं गर्हु दोषो;
गुरु उपर प्रगटेला निंदुं, गर्हु सघळा रोषो. सघळा० १९
जूठी साक्षी पूरी निंदु, धरुं न मनआसक्ति;
देवगुरुने धर्मसंतनी, करी जे जे कनवत्नी. सघळा० २०
मित्र गुरु स्वद्रोह कर्या जे, गुण उपर नरकारो;
धर्मशास्त्रने जूठां मान्यां, निंदु मिथ्याचारो. सघळा० २१
अरसपरस सहु जीव लडाव्या, धर्मे हिंसा कीधी;
पराइ ऋद्धि ओळवी लीधी, हिंसकरीति लीधी. सघळा० २२
वीतराग मुनिवरने संयमी, साक्षीए ज खमावुं;
सर्वजीवो छे आत्मसरखा, निश्चय मनमां लावुं. सघळा० २३
अन्यजीवोना बहु अपराधो, कीधा जे आभवमां;
याद लावी पण खमावुं, रहुं नहि भवदवमां सघळा० २४
अन्यजीवोना दोषो देखी, जगमां हलका पाड्या;
आळो दीधां अनुमानेने, शुभपरिणाम नसाडया. सघळा० २५
वैरवृत्ति प्रविवदलो लेवा, कीधा कावादावा,
अन्योनी अपकीर्ति करवा, कीधा जे मननावा. सघळा० २६
नातजात ने देशकोममां, संरजरमां कीधां;
नारद जेवां कामो जे जे, ते ते खमावी लीधां. सघळा० २७
साधुसाधुने ज लडाव्या, धर्मीओने भडकाव्या;
सरलमनोने बहु सतार्या; क्रोधे खूब चडाव्या. सघळा० २८
रहस्य छिद्रो मर्म प्रकाश्यां, विश्वासने विणास्या;
अन्यधर्मी दुःखी बहु पाडे, एवा मार्ग प्रकाश्या. सघळा० २९

मनवाणीकायाथी दुष्कृत, कीधां जे जे कराव्यां;
अनुमोद्यां ते निंदु गर्हु, याद जे आव्यां नाव्यां. सघळा० ३०
पृथ्वी पाणी वायु अग्नि, वनस्पति त्रस पाणी;
भवोभव आ भव सर्वे खमावुं, पश्चात्तापने आणी. सघळा० ३१
हिंसाना उपदेशो आप्या, अने अपाव्या संज्ञ्या;
लख्या लखाव्या हिंसक ग्रन्थो, करी खमावुं हिंसा. सघळा० ३२
रात्रीभोजन कर्मादानने, भोजनपाणीयोगे;
भोग अने उपभोगे जीवो, हणिया यंत्रप्रयोगे. सघळा० ३३
स्वार्थदंडने अनर्थदंडे, हणिया जीव हणाव्या;
खमुं खमावुं मित्रभावथी, संकटमां सपडाव्या. सघळा० ३४
शिष्यो भक्तो गुरुबंधुओ, दुष्टजनोने खमावुं;
रागने रोष करु नहि कोथी, वीरप्रभु दिल ध्यावुं. सघळा० ३५
संघ चतुर्विध वर्ण चतुर्विध, सर्वजातना त्यागी;
खमुं खमावुं हस्त जोडीने, देजो सर्वे माफी. सघळा० ३६
परमेश्वर दे मुजने माफी, रहुं नहीं अपराधी;
बनुं सदा हुं निरपराधी, करुं न आधि उपाधि. सघळा० ३७
प्रभुमहावीरवचनामृतथी, जागी उठयो जाणी;
क्षमापना छत्रीशी रची शुभ, निज आत्मार्थप्रमाणी. सघळा० ३८
सर्वे जीवो खमुं खमावुं, वैर न कोइथी रहियुं;
सर्वे जीवो मित्र सरीखा, क्षमापना दिल वहियुं. सघळा० ३९
मेसाणामां करी चतुर्मास, क्षमापना शुभ कीधी;
क्षमापना जे करशे जीवो, तेनो थाशे सिद्धि. सघळा० ४०
वैरविरोध रहित जग थाओ, शांतिमंगळ वरशो;
बुद्धिसागर आनंद पामी, सिद्धबुद्ध थै ठरशो. सघळा० ४१

साधुभाइ!!। मनवशकरणा न सहेला.

सोरठ.

साधुभाइ मनवश करना न सहेला, ज्ञानी तपसी गए बहुत लपसी;
मनमारण मुश्केला...साधु०
हरिहरब्रह्माभ्यास न जीते, सबमें है सबसें अकेला;
अनेकरूपसें मनके बश जग, खेले अगणित खेला. साधु० १
कबहुक दीनने कबहु मर्द है, कबहु दास बहकेला;
कबहु आतमवश होइ वर्ते, छटकी करत बहुफेला. साधु० २
मन ओर आतम भिन्न हुवे तब, मिलता है मुक्तिमहेला;
बुद्धिसागर आतमजीतसें, मन नाहि दास रु घहेला. साधु० ३

आतम !!! जग सब जूठो बाजी. ॥

राग आशावरी.

आतम ! जग सब जूठी बाजी, होवत कहा वहां राजी. आतम०
मन बाजीगरकी सब बाजी, होना क्या राजी नराजी;
पढकर भूले पंडित काजी, कोउकुं कबहु न छाजी. आतम० १
मोहके बश क्या होवत पाजी, रहे न चक्री गाजी;
बुद्धिसागरप्रभु अपनाजी, दूजा सब स्वप्नाजी. आतम० २

आतम ! आपकुं आप जगाना.

सोरठ.

आतम ! आपकुं आना, मोह ममाइ शयतान भगाना;
आपमें मनकुं लगाना...आतम०

केवलज्ञानस्वरूपी सची, जागृति है तुज ठ्यांना;
तुर्यावस्था जागृति वह तुज, अनंतज्योतिका स्थाना. आतम० १
जाग्रत होकर उठो चेतन ! तुम हो जगमें प्रधाना;
बहुत गई अब अल्प रही है, करलो अमृतपाना. आतम० २
जाग्रत् होतें नहीं अंधियारा, ज्ञाननिशान चढाना;
गगनके गढमें अनहदधूनका, वाद्यकुं वेगे बजाना. आतम० ३
अनुभव पाकर गुरुगमज्ञाने, आपोआपकुं गाना;
बुद्धिसागर आतमआनंद–रसमें है मस्ताना. आतम० ४

चिदानंदरूप संभारो रे.

निशानी कहा बताउंरे. राग गोडी. ए राग.

चिदानंदरूप संभारो रे, करी वश मनवचकाय. चिदानंद०
एकेक इन्द्रिय वश थतां रे, प्रगटे दुःख अनंत;
पांचे इन्द्रिय वश थतां रे, आवे नहीं भव अंत. चिदानंद० १
शुभाशुभमनपरिणति रे, रोके सुख अनंत;
सर्वेच्छाओ रोधतां रे, आत्मधर्म प्रगटंत. चिदानंद० २
क्रोध मान माया अने रे, लोभ प्रगटतो वार;
कामविषयना स्वार्थने रे, वारे भवोदधिपार. चिदानंद० ३
हिंसा जूठ चोरी अने रे, मैथुनवृत्ति निवार;
अनंतसुखसागरप्रभु रे, प्रगटे शक्ति अपार. चिदानंद० ४
आतम आपस्वरूपमां रे, रहो उपयोगे नित्य;
बुद्धिसागरपूर्णता रे, प्रगटे सत्य पवित्र. चिदानंद० ५

आनंदरस अमृत चाखो रे.

राग गोडी. निशानी कहा बताउं रे. ए राग.

आनंदरस अमृत चाखो रे, पुद्गलरस करो दूर. आनंद०
आतमरस पाम्या पछी रे, पुद्गलरस न चहाय;
आतमरसअनुभव थतां रे, पुद्गलरस टळी जाय. आनंद० १
कोटि उपायो केळवे रे, टळे न जडरसराग;
आतमरसने स्वादतां रे, सहेजे जडरसत्याग. आनंद० २
आत्मज्ञानथी प्रगटतो रे, आतमरस भरपूर;
क्षणिक जडरस पाळ्के रे, दुःख विपत्ति हजूर. आनंद० ३
देहइन्द्रिय मन शांतथी रे, सुख न शांति लगार;
आतमरस पाम्या पछी रे, रहे न जडरस प्यार. आनंद० ४
आतमरस छे आत्ममां रे, आतमनी नहीं बहार;
बुद्धिसागर आत्ममां रे, आनंद अपरंपार. आनंद० ५

प्रभुका धर्म सो धर्म हमारा.

राग कानडो.

प्रभुका धर्म सो धर्म हमारा, माया धर्म सो धर्म है न्यारा;
प्रभुका वर्ण सो वर्ण हमारा, प्रभुका रूप सो रूप हमारा. १
प्रभु हमारा दिलमें समाया, प्रभुके रूपमें हमभी समाया;
प्रभु सो हम है हम सो प्रभु है, सत्तासें एक विभु है. २
प्रभुकी जाति वह हम जाति, देह जाति है मिथ्याभ्रान्ति;
प्रभु है अरूपी हम है अरूपी, सापेक्षाको रूपारूपी. ३
प्रभु है जैसा हम है वैसा, प्रभुका देश हमका भी देश;
बुद्धिसागरप्रभुसंदेशा, सुनके दिलमें रहा न अंदेशा. ४

कंचनकामिनीमोहकुं वारो.

फान्हरो.

कंचनकामिनीमोहकुं वारो, शुद्धातमकुं दिलमां धारो;
बाहिरभोगकी इच्छा होवे, तबतक प्रभुकुं कोइ न जोवे; कं० १
अंतर्कामका नाटकराना, तबतक होत न प्रभुसें ताना;
जबतक चामडीरंगमें प्रीति, कामोदयकी चेष्टामद्वत्ति. कं० २
तबतक आतमरसकुं न स्वादो, छंडो मोहका सब उन्मादो;
जबतक स्वप्नमें कामकी चेष्टा, तबतक होता नहि उपदेष्टा. कं० ३
स्वप्नमें देहकी धातु जो जावे, तबतक योगी न कोउ कहावे;
आतमरसआस्वाद जो प्रगटे, कामके स्वप्नादिक सब विघटे. कं० ४
आतमरसका आतमदरिया, आतमरसस्वादी जन तरिया;
बुद्धिसागर अनुभववरिया, मुनिवर योगी बने केशरिया. कं० ५

चेतन !!! विषयनी इच्छा निवारो.

अवसर वेर वेर नहीं आवे. आशावरी.

चेतन !!! विषयनी इच्छा निवारो, विषसम विषयना भोगे न शांति;
आवे नहीं भव आरो.......................................चेतन०
ज्यांसुधी मनमां विषयनी इच्छा, त्यांलगी स्थिरता न पावो;
वर्णगंधरसस्पर्शने शब्दना, मोहे न मनने मुंझावो. चेतन० १
पांचे इन्द्रिय मनना कामे, प्रगटे सर्वकषायो;
डगले डगले दुःख अनंतां, अनुभव दिल प्रगटायो. चेतन० २
जड पुद्गलमां ममता अहंता, सुखबुद्धि संसारो;
जडचेतन जगमांही समता, प्रगटे तो भवपारो. चेतन० ३

विषयरसे न्हाय; ह्दकाया, पामे दुःख अपारो;
चेत चेत वैराग्यने धारी, छंडो काम तवारो. चेतन० ४
स्वमविषे पण विषयनी इच्छा, प्रगटंती झट वारो;
बुद्धिसागर आतमशुद्धि, थावां घट उजियारो. चेतन० ५

मुनिवर !!! मौनपणे व्रत पाळो.

आशावरी.

मुनिवर ! ! ! मौनपणे व्रत पाळो, आतमना उपयोगे रहीने;
रागने द्वेषने टाळो...मुनिवर०
पंचमहाव्रत पंचाचारने, अष्टांगयोगथी चालो;
समभावे रही आतम न्हालो, मूको मोहनो चाळो. मुनिवर० १
काम अहंता ममता मारो, प्रगट्या शत्रु संहारोः
द्रव्यभावथी संगने टाळो, वासनाबीजने बाळो. मुनिवर० २
त्रण्यगुप्ति धरी आनंदथीने, आतमजीवन गाळो;
बुद्धिसागर शुद्धोपयोगे, परमेश्वर दिल भाळो. मुनिवर० ३

खरां ए शिक्षित नरने नारी.

आशावरी.

खरां ए शिक्षित नरने नारी, भाषा अनेक भणे अभिमान न;
दुर्गुण व्यसन निवारी..खरां.
हिंसा करे नहीं जूठुं न बोले, थाय नहीं व्यभिचारी;
चोरी करे नहीं नीतिए वर्ते, वर्ते सदा उपकारी. खरां० १
पोपटपेठे भाषाज्ञाने, रुचि न टळती नठारी;
भण्यागण्या वकाओ थवां पण, दुर्गुण रहेवा भारी. खरां० २

सद्वर्तन वण पास थतां शुं ? फोगट छे हुशियारी;
बाह्यसुधारो मनमां कुधारो, दुष्टवृत्तिने विकारी. खरां० ३

प्रभुविश्वासी सत्य प्रकाशी, वैर झेर परिहारी;
मातापितानी सेवा करे बहु, कार्य करंता विचारी. खरां० ४

मतमतभेदे खेद करे नहीं, संपी बने सहकारी:
सद्गुरुसेवा करे बहुमीते, धर्माचार विचारी. खरां० ५

रागद्वेषनी परिणति वारी, थावे धर्मविहारी;
मनवचनकायापवित्रता धारी, दिलमां दयानी वधारी. खरां० ६

अवगुण उपर गुणने करे जे, सात्विकभक्ष्याहारी;
सात्विक पान करे विवेके, प्रमाणिकगुणधारी. खरां० ७

मनवाणीकाया केळवणी, केळवणी ए सारी;
कहेणी प्रमाणे रहेणी नहीं ज्यां, भणतरमां मूळ भारी. खरां० ८

सेवामां अर्पाइ जावुं, निश्चय ए निर्धारी;
निर्दोषदृष्टि समताधारी, धर्म्यजीवन अवतारी. खरां० ९

दिलनां-सागर जळसम निर्मल, पृथ्वी क्षमा गुणधारी:
वायुपेठे लघुताथी हलकां, अग्निसमां तेजधारी. खरां० १०

नभवत् निःसंगी निर्लेपी, मेघनदी अनुसारी;
गुणगणरागी हृदयनी खुल्ली, मूकी सर्वे वारी. खरां० ११

जडरस भोगी पण जे अयोगी, आतमरस अधिकारी;
आतमशुद्धि करे गुणीयारी, जगमांही बलिहारी. खरां० १२

सात्विक केळवणी पामेलां, देवदेवी नरनारी;
बुद्धिसागर प्रभुजयकारी, शिक्षण शिवसुखकारी. खरां० १३

आतम !! ताहरो था उपयोगी.

सोरठ.

आतम !! ताहरो था उपयोगी, नित्य निरंजन निर्मलज्योति;
पुद्गलयोगे अयोगी...आतम०
पुद्गलनाशी तुं अविनाशी, देहरोगी तुं अरोगी;
पुद्गलरूपी तुं छे अरूपी, ज्ञानानंदनो भोगी. आतम० १
काल अनादि अनंत तुं आतम, स्पर्शन नहीं शोकी;
वर्णगंधरसस्पर्श न शब्द न, अलखदशा तुज नोखी. आतम० २
उपयोग धर्म छे उपयोग क्रिरिया, मोहे था नहीं रोगी;
बुद्धिसागरब्रह्मस्वरूपी, उपयोगे मनुयोगी. आतम० ३

आतम !!! निज उपयोगे रहेशो.

सोरठ.

आतम !!! शुद्धोपयोगे रहेशो. मोहपरिणति मगटी वारो;
उपयोग धर्मने वरेशो...आतम०
उपयोगे कर्म अनंतां खरतां, निजगुण निजने देशो;
त्रिभुवन शहेनशाही छे तुजनां, पामो शिवसुख लेशो. आतम० १
अनंत आनंद आतममांही, लेश परो न अंदेशो;
बाहिरबुद्धि वमी अंतरमां, शुद्धबुद्धियी प्रवेशो. आतम० २
असंख्यवीर्यकरनो एवो, आतमशुद्धसंदेशो;
बुद्धिसागरशुद्धातममां, उपयोगे ठरी बेसो. आतम० ३

११४

आतम! आतमशुद्धिने धारो.

(आत्मशुद्धि.) सोरठ.

आतम! आतमशुद्धिने धारो, मनवाणीतनुथी तजी हिंसा;
धरो अहिंसाआचारो..आतम०
देवगुरुने धर्मनी श्रद्धा, समकितना ज विचारो;
मिथ्याबुद्धिप्रवृत्ति त्यजतां, टळता मनना विकारो. आतम० १
सेवाभक्ति ज्ञान उपासना, कर्मयोग व्यवहारो;
वैर विरोध न दिलमां रहेतां, प्रभुदर्शन अवधारो. आतम० २
मैत्रीप्रमोदने मध्यस्थ करुणा, भावना भावो चारो;
निर्दोष जळभोजनने लेतां, सात्त्विक वृत्ति सुधारो. आतम० ३
सात्त्विक ज्ञानने शुद्धज्ञाननां, शास्त्रो भणी मोह मारो:
सर्ववासना बीजो बाळो, अंतरमां मन वाळो. आतम० ४
परने पीडा करो न करावो, अन्यजीवो न संहारो;
मनवचकायथी परजीवोने, दुःखवो नहि गुण धारो. आतम० ५
जूठुं चोरी मैथुन दारु - व्यभिचार मांस निवारो;
संयम तप सद्दर्शन धारो, टाळो कषाय प्रचारो. आतम० ६
धर्मी अधर्मी विधर्मी उपर, राग रोष खेद टाळो;
भावीभावे सुखदुःख प्रगटे, समभावे ते निहाळो. आतम० ७
उपसर्गो परिषह सहु संकटो, प्रगटे हिम्मत नहीं हारो;
सुवर्णवत् कसाओ विवेके, आतम गणी रहो प्यारो. आतम० ८
सर्वजीवो निज आतम सरखा, गणवा ए धर्म सारो;
दुर्गुण दुर्व्यसनो झट टाळो, शुद्धस्वरूप संभारो. आतम० ९
आगम वेद पुराण कुरानने, वांचीने सार उद्धारो;
दोषो टाळो सद्गुण धारो, दान दया उपकारो. आतम० १०
चाखुं ने सहेवुं साचुं कहेवुं, काम जीती प्रभु भाळो;
बुद्धिसागर कहेणी रहेणी, सरखी सफल अवतारो. आतम० ११

चतुरजन !!! हितशिक्षा दिल धरशो.

आसावरी.

चतुरनर !!! हितशिक्षा दिल धरशो, संतजनोनी संगति करवां;
नेकी पोते सुधरशो.... ....चतुर०
कुटुंबीओनां संपीने रहेशो, फाटफूट नहीं करशो;
धर्मने राज्यनो द्रोह न करशो, कार्य दयानां आदरशो. चतुर० १
मातपिता वृद्ध गुरुजन सेवा, करवां न पाछा पडशो;
दारूमांसथकी दूर रहेशो, मतांतरभेदे न लडशो. चतुर० २
माणसने पन हिंसा न करशो, जुठुं न वगारे करशो;
जूठुं बोलो नहीं चोरी न करशो, व्यभिचार परिहरशो. चतुर० ३
सात्विक आहार पानने वेष, मनतनशुद्धि आचरशो;
निर्भय निर्दोष स्वावंलबनजीवन, धरीने विश्व विचरशो. चतुर० ४
परोपकारे अर्पाइ जाशो, पापकर्म परिहरशो;
निष्कामे पुन्यकार्यो करशो, भूलदोष परिहरशो. चतुर० ५
मनवाणी कायथी दुष्कृत. निंदो पश्चात्तापे करशो;
मनवाणीवनुभवहार शुद्धि, करीने संयम वरशो. चतुर० ६
मद्य सेवनना वश जन हानने, निंदीभ व्रत आचरशो;
सद्गुरुसेवा भक्तिमां स्वार्पण, करवां प्रमाद वारशो. चतुर० ७
[illegible]ळि.मध्ये शुद्धसेवथी वर्तो, पाप करंतां डरशो;
[illegible]नथी कोनुं बूरु न इच्छो, जूठी साक्षी न भरशो.
[illegible]पन वजशो सद्गुण लेशो, न्यायनी वृत्ती विचरशो; चतुर० ८
[illegible]व्यसनथी दूरे रहेशो, नीतिपथ देशने भरशो.
[illegible]न संकट पडतां प्राणांते, अनीति पाप न करशो; चतुर० ९
[illegible]चिनांहो मद्य न विचरशो, सम सण गटने समरशो. चतुर० १०

अपराधी दुर्जन शत्रुनुं, शक्ति छतां भलुं करशो;
समताभावे आतमजीवन, धारी शिवपुर वरशो. चतुर० ११
प्रभुमहावीरनां शुभवचनामृत, हितशिक्षा आचरशो;
बुद्धिसागरप्रभुमयजीवन, प्रकट चिदानंद वरशो. चतुर० १२

॥ हमकुं जानत है कोउ ज्ञानी. ॥

आशावरी.

अवधू क्या मागुं गुणहीना. ए राग.

हमकुं जानत है कोउ ज्ञानी, हमकुं न जानत पापी अज्ञानी;
जानत नहि अभिमानी.... ....हमकुं०
हमकुं जानत अवधूत योगी, कोउ अनुभवज्ञानी;
शुद्धसनेही त्यागी जानत, लेत है भक्त पिछानी. हमकुं० १
समभावीजन हमकुं जानत, जानत है कोउ ध्यानी;
हमकुं जो जाने उसके घरमें, झलके हमारी निशानी. हमकुं० २
हमकुं जो जानत उसके दिलमें, उभरात आनंदवाणी;
बुद्धिसागर समजे सो पावे, आनंदघनकी खानि. हमकुं० ३

आतम तुंछे ज्ञाननो दरियो.

आशावरी.

आतम तुंछे ज्ञाननो दरियो, अस्तिनास्तिगुणपर्यायजलधि;
ज्ञेयतरंगे भरियो.... ....आतम०
शक्ति अनंती समये समये, सत्ताए नित्य ठरियो;
त्रण्यकालमां एकस्वरूप तुं, नहि मरियो अवतरियो. आतम० १
अनंत सुखसागर गुरुदेव तुं, गुरुकृपाए मळियो;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपमां, ब्रह्मस्वरूपे भळियो. आतम० २

दीर्घायुषी अने आरोग्यवंत सुखी थवाना उपायो.

घासो सहियर मंगल गाइए, छइए मझुनां नामोरे. ए राग.

दीर्घायुषी आरोग्य जीवन, शिखाओ सहु जाणोरे;
जाणी वर्तो वेद प्रमाणे, निश्चय एवो आणोरे. दीर्घा० १
कडकडीने भूख ज लागे, त्यारे नियमित खावुंरे;
अतिशय खारुं मीठुं न खावुं, शीतोदकथी न्हावुंरे. दीर्घा० २
वीर्यबुंद नहि पडवा देवुं, कसरत करवो सारीरे;
हस्तकर्मआदि कुटेवो, पडवा न देवो नठारीरे. दीर्घा० ३
दुग्धादिक सात्विकभोजनथी, तनुनुं पोषण कीजेरे;
भोजन करतां शोक ने भीति, क्लेशादिक त्यजीजेरे. दीर्घा० ४
तामस राजस भोजन त्यजवुं, हर्ष शोक वश रहेवुंरे;
पक्षर दिवसे करो उपवासज, मुखथी साचुं कहेवुंरे. दीर्घा० ५
हिंसा जूठुं चोरी कर्मो, त्यागी बनो संतोषीरे;
अधर्म्यमैथुन व्यभिचारादिक, त्यागो थाओ न रोषीरे. दीर्घा० ६
वाजीकराने निर्मलपाणी, पवनेथी तनु पोषोरे;
पापी खोटा धंधा त्यागो, परधन म्हाणुं न जोशोरे. दीर्घा० ७
जुवानी तो दिवानी गणी, जाळवशो चारित्रेरे;
दुष्टव्यसनने दुर्गुणथी तो, दूरे रहीए मीतेरे. दीर्घा० ८
देवगुरु ने संतनी सेवा, करीए रुडा रीतेरे;
अतिश्रम अतिखावुं अतिनिद्रा, त्यजीए चोखे चित्तेरे. दीर्घा० ९
अनिद्राने अतिउपवासो. अभक्ष्यभक्षण त्यागोरे;
अतिशिहरवुं ने अतिरडवुं, तमशो कामनो रागोरे. दीर्घा० १०
अतिशय हसवुं रोवुं त्यजवुं, अति विचाराचारोरे;
ऋतुना अनुसारे वर्तन, खावुं पीवुं विहारोरे. दीर्घा० ११

अतिलुखु ठंडुं ने उन्हु. फडवुं सडेलुं न खावुंरे;
अतिशय थाक परिश्रम तजवो, ऋतुनियमे न्हावुंरे. दीर्घा० १२
हदनी बाहिर वेलवुं फरवुं, जागवुं बोलवुं त्यागोरे;
अतिवाचन अनिशश्रवणने जोवुं. तेनो त्यजशो रागोरे. दीर्घा० १३
रात्रे वहेला उंघो व्हेला, निद्रा तजीने उठोरे;
क्रोध मान माया आसक्ति, कामने अतिशय कूटोरे. दीर्घा० १४
वात पित्तने कफ करनारां, भोजन पानने छंडोरे;
मदिरा मांसथी अळगा रहेवुं, करो न जूठ घमंडोरे. दीर्घा० १५
प्राणायामने आसन साधी, व्याधि न थाता दइएरे;
बाल्यकालथी एवाभ्यासे, निरोगी थै रहीएरे. दीर्घा० १६
वीशवर्षनी उम्मर सुधी, ब्रह्मचर्यने धरीएरे;
दुष्ट कुटेवोथी दूर रहीए, सुखीजीवन वरीएरे. दीर्घा० १७
बार वर्षनी उमर थातां, कोनी भेगा न सूवुंरे;
कुदरती जीवनना नियमे, वर्ततां नहीं रोवुंरे. दीर्घा० १८
अतिचावी खोराकने खावो, जलपण पीवुं चावीरे;
प्रकृति साचववी ज्ञाने, आतम निर्भय भावीरे. दीर्घा० १९
वनस्पति आहारे जीववुं, अतिलोभी नहि थावुंरे;
शुद्ध हवा जलस्थाने रहेवुं, निषेधने नहि खावुंरे. दीर्घा० २०
वैरी विरोधी हाथे न खावुं, रात्रीभोजन छंडोरे;
करी परीक्षा खावुं केफी-वस्तु मोहने खंडोरे. दीर्घा० २१
जीववामाटे खावुं पीवुं, मूत्रनो वेग न रोकोरे;
विष्टानो पण वेग न रोको, वेग रोकतां रोगोरे. दीर्घा० २२
दातण सारी रीते करवुं, दिवसे निद्रा न लेवीरे;
अतिसुखियाने पराश्रयीनी, जिंदगी दासना जेवीरे दीर्घा० २३
आतमज्ञानने प्राप्त करीने, मननो आधि टाळोरे;
कुपाय दुर्गुण टळतां निश्चय, सुख शांतिने भाळोरे. दीर्घा० २४

अधि उपाधि व्याधि हेतु, धपधपकीन निवारोरे;
बालक बालिकाओ जाणी, धरजो ए आचारोरे. दीर्घा० २५
दीर्घायुषी आरोग्य जीवन–धर्मोंनी ए गाररे;
सम्जीने वर्तो नरनारी, पामो सुखनी बधाईरे. दीर्घा० २६
समज्या त्यारथी भूल सुधारी, वर्तजो नरने नारीरे;
बुद्धिसागरपवित्रजीवन, धर्मशिक्षानग सारीरे. दीर्घा० २७

महावीर आतम नाम छे जाणुं.

आशावरी.

महावीर आतम नाम छे जाणुं, यौगिक नाम हमारो लाखो;
अर्थथकी सत्य मानुं.......................................महावीर०
निजगुणने निजमांही आकर्षे, माटे कृष्ण पिछानुं;
शुद्धस्वभावमां रमण कर्याथी, राम ते दिलमां आणुं. महावीर० १
महावीर केवलज्ञाने व्यापक, विष्णु सत्य वखाणुं;
ब्रह्मस्वरूपी माटे ब्रह्मा, दोष हरे हर मानुं. महावीर० २
रुद्र स्वरूपी मोह हण्याथी, आतमरुद्र सवायो;
ब्रह्मने चेतन अर्थथी महावीर, त्रिभुवननाथ सुहायो. महावीर० ३
पूरण एश्वर्यथी रहिम कहेवायो, अल्ला करीम कहायो;
बुद्धने ईश्वर महादेव तुंहि, नाम असंख्य लखायो. महावीर० ४
महावीर नाममां असंख्य नामो, सर्व भाषानां समायां;
अनेकभावे महावीर आतम–पदवाचेने भाख्यां. महावीर० ५
अस्तिनास्ति सहरूह्रूपे, महावीररूप मन मान्युं;
सर्वजीवो छे महावीर पद पद, रहुं न भाषा टप्युं. महावीर० ६
आतमसत्ताए महावीर ज, व्यक्तिए प्रगटे मराणुं;
रागद्वेष हणे महावीर ज, रहे रहस्य न छानुं. महावीर० ७

महावीर आतम उपशमभावे, क्षयोपशमथी जाणुं;
क्षायिकभावे जाणीने दिल, व्यक्त थता भाव आणुं. महावीर० ८
सर्वजीवोने महावीररूपे, देखुं भावना भावुं;
महावीर महावीर जपतां ध्यातां, आनंद पूरण पावुं. महावीर० ९
अर्हन् सिद्धसूरिने वाचक, मुनिने महावीर धारुं;
अन्तर परमातम महावीर छे, क्षणक्षण दिल संभारुं. महावीर० १०
बाहिरथी अंतर् महावीरमां, उतरी परमवीर थावुं;
बुद्धिसागर आत्ममहावीर, आपोआप सुहावुं. महावीर० ११

आतम!!! शुद्धस्वदेशी थाशो.

आतम! शुद्धस्वदेशी थाशो, शुद्धातम महावीर स्वराज्यमां;
निर्भय थै सुख पाशो.....................................आतम०
परमेश्वर महावीरप्रभुमां, लयलीन थै प्रभु थाशो;
सेवकस्वामी भाव विनाना, स्वतंत्रराज्यने पाशो. आतम० १
असंख्यप्रदेशी भारतदेशमां, पूर्णानन्दे सुहाशो;
पुद्गलपरदेशमांहि न जाशो, अनंतशक्ति कमाशो. आतम० २
दर्शनज्ञानचारित्र स्वदेशी, आतममांहि प्रकाशो;
अज्ञान रागने रोषने टाळे, शुद्धपणाने पाशो. आतम० ३
कर्मे अशुद्धि ने धर्मे शुद्धि, शुद्धोपयोगी थाशो;
मनवच कायथी हिंसा टाळी, दयागंगमां न्हाशो. आतम० ४
ज्ञाननुं भोजन खाओ खवाडो, समजल पीशो पाशो;
ध्यानसमाधिनी निद्रा लेशो, सद्गुणे ने सद्गु चढाशो. आतम० ५
गुणस्थानक निःसरणि चढीने, मुक्तिमहेलमां जाशो;
आतम ते सम्राट् महावीर, थातां स्वतंत्र सुहाशो. आतम० ६

दुनियामां मोहराज्य तमासो, मुंझे सवा खासा;
आतमराज्यमां ज्ञाने प्रवेशो, मोहा थै परनाशो. आतम० ७
परमेश्वरमां मनने धारो, दुर्गुणव्यसन विनाशो;
सघळा सद्गुण घट प्रगटावो, कामनां करशो न वासो. आतम० ८
सात्विकभोजन जळ वापरशो, भोगोपरी विरमाशो;
हिंसा जूठुं चोरी मैथुन, त्याग करी शुद्ध थाशो. आतम० ९
शुद्धस्वदेशी गुणरत्नोथी, आत्मसाने न विकाशो:
देवगुरुने धर्मनो दिलमां, पूर्ण धरो विश्वासो. आतम० १०
अहिंसा सत्यसंयमतरजर, ज्ञानभक्तिर विलासो;
बुद्धिसागरशुद्धस्वदेशी, आपोआप प्रकाश्यो. आतम० ११

आतम! तुं नहीं जडनो भीखारी.

आशावरी.

आतम!!! तुं नहीं जडनो भीखारी, शहेनशाह तुं जगनो स्वामी;
तुज पदवी ले संभारी.......... ....आतम०
दर्शन ज्ञानचारित्रने वीर्य ज, अनंतगुण भंडारी;
अनंतसुखनो छेद नहीं कंइ, निश्चय कर निर्धारी. आतम० १
सुख अनंतु छे निजघरमां, परघर दुःख अपारी;
ममता अहंता जडमां करे केम? भ्रांतिथी दुःख भारी. आतम० २
जडवस्तुथी सुखदुःख कल्पना, करी निजरूप विसारी;
आतमना उपयोगे छे सुख, वर्या करे जडनी यारी. आतम० ३
भीखनुं काम सकळथी नीचुं, इन्द्रने चक्री भीखारी;
पुद्गलभीखथी तृप्ति न शांति, मोहे थानी सुखारी. आतम० ४
वर्णगंधरसस्पर्शनी भीखे, तृष्णाए दुःख भारी;
जडसंबंधे ममता प्रगटे, दुःख रहे न लगारे. आतम० ५

मागण पेंठे माग न आतम ! ! ! मागणवृत्ति नठारी;
रत्ननुं मंदिर झुंपडी वेयां, समभावे सुखरथारी. आतम० ६
अहंममता आशारहित मुनि, अनंत सुख अधिकारी;
तनमनधनमूर्छा उतरतां, जीवंतां मुक्ति सारी. आतम० ७
महीजलअग्निवायुने नभथी, तुं मोटो निर्धारी;
ताहरी तोले कोइ न आवे, तनुदेवळ प्रभु भारी. आतम० ८
पुद्गलएंठ अनंती वेळा, खाधी पीधी अपारी;
तेथी तृप्ति लेश थइ नहीं, समज समज सुखकारी. आतम० ९
अनंत ज्ञानानन्दनी ऋद्धि, प्रभुता गणीले प्यारी;
नामरूपनो मोह त्यजीदे, घटमां प्रभुता लें भाळी. आतम० १०
सर्वपुद्गलमां निःसंग रहेवुं, आतमरूप विचारी;
बुद्धिसागर आतमराजा, विश्वप्रभु बलिहारी. आतम० ११

कुर्बानी ने होम पशुवध संबंधी उपदेश.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने. ॥

अल्लाने खावापीवानुं नहीं कशुं ?
नित्य निरंजन नूर छे अपरंपारजो;
पशु मारीथी तेना नामे ते कदी,
खुश थतो नहि नाखुश नहि तलभारजो;
पक्षपात त्यागीने सत्य विचारजो.... ....१
अल्लाने पशुभक्षणनी इच्छा नथी,
खावुं होय तो स्वयंप्रहीने खायजो;
एवुं तो समजाय नहीं मतपक्षमां,

पशुए शुं ? कीधो प्रभुनो अन्यायजो;
सत्यबुद्धियी साचुं शुद्ध विचारजो २
पशुपंखीने प्रभुनानामे मारतां,
प्रभुनानामे पतो थणो अन्यायजो;
प्रभु पण पोताना जेनो खातो गणो,
तेमां मननी इच्छा हुकम जणायजो,
पेवा पोते तेवा प्रभुने शुं ? गणो.... ....३
प्रभुने मातानें पशुओ खावां नहीं,
मांस रक्तने भखे नहि कदि देवजो;
मांसरक्तने खानारा देवो नहीं,
राक्षस पापीने खावानी टेवजो;
होमयज्ञमां पशुपंखी नहीं होमजो.... ....४
माता मेलडी नामे पशुओ नहीं हणो,
देवना नामे मनुष्यनां पाखंड जो;
खावे पीवे जेवुं ते प्रभुने धरे,
मनुष्यनां कल्पित एवां बहु बंडजो;
पशुना स्थाने पापिओ केम नहीं मरे.... ....५
अन्न नथी परमेश्वर के पशुने हणे,
हणनारानी उपर करवा रहेमजो;
पशुने मारे स्वर्ग न पोताने मळे,
अन्य मरे ने स्वर्ग मळे निज केमजो;
रागद्वेष निवारी सत्य विचारजो.... ....६
रागरोष कामादियुत मन छे पशु,
एवा पशुनी करो कुर्बानी होमजो;
व्हेम करीने प्रभुना नामे नहीं हणो,

स्तुत्यांनुं दुःखरतो मटि गेरबी;
मनवागीने कायाथी हिंसा थती ... . —२
दुःख लागनोनां कृतीनां नाम छे,
मारादिकतापुर्यामें पड छे नाम नो;
शुद्धिसाधनवर्णनरूप दिवाको.
दया दान यदकार्यना कार्यो ह्रदयो;
गर्दभिवना पांखो नाम दिवाको . —

तनुधर सत्यजनोइने धारो.

आशावरी

तनुधर सत्यजनोइने धारो, मदन्तानन्द जादेशिवावराने;
टके न कोइ विकारो ....तनु.
आतमवैरवी दया करावने, रागो कांते सुखागो;
पचेंगुणो मनरंगा धारो, सबहितकरो वसारो. तनु० १
पोशितजिननी ज्ञानभावन जग, धार ए आज्ञा धारो;
पन्नु तांतणाभी अमोर, एनजवीडिक साध्यो. तनु० २
देवगुरु आतम साक्षीए, वदतां धारा धारो;
शुद्धोपयोगी धीनुं जीवन, भाव द्विजत्व विचारो. तनु० ३
ॐ अर्हं ह्रीं अर्ह दोरवी, एनो धरो आधारो;
मनवाणीकायाने आतमशुद्धि,-करवी मत्स्य ए धारो. तनु० ४
बहिरातम त्यजी अंतर आतम-जीवन पन्थे धारो;
ज्ञानानंदअमृतरस पीवो, परब्रह्म निज भाळो. तनु० ५
अज्ञानतमथी ज्ञान प्रकाशमां, आवी पर्व मनावो;
बुद्धिसागरप्रकाशरूपी, पद पद आतम भाळो. तनु० ६

आत्मप्रेरित.

आशावरी.

आतम! आतमप्रेरित सुणजे, परापश्यंतीभासित प्रेरित;
करजे सांजु परिहरजे.... ....आतम०
मनवचकायनी गुप्ति करीने, अंतरध्वनि सांभळजे;
अंतरमां प्रभुना पयगामो, प्रगटेला मन धरजे. आतम० १
अंतर् प्रगटित ज्ञानवेदान्तो, आगमो साचां फळशे;
शुद्धबुद्धियी आतमशुद्धि, अनंत आनंद मळशे. आतम० २
ध्यानसमाधि पछी आतममां, ज्ञान ते प्रगटी नीकळशे;
बुद्धिसागरपरमेश्वर दिल, ज्योतिर्मय झळहळशे. आतम० ३

आतम! आतमधर्म छे त्हारो.

सोरठ.

आतम! आतमधर्म छे त्हारो, आतमधर्म प्रगट करवामां;
आतमशुद्धिने धारो आतम०
रागरोष काम अज्ञान टळतां, प्रगटे ज्ञानप्रचारो;
समभावे सद्धर्ममां मुक्ति, दर्शनमोहने मारो. आतम० १
सर्वप्रकारे मोह टळे तो, आतमशुद्धि अपारो;
आतमशुद्धिमां मुक्ति समाइ, धर्म न निजथी न्यारो. आतम० २
धर्मना लाखो मतिभेदो छते, संशय खेद न धारो;
रागद्वेषने हिंसाटाळो, धर्म प्रगटशे सारो. आतम० ३
अहिंसा संयम तप साधो, करशो परउपकारो;
धर्मना मोहे धर्म न प्रगटे, धर्मनो मोह निवारो. आतम० ४
मननी मान्यता धर्म विचारो, करता असंख्यात वारो;
आतमधर्म ते ज्ञानानन्द छे, प्रगटावो घट प्यारो. आतम० ५

आतम ज्ञानानन्द प्रगटता, करतां शांति अपारो;
सात्विक साधन धर्मथी न्यारो, आतमधर्म विचारो. आतम० ६
तर्कना वाद विवाद करतां, आवे न धर्मनो आरो;
रागद्वेष टळ्यावण धर्मनां-शास्त्रो भणे नहीं पारो. आतम० ७
प्रथम दुर्गुण व्यसन निवारो, ममता अहंता टाळो;
सात्विक जल भोजन आहारो, पवित्र धरो आचारो. आतम० ८
एकदेशीयविचार निवारो, सर्वदेशी ल्यो विचारो;
सर्वजीवोने आतमसरखा, गणी धरो शुद्धप्यारो. आतम० ९
मनवचकायथी पाप निवारो, निष्काम पुण्याचारो;
आतम अनुभवज्ञान प्रगटशे, आनंद अपरंपारो. आतम० १०
प्रभुमहावीर गुरुकृपाए, घटमां थयो उजियारो;
बुद्धिसागरआतमधर्म छे, चिद्आनंद निर्धारो. आतम० ११

धर्मी थवाने लायक सद्गुण मेळवो.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने. ए राग.

धर्मी थवाने लायक सद्गुण मेळवो,
सद्गुण सत्यक्रियाथी मुक्ति थायजो;
उत्साही बनशो पहेलां नरनारीओ,
उद्योगी प्रेमी बनतां दुःख जायजो;
प्रगतिजीवनमां उत्साहे आगळ धसो. १
खुशमीजाजे आयुष्य वहेवुं ज्ञानथी,
थतां पराजय कदि न तजवुं धैर्यजो;
खंतने टेकथकी आगळ धसता रहो,
संकट पडतां प्रगटावो दिलशौर्यजो;
कर्मथी पडतां पण दिलथी चढता रहो.... .... २

आतमना विश्वासी थै कार्यो करो,
भावीभावगणीने सहेजो दुःखजो;
भ्रमाणिकता जाळवो वनथनभोगथी,
निष्कामी थै पामो शाश्वतसुखजो:
चढती पदवीमां समभावे प्रभुने भजो.... .... ३
शत्रुनुं पण सारुं चिन्तवो ने करो,
अपराधीउपर करजो उपकारजो;
परोपकारो करतां मृत्यु थाय तो,
सारमाटे गणी मरजो नरनारजो;
सारामाटे सर्व थतुं मन मानजो.... .... ४
मनवाणीकायाथी कोइ जीवनी,
करो न हिंसा जूठ न बोलो लेशजो:
ईर्ष्यामत्सरने सर्वसाथजीवन वरो,
स्वार्थने मोहे करो न कोथी क्लेशजो;
सर्वजीवोने आत्मसरीखा मानजो.... .... ५
रोगादिक वखते पण आनंदी रहो,
दुःख पडे ते सुखमाटे मानजो;
आसक्तिवण सर्वसंबंधो जाळवो,
प्रभुविश्वासे सर्वनां दुःख नापजो;
ज्ञानी योगी भक्त बनो नरनारीजो.... .... ६
मनवाणीकायाथी पवित्रता धरो,
दयादानदमसंयम पाळो सत्यजो;
क्षमा सरलता मार्दव प्रभुने धारजो,
चोरी जारी त्यजी करो शुभकृत्यजो;
दुर्गुण व्यसनने दुराचारने त्यागजो.... .... ७

सद्गुरु तिरथी शांति पामो रंगनो,
सर्वजीवोनी सेवा करजो मनवनो;
मर्द अने मरदानी शांति रागनो,
दुःखीओने सहाय करी शुभछलनो;
कर्यु अने गुण राख्याना मौन न रहो.... .... ८
आत्मशुद्धि करवा तप संयम धरो,
परमार्थे मार्ग आवो भव्यनो;
बुद्धिसागर धर्म जीवन पावजो,
गुरुगमवाणी करजो शुभ कर्तव्यनो;
सर्वेछापर्वावारा हित शिक्ष छे ९

हितशिक्षा.

ओधवजी सन्देशो कहेजो श्यामने. ए राग.
मिथ्या मति नास्तिकनो संग निवारजो,
दुर्जन जननो धरो नहीं विश्वासजो;
हिंसक जूआ चोरथी नेनो पालजो,
सम्यग् ज्ञानी संगति करजो खासजो;
प्रभुमहावीर आज्ञाए जग चालजो.... .... १
व्यभिचारी व्यसनीनी सोबत त्यागजो,
धर्मना द्वेषीजननो करो न संगजो;
धर्मना रागीजननी संगत धारजो,
मुनिसंगतथी वधशे धर्मनो रंगजो;
संघनी सेवामाटे अर्पाई जजो.... ... .२
स्वाधिकारे मर्द बनी कार्यो करो,
पाखंडी पासे नहीं करजो वासजो;

सत्य वदंतां सत्याचरतां मृत्युथी,
बीवुं नहीं बनवुं नहीं मूडना दासजो;
आत्मशक्ति फोरवी जगमां जीवशो........ ....३

निर्बळ कायर बीकणनुं शुं ? जीववुं,
अज्ञाने जीवन ते पशु अवतारजो;
मभुमहावीरध्येय गणी जीवन वहो,
निर्बळने जीवननो नहि अधिकारजो;
धर्मार्थे मरवाथी पाछा नहीं पडो ४

पशुबळ सत्ताधारकथी बीवुं नहीं,
धर्मीसंतनुं करो नहिं अपमानजो;
मातपितागुरुदेवनी भक्ति कीजीए,
सद्गुणीजननुं सदा करो सन्मानजो;
गुणना रागे रीझो नरने नारीओ........ ....५

जातिमात्रना मोहे मुक्ति दूर छे,
दंभथकी दूर मुक्ति कोश हजारजो;
वीतरागता पाम्या वण मुक्ति नहीं,
धर्ममोहथी फूलो नहीं तलभारजो;
सत्यतत्त्वने ज्ञानथकी ज विचारजो.... ....६

नामरूपनो मोह तजी प्रभुपंथमां,
आगळ चालो समताए नर नारजो;
बुद्धिसागरप्रभुमहावीरभक्तिथी,
पामो अविचळ आनंद अपरंपारजो;
गुणस्थानकनिःसरणीपर चढता रहो........ ....७

श्रावक.

ए गुण वीरतणो न विसारु.

श्रावक होय ते समकित धारे, विवेके किरिया करतोरे;
अविरति देशविरति ने भेदे, स्वाधिकारने धरतोरे. श्रावक० १
देवगुरुने धर्मनी सेवा, भक्तिमां अर्पातोरे;
गुरुसाधु जोगवाइ छतां ते, वहोरावीने खातोरे. श्रावक० २
धर्मशास्त्र सुणतो गुरुपासे, अत्यंतश्रद्धाप्रेमेरे;
गुरुवंदन त्रण्यकाल करे जे, वर्ते साचा नियमेरे श्रावक० ३
पंचाचारने प्रेमे पाळे, देश विरतिने धारेरे;
बारव्रतो गुरुपासे ग्रहीने, रहे श्रावकव्यवहारेरे. श्रावक० ४
सातनयोथी षड् आवश्यक, समजीने आचरतोरे;
गाडरियानी रीतने त्यागे, धर्मार्थे तनु धरतोरे. श्रावक० ५
मुनिव्रतनी नित्य इच्छा राखे, शक्ति मळे मुनि थावेरे;
संघसकलनी सेवाभक्ति, करतां न संतोष लावेरे. श्रावक० ६
जंगमस्थावर तीरथयात्रा, भावने शक्तिए करतोरे;
धर्मने धर्मीना रक्षणमाटे, मरवाथी नहीं डरतोरे. श्रावक० ७
सर्वकार्य करतां परमेष्ठी-मंत्रने मनमां जपतोरे;
जूठी साक्षी पूरे न वधारे, जूठ अनर्थ न लपतोरे. श्रावक० ८
मनवाणी तनुशक्ति वधारे, प्रामाणिक व्यवहारेरे;
निश्चय अनुभवज्ञानने पामे, अडग रहे स्वाधिकारेरे. श्रावक० ९
द्रव्यक्षेत्रकालभावानुसारे-जैनोनी उन्नति माटेरे;
कर्तव्यो करतां जीवंतो. धर्म धरे शिरसाटेरे. श्रावक० १०
सीदंतानी सहाय करे ने, धर्मीनुं सगपण धारेरे;
नीतिए धंधो करी कुटुंबनुं, पोषण करे व्यवहारेरे. श्रावक० ११

शुभ उपयोगे शुद्धोपयोगे, रही वर्ते गावारेरे;
बुद्धिसागरसंयमनी सेवा, करीने कर्म निवारेरे. भावक० १

॥ आर्य अने अनार्य. ॥

ए गुण वीरतणो न विसारुं. ए राग.

गुणकर्मोथी आर्य अनार्यनां-, लक्षण जुजुवां जाणोरे;
मनवाणीकायथी आर्यपणाने, समजी आचारमां आणोरे. गुण० १
प्राण पडे पण न्याय न मूके, मायाणिक्ता न चूकेरे;
दानदयादमयंत्रने फूंके-परधन उपर थूंकेरे.
दुश्मन पण घेर अतिथि थने, आवे करे सत्कारेरे; गुण. २
स्वागतजेवानां वाक्ये न मूके, आर्यना सत्याचारेरे.
सत्य सरलता शुद्ध नीतियो-आर्यो जगमां सनूरारे; गुण० ३
हिंसाजूठहठकपटमां, पापे अनार्यो छे पूरारे.
सज्जनता सभ्यता सहृदयता, होय नहीं व्यभिचारीरे; गुण० ४
देवगुरुधर्मश्रद्धाधारक, आर्यो धरे सत्यधारीरे.
दुर्जनता शठता लंपटता, व्यभिचारी अनाचारीरे; गुण० ५
मानव मारीने हाथ न धूवे-पापाहार आचारीरे.
क्रोधी मानी लोभी पूरा, अनीतिस्वार्थमां शूरारे; गुण० ६
मत्स्यराक्षस जेवा तमोगुणी, निर्दय उद्या क्रूरारे.
देव न माने धर्म न माने, एवा अनार्य मवालीरे; गुण० ७
माहकत्रु परपीडा करे नहीं, आर्यजनो छे रसीआरे.
पंचेन्द्रियभोगे सुख माने, बहिरातमनडवादीरे; गुण० ८
पाप गणे नहीं हिंसा जूठमां, अनार्यो उन्मादीरे.
आत्ममां सत्य आनंद माने, दुर्गुण व्यसनो टाळेरे; गुण० ९
आलोक परलोक धर्मने माने, सद्गुणमां मन वाळेरे. गुण० १०

लुचाइने स्वप्ने न धारे, अधर्म्ययुद्ध न करता रे;
निंदा मश्करी आळने त्यागे, आर्यपणाने धरतारे. गुण० ११
आर्यो अद्रोही अनार्यो छे द्रोही, आर्यो छे उपकारीरे;
नगुरा नगुणा दुष्ट अनार्यो, गुणीउपर अपकारीरे. गुण० १२
स्वतंत्र निर्भय शुद्ध प्रमाणिक, होय ते आर्य पिछानोरे;
प्रतिज्ञाभ्रष्ट पवित्र नहीं जे, तेह अनार्य प्रमाणोरे. गुण० १३
मातपितागुरुसंतना भक्तो, आर्यो छे गुणरागीरे;
मातपितागुरुसंतना द्वेषी, तेह अनार्यो अभागीरे. गुण० १४
ज्ञानी वैरागी ने त्यागी, आर्य एवां नरनारीरे;
अज्ञानी अतिकामी अनार्यो, अधर्मयुद्धाचारीरे. गुण० १५
च्हावुं सहेवुं सत्यने कहेवुं, जूल्म करे न लगाररे;
अपराधो उपर उपकारो, करता आर्य विचाररे. गुण० १६
स्वार्थ च्हावुं सहेवुं जाणे, जूलमअनीतिनुं धामरे;
परमेश्वरने पण पीजाता, स्वार्थ न वण बीजुं कामरे. गुण० १७
समता न धारे तेह अनार्यो, करे शुं ? आतमशुद्धिरे;
ममतावारे समता धारे, आर्यपणानी बुद्धिरे. गुण० १८
जडऋद्धिमां मोही अनार्यो, आर्यो रहे निर्लेपरे;
जीवनमरणमां अनार्यो छे मोही, आर्यो न धारे चेपरे. गुण० १९
आर्यो परमार्थे अर्पाता, धरता शुद्धोपयोगरे;
मूढमनार्यो स्वार्थमां राता, धरता विषयनो भोगरे. गुण० २०
वेषक्रियाजातिअहंकारे, रहे अनार्यो रक्तरे;
सत्यक्रियागुणधारक आर्यो, वाहिरमां न आसक्तरे. गुण० २१
धर्मविचाराचारी आर्यो, तपसंयमगुणखाणरे;
पाखंडधारीजडनिर्दयजन, पापी अनार्य छे जाणरे. गुण० २२
प्रभुजीवनथी आर्यो जीवे, ज्ञानने चारित्र्यवंतरे;
जडजीवनथी अनार्यो जीवे, दुष्टविचारोना मंत्ररे. गुण० २३

धर्मोनी ज्यारे आर्यो थईने, धर्माथं त्यजे प्राणरे;
धर्मने धिक्कारे अनार्यो, वेरी मूर्ख अनाणरे.
ज्ञानयोगी कर्मयोगी ने भक्तो, वीतराग छे आर्यरे;
जन्मथी आर्य अनार्यपणुं नहीं, गुणथी छे आर्यत्व धार्यरे. गुण० २४
देसाणामां चोमासुं करी, अठ्ठोत्तरनो साररे;
श्रावणपूर्णिमा दिवसरचना, करतां मंगलमालरे. गुण० २५
आर्यपणानां सद्गुणकर्मो, धारो नरने नाररे;
बुद्धिसागरप्रभुपद पामो, वर्ते जयजयकाररे. गुण० २६

गुण० २७

योगस्वरूप.

संतो देखीएरे प्रगट पुरुष प्राण वहाला.

योगनां लक्षणोरे जाणी परमयोगीपद वरशो;
समज्यावण गाडरिया चाले, वर्ते योग न परशो. योगनां० १
परमात्मपद वरवामाटे, साधनधर्म व्यापारो;
समकितपूर्वकधर्मप्रवृत्ति, योगशब्द व्यवहारो. योगनां० २
रागने रोषे बाह्यविषयमां, प्रगटे जे चित्तवृत्ति;
तेवी सर्वे चित्तनी वृत्ति, रोधे योगनी शक्ति. योगनां० ३
कर्मप्रकृति बंधन सघळां, तेथी मुक्त थवाने;
रहायोगनुं बीज विचारो, शुद्धस्वरूप प्रकटाने. योगनां० ४
आतम ते परमातम पोते, सत्ताए छे साचो;
प्रगट थवानां तेनां कारण, योग छे तेनां राचो. योगनां० ५
आतमने परमातम करवा, मनवचकायप्रवृत्ति;
व्यवहारे धार्मी ते जाणो, निमित्तयोगनी वृत्ति. योगनां० ६
मनवाणीकायाथी पंच-महाव्रतोनुं धरवुं;
यमनियमादि आठ अंगो, योगनुं लक्षण वरवुं. योगनां० ७

तिरोभावनो आविर्भाव ज, उपादान छे योग;
शुद्धगुणो पर्यायो करवा, अंतरंग उपयोग. योगनां० ८
उपशम क्षयोपशमने क्षायिक–, भाव ते योग प्रमाणो;
कर्मवियोगे आतमगुणना, योगे योग ज जाणो. योगनां० ९
साकारप्रभुना ध्याने रहेवुं, योग सालंबन मोटो;
निराकारप्रभुना उपयोगे, कदि न आवे तोटो. योगनां० १०
असंख्यप्रदेशी आतमस्वरूपनुं, शुक्लध्यान जयकारी;
निरालंबनयोग ते मोटो, पामे शिवसुख भारी. योगनां० ११
मतिश्रुतज्ञानना उपयोगे जे, तत्त्वस्वरूप विचारे:
संप्रज्ञातसमाधि पामे, तेम सविकल्प ज धारे. योगनां० १२
स्थूल तथा सूक्ष्म ज बे भेदे, शुभादिक परिणामे;
क्षयोपशमी सविकल्प समाधि, असंख्यभेदने पामे. योग० १३
सिद्धादिक अवलंबनयोगे, आतमशुद्धि थाती;
आतमनुं परमातम थावुं, योगनी ए प्रख्याति. योग० १४
काल अनादिकर्मनो साथे, आतम छे परिणामी;
शुद्धभावमां आतम प्रणमे, योग छे आतमरामी. योग० १५
अनंत ज्ञानानन्दमयी छे, आतम शुद्धस्वभावे;
कर्म खरतां ज्ञानानन्दनी–, व्यक्तियोग सुहावे. योग० १६
मनमां मोहनी वृत्ति प्रगटे, तेनो रोध जे करवो:
द्रव्यभावमनविरहित आतम, आविर्योग ते धरवो. योग० १७
त्रण्यगुप्तिने पांचसमिति, उत्सर्गे अपवादे;
पंचाचार ते साधनयोग ज, पडो न वादविवादे. योग० १८
देवगुरुमुनिधर्मसंघनी, सेवाभक्तिप्रवृत्ति;
आस्रवनी निवृत्ति योग ज, नियमशौचनी रीति. योग० १९
नयव्यवहारथकी जे योग ज, असंख्यभेदे जाणो;
मनोवृत्ति शुभपरिणामादि–, भेदे असंख्य मानो. योग० २०

कर्मबंधथी मुक्त थवामां, असंख्य योग घटंता;
बंध विना नहीं मुक्तिनी सिद्धि, ज्ञानी एम वदंता. योग० २१

प्रीतिभक्ति वचन असंगे, परमप्रभु दिल धरवा;
मनमां मगटंता ज कषायो, उपयोगे परिहरवा. योग० २२

मनवचकायथकी ज अहिंसा, सत्यास्तेयने ध रो;
ब्रह्मचर्य संतोषसमाधी, आतमने अजवाळो. योग० २३

मैत्रीमुदिता करुणाभावना, मध्यस्थभावना योगो;
शुभने शुद्ध उपयोगे रहेवुं, भोग छतां नहीं भोगो. योग० २४

मनासक्तिए सर्व संबंधो, जाळववा अधिकारे;
कर्मयोगी थै कार्यो करवां, वरे योगी ते वारे. योग० २५

साधनक्षयोपशमशुभप्रवृत्ति, प्रवृत्ति शुभयोगे;
असंख्ययोगो सापेक्षाए, सिद्धयोग उपयोगे. योग० २६

क्षायिकभावे केवलज्ञानने, पामे योग ज पूरोः
निरालंबनयोगे सिद्धि, कार्य नहीं ज अधूरो. योग० २७

सालंबनसाधन योगज छे, निरालंबन हेते;
औपचारथी सद्भूतयोगने, पामो शुभसंकेते. योग० २८

सर्वकपायनी दुष्टवृत्तियो, रोधवी योग वे सारो;
छंडी हिंसामय आचारो, धारो शुभ आचारो. योग० २९

दया सत्य ने ब्रह्मचर्यने, कंचनकामिनी त्यागे;
आत्मस्वरूपे परिणमतां, सर्वसिद्धियो जागे. योग० ३०

मुद्रा आसन प्राणायामथी, एकांते नहि सिद्धि;
मोक्षाशाए राजयोगथी, प्रगटे अनंत ऋद्धि. योग० ३१

राजनी आगळ हठनी किमत, थोडी सरखी जाणो;
आत्मज्ञानीने सापेक्षाए, हठ छे साधन मानो. योग० ३२

सिद्धियोनी मानपूजानी, भोगाशा सुख त्यागे;
स्वाधिकारे साधन सधवां, मन रहेवां वैराग्ये. योग० ३३

ॐ अर्हं महावीरना मंत्रे, मंत्र योग छे मोटो;
परमेष्ठी जपतां ने ध्यातां, मोह रहे नहि खोटो. योग० ३४
पिंडस्थादिकचार ध्यानथी, आतमशुद्धि करवी;
साधनमांही मुंझावुं नहि, साध्यदशाने वरवी. योग० ३५
द्रव्यने भावसमाधि भेदो, अनेक छे एम जाणो;
रागने द्वेष नहीं त्यां समाधि, मुख्यभाव मन आणो. योग० ३६
दुर्गुणी व्यसनी कॅफीचीजो–,खानारा नहीं योगी;
सद्गुणी भक्तने ज्ञानी योगी, भोगेच्छाए भोगी. योग० ३७
षडावश्यक आदि साधन, पूजावंदनयोगो;
मोक्षयोग तेहेते साधन, अंतर धरी उपयोगो. योग० ३८
योग छत्रीशी मेसाणामां, रची स्वपर हितकारी;
बुद्धिसागर सद्‌गुरु योगे, सर्वयोग उपकारी. योग० ३९

शोकनिवारकभावना ग्रन्थ.

प्रणमी परमेश्वर विभु, प्रभु महावीर जिनंद;
शोक निवारक ग्रन्थनी, रचना करुं सुखकंद. १
त्रिशलाराणी जननीने, सिद्धारथ भूप तात;
बेउ स्वर्ग सिधावतां, पाम्या नंदि अशात. २
कुटुंब ज्ञातिने देशमां, रहियो शोक छवाइ;
प्रभु महावीर चित्तमां, भावदया खूब आइ. ३
नंदिवर्धन भाइने, तथा सर्वजनबोध;
दीधो वीरे ज्ञानथी, थयो शोकनो रोध. ४
शोकनिवारकबोधनो, भावे करुं प्रकाश;
चिंता शोकादिक टळे, रहे न चित्त उदास. ५

उत्तर रंग बधावणां. ए राग.

नंदिवर्धनभाइने, महावीर जणावे;
मातपिताना मृत्युथी, केम दिलगीरी लावे;
आतमनुं मृत्यु नथी...६
कर्मवशे मरवेनोयने, तनु मरवुं ने जावुं;
आपुरुजे ज्यां चाल्युं, साचे धर्मनुं भावुं-शोक न करशो तुज घटे.७
चतुरचितलक्षयोनिमां, चारगतिमांही जीवो;
जन्ममरण करे कर्मथी, बहु पाडता रीवो. शोक करे ए नुं नहींबळे.८
सुदर्शना समजी रहो, नंदिवर्धन भाइ;
न्यारो देहने आतमा, जूठी देह सगाइ.

देहने मात पिता गणे, देह पडतां शुं? रोवुं;
देह क्षणिक विनाशी छे, जडरूपे ते जोवुं. शोक० ९

देह अनंतां धारीने, मूकी आतम आव्यो;
आतम मायों नहीं मरे, शोक तेनो शुं? लावो. शोक० १०

कर्म छतां अन्यदेहने, धरे कर्मने वेदे;
वेनीने एकनी दिलगीरी, करां शुं रहो खेदे. शोक० ११

मातपितादिना आतमा, मर्या नहीं कदि मरशे;
चारित्रपामी सिद्ध थै, शिवपुरमांही ठरशे-शोककरोनहीं कोइनो.१२

मात पिताना आतमा, अन्यदेहमां छाया;
वर्तमानतनुनाशथी, केम मनमां मुंझाया. शोक० १३

नाटकीयानी पेठ ज्यां, तनुवेष बदलवा;
कर्मवशे तनु बदलवां, मिथ्याशोक न करवा. शोक० १४

ज्ञानीओ शोक करे नहीं, कर्म आतम जाणे;
मिथ्यामोह धरे नहीं, करे कर्तव्य ज्ञाने. शोक० १५

शोक० १६

देहने आतम मानतां, मोहभीति प्रगटे;
आतमने भिन्न मानतां, शोक भीति विघटे. शोक० १७

वस्त्र जीरण तजी नव्यने, जेम धरवां तेम;
वस्त्रपरे तनु बदलतां, मोह धरवो केम ? शोक० १८

मातपितादिक गुण ग्रहो, धरो धर्मप्रवृत्ति;
मनुष्यभवनी मुसाफिरी, तजो हुंतुंवृत्ति. शोक० १९

जन्म्या तेने जाणवुं, देहने त्यजवानुं;
भूलो नहीं मनुभवविषे, धर्मने धरवानुं. शोक० २०

मोहपरिणामी आतमा, भवमांही भटके;
आत्मपरिणामी आतमा, भवबंधथी छटके. शोक० २१

शोक करो नहीं रे तमे, जूठी जगनी माया;
स्वप्ननी बाजीसम बधु, पुद्गलपर्याया. शोक० २२

मरनारांने शुं रुवो ? रडनारां जवानां;
संयोग त्यां ज वियोग छे, मळयां जूदां थवानां. शोक० २३

बाजीगर बाजीसमो, वधो खेलछे खोटो;
रागने रोषने वारतां, थाय आतम मोटो. शोक० २४

तनुमां रह्योछतो देहथी, भिन्न आतम जाणो;
आतमनी पूर्णशुद्धिथी, मोक्ष सिद्धि प्रमाणो. शोक० २५

मुंझवुं शुं ? नामरूपमां, नामरूपे न पोते;
नामने रूपनो नाश छे, ब्रह्म अविनाशी ज्योते. शोक० २६

नामरूप थयां थाय छे, तेथी आतम न्यारो;
जड नहीं जाणे आत्मने, जडपर श्यो प्यारो. शोक० २७

न्यारुं ते आतमनुं नहीं, जडपुद्गल न्यारुं;
जडने सगां केम मानीए ? तेमां मारुं शुं त्हारुं. शोक० २८

देह सगाइ छे मोहथी, ज्ञाने आत्मसगाइ;
जेह सगाइ जाणे नहीं, तेनी शी छे सगाइ. शोक० २९

मोहने स्वार्थे सगाइथी, जनमां न वदाइ;
रोवुं सगांने स्वार्थथी, नहीं ए मूर्खवाइ. शोक० ३०

देहसंबंधे जे सगां, जडमोहे ते भूल्यां;
आत्मसंबंधे जे सगां, निर्मोही अमूलां. शोक० ३१

देहसगां देह त्यां सुधी, पछी संबंध जूठा;
क्षणिकसंबंधे मुंझीने, अरे थाओ न यूठा. शोक० ३२

जन्म जरा ने मरण छे, त्रण्य देह अवस्था;
देहभावे नहीं परिणमो, थाओ ज्ञाने सुस्वस्था. शोक० ३३

जेवी संध्याने वीजळी, जळना परपोटा;
संसार संबंध तेहवा, क्षणनाशी खोटा. शोक० ३४

मनमां शोक न धारीए, वारीए मोहमाया;
मानवभवने न हारीए, चेतो चेतो भाया. शोक० ३५

आतमना उपयोगथी, ध्यावो आतमराया;
आतम ते परमातमा, ज्ञानानन्द सुहाया. शोक० ३६

बीजी देशी.

आ संसार असार छेजी, आतम धर्म छे सार;
कोइ न साथे आवतुंजी, रागने रोष निवाररे;
साचुं आतमतत्त्व विचार, जगमां छे ए साररे. साचुं० ३७
पुन्यपापकर्मो कर्याजी, परभव आवेरे साथ;
पुन्ये सुख पापोदयेजी, भगटे दुःखनो क्वाथरे. साचुं० ३८
पुन्योदयथी धर्मनीजी, सामग्री मळे चेत;
पापोदयथी दुःखनीजी, सामग्री महाक्लेशरे. साचुं० ३९

देव मनुष्यभव पुण्यथीजी, पापे नरकादिदुःख;
पापकर्म नहीं कीजीएजी, पुण्य धर्मथी सुखरे. साचुं० ४०
मोक्षाशा निश्चय करीजी, व्यवहारे पुण्यकर्म;
करीए आतम भावीएजी, प्रगटे आतमधर्मरे. साचुं०.४१
पुण्य पाप पुद्गलदशाजी, छाया तापसमान;
दर्शन ज्ञानानन्द छेजी, आतमधर्म प्रमाणरे. साचुं० ४२
जड पुद्गलथी भिन्नछेजी, आतम निश्चय थाय;
जडतनु न्यारो आतमाजी, समजे भ्रांति जायरे. साचुं० ४३
कर्मनो कर्ता आतमाजी, परपरिणामेरे थाय;
निजनो कर्ता आतमाजी, निजपरिणामे सुहायरे. साचुं० ४४
कर्मवियोगे मोक्षछेजी, मोक्षना हेतुरे सत्य;
दर्शनज्ञानचारित्रनांजी, द्रव्यने भावथी कृत्यरे. साचुं० ४५
देवगुरुने धर्मनीजी, श्रद्धा समकितयोग;
अनंतभवनी हेतुताजी, ग्रंथि थाय वियोगरे. साचुं० ४६
आठे कर्म ते जाणजोजी, द्रव्यकर्म निर्धार;
रागने द्वेष छे भावथीजी, तनु नोकर्म विचाररे. साचुं० ४७
भावकर्म टळतां टळेजी, द्रव्यकर्म नोकर्म;
सर्वकर्मना क्षयथकीजी, प्रगटे मुक्तिशर्मरे. साचुं० ४८
दुष्टवृत्तियो रोधतांजी, शुभवृत्ति व्यापार;
धर्मयोग प्रगटे दिलेजी, अहिंसा आचाररे. साचुं० ४९
दुःखी जीवो देखतांजी, करुणा प्रगटे अपार;
दयाधर्मकर्मो थतांजी, थाता पर उपकाररे. साचुं० ५०
हिंसावृत्ति न उपजेजी, प्रगटे तुर्त शमाय;
सत्यास्तेयने ब्रह्मथीजी, कर्म घणां रोकायरे. साचुं० ५१

संतोषे मन वर्त्ततुंजी, विषयोमां नहीं राग;
भविकुल्मां नहीं द्वेषवाजी, प्रगटे समने त्यागरे. साचुं० ५२
शत्रुपर नहि द्वेषवाजी, क्षमा अने शुद्धबुद्धि;
देवगुरु आराधतांजी, प्रगटे आत्मशुद्धिरे. साचुं० ५३
आत्मशुद्धिहेतुओजी, द्रव्यने भावथी जेह;
अवसरे मोह ज टळेजी, देहछतां वैदेहरे. साचुं० ५४
आत्मवत्न जडवस्तुनोजी, सहेजे ममता विलाय;
जडमां अहंता नहि रहेजी, जड जडभावे रहायरे. साचुं० ५५
आत्मोपयोगे परिणमेजी, आतम पामेरे मुक्ति;
माटे शोकादि त्यजोजी, आदरो धर्मप्रवृत्तिरे. साचुं० ५६
आतम उपयोगी थतांजी, टळता मोहविचार;
वस्तुनो शोक रहे नहींजी, प्रगटे धैर्य अपाररे. साचुं० ५७
आत्मना अज्ञानथीजी, वर्ते मोहनुं जोर;
जडमां हुं तुं नहीं रहेजी, रहे न कामनो दोररे. साचुं० ५८
रोइ रोइने मरी जतांजी, पाछुं आवे न कोय;
आत्मस्वरूपने जाणतांजी, साची शांति होयरे. साचुं० ५९
सम्यग्ने निश्चय करोजी, मनडुं राखोरे शांत;
धर्ममार्गपर चालतांजी, रहे न मिथ्याभ्रांतरे. साचुं० ६०
कर्मानुसारे जीवोजी, परभवमांहीरे जाय;
कर्मविपाके भोगवेजी, एवो वर्ते न्यायरे. साचुं० ६१
कर्मने आतम वेदतोजी, काल अनादिथी संग;
कर्मवियोग थतां भलोजी, प्रगटे शुद्ध न रंगरे. साचुं० ६२
आत्मज्ञानी न बांधशेजी, कर्म करे ने अकर्म;
आत्मना उपयोगथीजी, निरासक्तिए धर्मरे. साचुं० ६३

अज्ञानी निर्बल घणोजी, ज्ञानी महाबलवंत;
कर्मयोगी ज्ञानी धनीजी, करतो कर्मनो अंतरे. साचुं० ६४
सर्वकार्य करतां थकांजी, सम्यग्ज्ञानी अकर्म;
अपुनर्बंधकरूपणुंजी, पामे आतमधर्मरे. साचुं० ६५
आत्मधर्म छे आत्ममांजी, दर्शनज्ञानचरित्र;
वीर्यादिक छे कर्मनाजी, नाशे प्रगटे पवित्ररे. साचुं० ६६
आच्छादितगुण प्रगटताजी, कर्म टळे तत्काल;
सत्ताए गुण जे रह्याजी, आविर्भावे ते भालरे. साचुं० ६७
सत् ते व्यक्तपणे थतोजी, असत् न थावेरे व्यक्त;
सत्‌नो अभाव थतो नहींजी, असत् न प्रगटे शक्तरे. साचुं० ६८
आतमगुण पर्यायथीजी, सत्ताए सत् जाण;
चिदानंदमय आतमाजी, विणसे नहि ते प्रमाणरे. साचुं० ६९
मातपितादिक सर्वनाजी, आतमद्रव्य छे नित्य;
मुज तुज आतम नित्य छेजी, देहादिक छे अनित्यरे. साचुं० ७०
आतमाओ देहे रह्याजी, मरे नहीं त्रण्यकाल;
तेओनुं सगपण गणेजी, शोकतणी शी ? चालरे. साचुं० ७१
देहो तो वस्त्रो समांजी, के आवे के जाय;
तेओनुं सगपण नहींजी, सत्य समज ते भायरे. साचुं० ७२
देहोनीमांहे रह्याजी, निज आतमसम तेह;
आत्मदृष्टिथी देखतांजी, निर्मोही वैदेहरे. साचुं० ७३

भविकासिद्ध चक्रपद वंदो. ए राग.

समजी रहो शुद्ध आतम भावे, जड नहीं साथे आवे;
आतम एकलो आव्यो जावे, मुंझाश नहि मोह दावेरे;
आतम !!! आतम धर्मने धरजो, जडममता परिहरजोरे. आतम० ७४

साठ हजार तनुजो जेना, एकी वखते मरिया;
सगरचक्री मूर्च्छा पाम्यो, वैराग्य ज्ञानथी तरियारे. आतम० ७५
मरुदेवाए तनुजमोहे, शोके वर्षो गाळ्यां;
निर्मोही थयां त्यारे क्षणमां, मुक्तिपुरीमां म्हाल्यांरे. आतम० ७६
रामनामोहे लक्ष्मण शोकी, राम मरंतां मरता;
कोइनी साथे कोइ गया नहीं, निज निज वाटे वहियारे.आतम०७७
रावण सरखो मोटो राजा, प्राण तजीने चाल्यो;
कर्मानुसारे परभव चाल्यो, भावी टळे नहीं टाळ्योरे. आतम० ७८
साते जे परणीने पुजाये, ते पण चाल्या चाले;
तेओना नाम देहनी यादी, रहीं नहीं आ कालेरे. आतम० ७९
असंख्यकालना तीर्थकरनां, नाम स्मरां नहीं आवे;
देहथकी कोइ अमर रह्या नहि, मोह शो ? करवो छावेरे.आतम०८०
आजसुधी नाम देहो अनंतां, थइयां गयां न गणावे;
इष्ट शोक तेमां शु ? करवो, अभिनवरंगना न्यायेरे. आतम० ८१
सगां संबंधीना नामने देहो, पोताना तेम जाणो;
निर्मोहभावे अज अविनाशी, अजरल आतम दिल आणोरे. आ०८२
कृष्ण वासुदेवनी राणीओ, त्राहि त्राहि पोकारी;
पण न उगारी मरता तेओने, कर्मवशी गति न्यारीरे. आतम०८३
कर्म शुभाशुभ बाजीगर सम, ईश्वर-,कर्म स्वभावे;
तेनां आवरभाव न धारो, रहेशो आत्मस्वभावेरे. भविका आतम धर्मने धरजो. ८४
अग्निकुमारे द्वारिका बाळी, जलधिए उरमां घाली;
कोइ बचावी शक्युं नहीं तेने, कर्मनभूतीना न्यारीरे. भ० ८५
कर्मथी बळियो आतम ईश्वर, आतमज्ञाने थावे;
कर्म अनंतां क्षणमां टळतां, चारित्रना शुद्धभावेरे. भ० ८६

चोपाइ.

आयुष्य प्रगटेने विणसाय, तेमां हर्ष न शोक न थाय;
आतमभावे थाय प्रसन्न, सर्व करे पण मुजमां मन. ८७
शरण माहरुं जे नरनार, करतां ते उतरे भवपार;
देह त्यजंतां करे न शोक, कदि न पाडे मोहे पोक. ८८
श्वासोच्छ्वासे मारुं ध्यान, करतां प्रगटे सा्चुं ज्ञान;
श्वासोच्छ्वासे मारो जाप, जपतां कोइ न लागे पाप. ८९
छेवट मृत्युकाले जेह, शरण करे मुज ते वैदेह;
अनंतभवनां कर्म विनाश, मुज शरणे मुक्ति छे खास. ९०
अज अविनाशी नित्य अनंत, काल अनादि पूर्ण महंत;
आतम ते परमेश्वर वीर, सत्ताए महावीर ज धीर. ९१
आतम महावीर शरणुं करे, मन निर्मल थै आतम ठरे;
षट्कारक शुद्धां प्रणमाय, आतम ते परमातम थाय. ९२
आतमभावे जे हर्षाय, अठकर्मोथी बंध न पाय;
मरनारामां देखे तेह, अमर आतमा ते वैदेह. ९३
देहछतां वैदेह थाय, मुजभक्तोने काल न खाय;
लहे नहीं दुर्गतिमां वास, आयु जतां आनंदोल्लास. ९४
स्वाधिकारे करता कर्म, करे निर्जरा पामे धर्म;
स्वाधिकारे सहु व्यवहार, करता शिव पामे नरनार. ९५
देह मरे पण मरे न तेह, मृत्युकाले भीति न रेह;
निर्भय थैने छंडे प्राण, मुजभक्तो पामे शिवस्थान. ९६
मुज विश्वासो जे नरनार, पूरण माराउपर प्यार;
महापापी पण शिवपद पाय, छेवटकाले पण मुज ध्याय. ९७
सर्वजीवोना तारण हेत, तीर्थंकर मुजभव संकेत;
समजी वर्तो नरने नार, निर्लेपे करशो व्यवहार. ९८

तुमशरणे आव्यां नरनार, मरुजा गया छे भवपार;
तेओ आतमशुद्धि पाय, ज्ञानी योगी भक्तो थाय. ९९

ब्राह्मण आदि सववर्ण, स्वाश्रये करतां स्वर्ग;
पामे देह स्पर्शी शुभ देव, अन्यभवे नहि पामे क्लेश. १००

तुमथी पन रागी नरनार, वर्णे ते पामे भवपार;
तर्यां न कोना चार्यां जेह, तुमभक्तिथी तर्या तेह. १०१

बंदिवर्धन आदि भव्य, समजया पोतानुं कर्तव्य;
शोक स्पर्शाने शांति सदा, प्रभुने ध्यानथकी संपदा. १०२

परब्रह्म ईश्वर महावीर, सर्वदेवपूजित महावीर;
सर्वविश्वनो तारणहार, तीर्थंकर जिनवरअवतार. १०३

रहो नहीं चिंता मन लेश, नाठो शोक पत्यो मन क्लेश;
चिंता नाश थे पाम्यां स्वर्ग, त्यांथी चिंदयां अपवर्ग. १०४

सर्वदेवदेवाधिराज, तव आज्ञाए चालीश राज्य;
स्वाधिकारे करतां कर्म, अकर्म उपयोगे छे शर्म. १०५

तुम उपदेशे नाठो भर्म, जाण्यो साचो आतमधर्म;
नयवन् आतम अक्रियपोग, सधाय भगवद्नो उपयोग. १०६

सदविर्ता ज्ञानी निर्बंध, सम्यग्दृष्टि छे नहि अंध;
सापेक्षाए जाणे सत्य, तेनां सघळां छे सत्कृत्य. १०

तुमउपदेशे जाण्यो धर्म, नाठो एकांतदृष्टिभर्म;
अनंत शक्तिनाथ महान, महावीर भगवद्रूप भगवान. १०८

तप जप संयम ज्ञान प्रचार, दया दान दम भक्ति उदार;
उपदेशोने विश्वोद्धार, करता भगवद्रूप थी निर्धार. १०९

वंदे पूजे स्तवे अपार, नमतो नंदि वार हजार;
आनंदी ये सत्कर्तव्य, करतो स्वाधिकारे भव्य. ११०

शोकनिवारकग्रन्थ ए, साचो रच्यो हितकार;
मरनारांनी पाछळे, भणे गणे सुखकार. १११
शोक मोह चिंता टळे, धर्मी बने नरनार;
बुद्धिसागरवीरनी, वाणी जगजयकार. ११२

" चेटकचोवीशी ग्रन्थ. "

चोपाइ.

दीक्षा लेती वखते श्री महावीरप्रभुए चेटकने आपेलो बोध.

चोपाइ.

सांभळ वैशालीराजन् ! ! ! पंडितशेखर तुं कृतपुण्य;
नीति न्याये करशो राज्य, फकीरसम अंतर् धर राज्य. १
दया दान दम वर्तन धरो, समजी सर्वे कर्मो करो;
राज्य करंतां जातियत्न, करी कमाणी खाओ अन्न. २
सर्वलोकसुखकाजे राज्य–, करतां आतमनुं साम्राज्य;
फर्ज अदा कर साची सर्व, कदि न कर सत्तानो गर्व. ३
द्वेषीउपर राख न रोष, दुःखीजनने प्रेमे पोष;
शत्रुउपर धार न द्वेष, धर्म धरंता सहवा क्लेश. ४
क्षत्रियभूपति टेक न छंड, धर्मकर्ममां प्रेमे मंड;
राख न जूठो लेश घमंड, न्याय त्यां उपशम पामे बंड. ५
सद्वक्ताओ पासे राख, प्राण पडे पण जूठ न भाख;
दुष्टवृत्तियो मारी नाख, परधन गणजे जेवी राख. ६
परललनाने मात समान, गणजे कर संतोनुं मान;
करजे प्रतिदिन नवनवुं ज्ञान, निजदेशे वर्तावो आण. ७
सर्वदेशमां दया पळाव, होमातां पशुओने बचाव;
अनाथरोगीलोक बचाव, मानवभव शुभ लेजे ल्हाव. ८

प्रजाजनोनी सांभळ रीव, पाडुं नहि सत् करवां क्लीव;
आत्मसमा सहु गणजे जीव, कर्तव्यो करवां ज सदीव. ९

दुष्टव्यसनने राज्यनी महार्, काढी सुखो कर नरनार;
संकट पडियानी कर व्हार, दुर्गुणथी छे राज्यनी हार. १०

माटे राज्यथी दुर्गुण दूर, करजे भूपतिगणमां शूर;
सद्गुणराज्ये सुख भरपूर, आंतर बाहिर झळके नूर. ११

निर्बळथी नहि राज्य कराय, सबळानुं छे राज्य सदाय;
राज्य खरुं ज्यां साचो न्याय, अन्यायी राजा न गणाय. १२

निरासक्तिए राज्य जो थाय, प्रजाभूपति प्रगति पाय;
दंडादिक करवां पट न्याय, राखी वर्तो भूप सदाय. १३

प्रजा एज छे भूपस्वरूप, माने वर्ते पडे न धूप;
एवो राजा विभअनुप, पडे नहीं क्यारे भवकूप. १४

सर्वजीवोनी कर संभाळ, दुष्टने दंडी सज्जन पाळ;
प्रजावर्गनो थै रखवाळ, मोहमपादीजीवन टाळ. १५

विषयोना जे थने गुलाम, तेनी साची टळशे हाम;
दुर्बुद्धिए ठरे न ठाम, जन्मी सारां करे शुं ? काम. १६

दयापकी दिलडुं उभराय, देवगुरुना प्रणमे पाय;
प्राणांते व्यभिचारी न थाय, भूपतिशब्दने योग्य गणाय. १७

अहिंसाए राज्य सुहाय, हिंसाथी राज्यो विणसाय;
अहिंसाए प्रगटे धर्म, हिंसाए प्रगटे ज अधर्म. १८

हिंसकपापीनो उद्धार, करे जीवपर बहु उपकार;
परमार्थे मरवा तैयार, सत्यभूप ते जगजयकार. १९

लनवाणीकायापर राज्य, पवित्र थै करतो साम्राज्य;
ले दुर्गुण उपर दाझ, पामे स्वर्ग ने शिवनुं राज्य. २०

जेह शमावे प्रेमे द्वेष, प्रजावर्गना टाळे क्लेश;
नीति सद्गुणीराजा वेश, करे कर्तव्यो जेह हमेश. २१
महामारी दुष्काले जेह, प्रजावर्गने रक्षे तेह;
सर्वप्रकारे करे उपाय, धर्मी राजा सत्य गणाय. २२
सर्वप्रकारे नीति जाण, धर्मार्थे निज अर्पे प्राण;
देशराज्यमां चलवे आण, दोष हणी थावे गुणवान्. २३
चेटकराजन् ! तुं गुणखाण, तुं मारी पाळे छे आण;
अंतरमां मारुं कर ध्यान, तेथी तुं पामीश निर्वाण. २४
अष्टादशराजामां मुख्य, प्रगटावो आतमनुं सौख्य;
आतमना उपयोगे रहो, बाह्यराज्य नीतिए वहो. २५
जैनधर्मने जग फेलाव, बाह्यांतरशक्तियो पाव;
चेटकने प्रतिबोधी प्रभु, वीर थया त्यागी शुभ विभु. २६
प्रभुवाणी सुणतां नरनार, भूपति पामे धर्म अपार;
बुद्धिसागरप्रभु उपदेश, सुणी वर्ततां रहे न क्लेश. २७

॥ संघ कर्तव्य ग्रन्थ. ॥

चोपाइ.

ईश्वर महावीरदेव जिनेश, संघधर्मनो दे उपदेश;
सत्कर्मोने शाने संघ, अनंततीर्थस्वरूपीरंग. १
जंगमतीर्थ छे संघ महान्, तेने सहु प्रणमे भगवान्;
सर्वधर्मनी खाण छे संघ, स्वर्गगाथी मोटी गंग. २
साधु साध्वीत्यागीवर्ग, श्राद्धश्राविका गृहस्थवर्ग;
चातुर्वर्णी संघ गणाय, पूजे प्रणमे मुक्ति थाय. ३
तीर्थंकरसम संघ गणाय, संघविषे सहु तीर्थ समाय;
संघनी सेवा प्रभुनी सेव, संघ छतां सहु वर्ते देव. ४

संघनी भक्ति ते प्रभुभक्ति, संघसमी नहि कोइ शक्ति;
जैनधर्मने माने संघ, वर्ते आतम वाधे रंग. ५
संघाज्ञामां म्हारी आण, समाइ जाणो योग्य ज जाण;
क्षेत्र अने कालानुसार, करे संघ ते मुजमत धार. ६
जे काळे जे क्षेत्रे धर्म, जोवे तेनां जे जे मर्म;
संघाज्ञाए तेह कराय, मुज आज्ञा ते जाणो न्याय. ७
संघनी वृद्धिनां जे कर्म, तेमां सर्व समाया धर्म;
संघनी सेवाभक्तिमांय, तपजप संयम सर्व समाय. ८
सर्वसंघनां करतां स्हाय, अनेक पुण्यने निर्जर थाय;
विरतिविरण पण संघनी सेव. करतां भक्तो थावे देव. ९
संघनी रक्षावृद्धिहेत, सेवाभक्तिनो संकेत;
भक्तोमां मुज देखे जेह, भक्ति करंतां भक्त न जेह. १०
संघमां मुजमां भक्ति अभेद, करे न भीति लज्जा खेद;
एवा भक्तोमां भगवान, आतमव्यक्त थतो गुणवान. ११
भावे संघनी सेवा थाय, अनंतभवनां पातिक जाय;
संघनो शत्रु निन्दक थाय, पाप करी दुर्गतिने जाय. १२
सर्वनयोनो जाण जे संघ, प्रगटावे सहु शक्ति अभंग;
सर्वप्रकारे विद्या जाण, मुज श्रद्धा भक्ति गुणखाण. १३
मुज शासन चलवे ते संघ, तेना सघळा कर्मना रंग;
अवळुं पण सवळुं प्रणमाय, मारा संघनी सद्दवि थाय. १४
सम्यग्दृष्टिवाळो संघ, सवळा तेना दृष्टितरंग; १५
मिथ्याशास्रो पण प्रणमाय, सवळीदृष्टिए गुणदाय;
एवा संघनी सेवा थाय, त्यारे पाप अनंतां जाय. १६
कदि न देखो संघना दोष, दोष छतां संघ ज निर्दोष;
संघ करे जे जे फेरफार, मुज आज्ञा त्यां छे निर्धार. १७

आचारो तो फरता रहे, देशकाल अनुसारे वहे;
तत्त्वोमां कदि याय न फेर, ज्यां अज्ञान ज त्यां अंधेर. १८
काल अनादि तत्त्व न फेर, आचारोमां थाय ज फेर;
देशकाल शक्ति अनुसार, परिवर्तन पामे आचार. १९
संघ सकलमां नयसापेक्ष–,मतभेदे नहीं करवो क्लेश;
समभावे सहु संघनी मुक्ति, मुज भजतां नहीं मोहनी रीति. २०
विद्याज्ञानने शक्तिप्रचार, करतो संघ वधे जयकार;
दुर्गुण दुष्टव्यसनथी दूर, रहेतां संघ वधे भरपूर. २१
खमे खमावे मांहोमांह, मनमां वैर न राखे क्यांय;
संघार्थे आपे निज भोग, नीतिथी शक्तिनो योग. २२
उदार गंभीर न्यायाचार, अरस्परसमां प्रेम अपार;
शक्ति छतां सहतो अपराध, संघ सदा एवो आराध्य. २३
परोपकारे निशदिन रक्त, सेवाभक्तिमां आसक्त;
उपदेश्यां मुज समजे तत्त्व, सत्त्वगुणीने उत्तम सत्त्व. २४
निज निज अधिकारे गुण कर्म, करवामां समजंतो धर्म;
एवा संघनुं धार्यु थाय, आध्यात्मिकप्रगति ते थाय. २५
अन्यजीवोपर राखे रहेम, धर्मीजीवोपर धारे प्रेम;
संपीने वर्ते थै एक, सर्वकार्यमां होय विवेक. २६
अधर्म्ययुद्धने त्यजता छेक, देवगुरुसेवानो टेक;
पशुपक्षीनी हिंसा त्याग, साधर्मिक उपर बहुराग. २७
जूल्मी दुष्टनी रक्षामां थाय, रहेवा दे नहि जूल्म अन्याय;
करे अतिथि बहु सन्मान, दिल प्रगटावे आतमज्ञान. २८
सर्वलोकने देतां ज्ञान, करे नहीं दिलमां अभिमान;
आतम ते परमातम जाण, सात्त्विकबुद्धि नहि अज्ञान. २९

संयमी चढतीपाटे सर्व–, अर्पण करतां धरे न गर्व;
निष्कामे सहु करता काज, वाह्यांतर धारे साम्राज्य. ३०
धारे मनवचकायनी शुद्धि, रागने रोपनी टाळे अशुद्धि;
दारुमांसथी रहेतो दूर, अपराधीपर थाय न क्रूर. ३१
धर्मार्थे अर्पाइ जाय, धर्मीने सवराती सहाय;
अधर्मीने पण आपे बोध, दुष्टवृत्तिनो करे निरोध. ३२
संयमी सेवाभक्ति हेत, प्राणादिक स्वार्पणसंकेत;
अरसपरसमां मुजसम प्रेम, राखे धारे योगने क्षेम. ३३
देवगुरुने धर्मने संघ, वारेमां स्वार्पणवारंग;
दुष्टव्यसननी होय न टेव, स्वाधिकारे करतो सेव. ३४
दोषो टाळे सद्गुण धरे, धर्मनो रागी थै फरे;
सर्वसंघनो विश्वप्रचार, करवामां तन अर्पे सार. ३५
गुणस्थानक निज निजअधिकार, गुण कर्मो करता वैपार;
समय विचारी वर्ते जेह, एवो संघ बने गुणगेह. ३६
भगविकर आचारविचार, प्रामाणिक चलवे व्यवहार;
सर्वखंडना संयमी सेव, करतां आतम थावे देव. ३७
ज्ञानक्रियाथी थावे मुक्त, मारां जाणे जेओ सक्त;
अन्यधर्मीपर धरे न द्वेष, आपे नहीं अन्योने क्लेश. ३८
हिंसा जूठ ने चोरी त्याग, ब्रह्मचर्य धारे वैराग;
सर्वजीवोपर मुजसम प्रीत, दोषोने हरवानी रीत. ३९
देशकालशक्ति अनुसार, गृहस्थ त्यागीना आचार;
दोषी उपर धरे न रोष, अंदरमां धारे संतोष. ४०
आत्मशुद्धि राखे लक्ष, क्रिया सर्वकृत्यामां दक्ष;
एवा संयमी चढती थाय, सर्वलोकने आपे सहाय. ४१

कर्मोदयथी थाय न दीन, आतमने भावे मन जिन;
करे न अन्यनुं भूरु लेश, मीते वैर शमावे वेश. ४२

साधर्मिक खबरावी खाय, साधर्मिकने आपे स्हाय;
उच्च नीचनो धरे न भेद, टाळे ज्ञाने सहुना खेद. ४३

लघुता दृढता श्रद्धा प्रेम, आतमज्ञानने दिलमां रहेम;
चारित्र्ये ज्यां जीवन जाय, एवा संघनी चडती थाय. ४४

भूख्यांने खवरावे जेह, तरस्यांने जल पावे स्नेह;
करे न शक्ति दुरुपयोग, रोगीओना टाळे रोग. ४५

दुष्टरीवाजो करवा दूर, शक्ति फोरवी थातो शूर;
करे न निन्दा परनी लगार, कोइपर नहि देतो आळ. ४६

शुभक्षेत्रोने पोषे नित्य, दोष त्यजी गुण धारे चित्त;
हिंसादिकने काढे दूर, एवो संघ जगत मशहूर. ४७

दानशीयलतपभावप्रवृत्ति, नीति महाजन गुणनी रीति;
नवतत्त्वोनुं धारे ज्ञान, संघनी भक्ति दिल भगवान. ४८

इत्यादिक कोटी गुणवान, संघ छे प्रत्यक्ष ज भगवान्;
प्रभुसाकार खरो छे संघ, तेनो क्षणक्षण करशो संग. ४९

संघ छे प्रत्यक्ष ज गुणवंत, साकारी ईश्वर छे संत;
तेनी सेवाथी प्रगटाय, घट घट आत्मप्रभु सुखदाय. ५०

संघथी मोटुं नहीं छे कोय, सर्वधर्मीनी खाण ज जोय;
संघने सर्व महाउपमान, पूजो वंदो भवी गुणजाण. ५१

एक तरफ सहुधर्मो होय, एक तरफ संघसेवा जोय;
बन्ने सरखां जाणो भव्य, संघनी सेवा छे कर्तव्य. ५२

साधर्मिकभक्तिनां कर्म, एक तरफ छे सघळा धर्म;
बेउ सरखा जाणो दक्ष, धरो संघसेवानो पक्ष. ५३

अविरति जे सम्यग्दृष्टि, मार्गानुसारी गुण पुष्टि;
देशथी विरति स्वाधिकार, धन्य संघ सदा जयकार. ५४
त्यागीसर्वविरतिनो वेष, मोक्षार्थी साधक गुणरंग;
गृहस्थत्यागीसंघ सुहाय, तेवंनां गद्दर्कविनाय. ५५
गृहस्थ त्यागी गुण बे भेद, सर्वथी त्यागी मोटा वेद;
त्यागीओना चरणे पाय, गृहस्थ, गुरुभक्त शिर नाय. ५६
कार्यवसंग संघ न घटे, धार्मिककार्यो सर्वे करे;
संघादिकसगतिने काम, चलवे भुवरे गामोगाम. ५७
वधे संघना सर्वे अंग, वधी प्रभावक शाने रंग;
जिनकार्यो निर्दोष थाय, त्यारे सच न दोषी थाय. ५८
अरस्परसनो करे न द्रोह, टाळे सघळे क्रोध ने मोह;
धर्मीमानुं ताके पराय, प्राण पडे पण द्रोह न थाय. ५९
मधुरवाणी सघळा छे वेश, गुरुभक्तिए टाळे क्लेश;
गुरुमाटे सहु संकट सहे, संघनी सेवामां गहगहे. ६०
गुरु पाळक मुनिसंघ महान, गृहस्थसंघनो जे जे भाग;
गुरुवच हृदिमां साम्राज्य, धर्मराज्यना नाना राज. ६१
द्रव्यक्षेत्रकालानुसार, धर्मोने जे जे व्यवहार;
परिवर्तन जे करता वेर, तेमां गुरु आज्ञा गुणगेर. ६२
संघ चतुर्विध भेगो थाय, गुरुसह तेमां कार्य सुहाय;
कलियुगमां तेना अनुसार, संघवृद्धि करतो जयकार. ६३
द्रव्यक्षेत्रने काळ सुभाव, स्वाधिकारे वरतो दाव;
द्रव्यादिक जाणे व्यवहार, मारो संघ सदा जयकार. ६४
सर्वदेशवर्ती जे संघ, तेनी धारायो गुणरंग;
मनिवर्ष यात्रा एकवार, जंगमस्थावरतीर्थनी सार. ६५

ाशक्ति सहु संघनी भक्ति, करतां आत्मिक प्रगटे शक्ति;
ावर गुरुपर श्रद्धा प्रेम, धारे पामे योगने क्षेम. ६६

र्मी प्रतिपक्षी जेह, तेओ उपर राखे स्नेह;
दावथी नहि वंचाय, दुष्टोनुं नहि बूरुं च्हाय. ६७

शक्तिथी जीवे संघ, सद्गुण नीतिबलथी अभंग;
घनो हानिकर जे कर्म, तेमां कोइ काले न धर्म. ६८

छतां पण तेह अधर्म, संघनी पडतीकारककर्म;
ाकाल अनुसारे संघ, वधे कर्म त्यां धर्मनुं मर्म. ६९

व वधे एवां जे कर्म, सर्वकालमां तेथी धर्म;
नजे ते गुरु आणा जाण, बाकी बीजा छे ज अजाण. ७०

घनी संख्यावृद्धि उपाय, फेरफारमां धर्म सदाय;
ुं जाणे संघ ते शक्त, गुरुपर प्रेमी संघ ते भक्त. ७१

घमां ज्ञानी आगेवान, संघनी प्रगतिकारक जाण;
ज्ञानी ज्यां थाय प्रधान, संघनी पडती त्यारे मान. ७२

नेक संकटमांथी पसार, ज्ञानी संघ थतो निर्धार;
र्वे संघने आपो ज्ञान, धार्मिकव्यवहारिक गुणखाण. ७३

हस्थ संघ तरीके चार,-वर्णो गुणकर्मानुसार;
र्ती गुरु आज्ञा अनुसार, धर्म करे शिव पामे सार. ७४

त्रमां मन राखी नरनार, वर्ते वर्णादिक व्यवहार;
गद्वेषनो टाळे संग, मुक्ति पामे आतमरंग. ७५

ातमधर्म छे उपशमभाव, क्षयोपशमने क्षायिकभाव;
ातम ते परमातम थाय, ए छे संघनुं ध्येय सदाय. ७६

र्वकर्मने करवां दूर, वरवुं अनंत आतमनूर;
ातमशुद्धि करवी वेग, साध्य ए दृष्टि प्रवृत्ति हमेश. ७७

साधर्मिकने देखे हर्ष, प्रगटे दर्शननो उत्कर्ष;
अरसपरस मळतां बहु व्हाल, थाय परस्पर बहु संभाळ.
अरसपरसूना दुःखमां भाग, लेवामाटे प्रगटे राग;
अरसपरस अर्पाइ जाय, नेळविषे नहि भेद जराय.
संघनी सेवा ते निजसेव, मानी वर्ते तजे कुटेव;
संघाज्ञा वहेवामां मरे, संघ ते हुं मानी सहु करे. ८०
नामरूपनो करे न मोह, करे न साधर्मिकनो द्रोह;
साधर्मिक जो आवे घेर, स्वागतभक्ति करे बहुल्हेर. ८१
करे न संघतणुं अपमान, श्रमणादिकनुं धारे मान;
मुज उपदेश सुणावी स्हाय, अन्योने धर्मी ज बनाय. ८२
रागद्वेष हणवा अभ्यास, करवो धारे मुज विश्वास;
शरण करी मुज मुक्ति पाय, साधु दर्शन करीने स्हाय. ८३
एवा संघनी चडवी थाय, सत्कर्मोथी हार न स्हाय;
निर्भय स्वतंत्रता साम्राज्य, पामे बाह्यांतरनुं राज्य. ८४
व्यष्टिसमष्टिशक्ति अनंत, संघ सदा साकार भदंत;
संघना नाशथकी महापाप, प्रगटे दुःख संकट संताप. ८५
कदि न लेवी संघनी हाय, संघनो शत्रु दुर्गति जाय;
त्यागीसंघनी शुभ आशीष, मळतां चडती विश्वावीश. ८६
संघनो नाश ते मारो नाश, जाणी संघना थाओ दास;
संघ छे सागरवत् गंभीर, सेवी स्वयं बनो महावीर. ८७
जे काले जे योग्य जणाय, करवा लायक तेह गणाय;
अविशयज्ञानी सम्मत थाय, परिवर्तन रीवाजो पाय. ८८
चक्री इन्द्रादिक पण जेह, संघना दाससमा छे तेह;
तेओ सारे संघनी सेव, संघ छतां ज छता छे देव. ८९

विद्यादिकगुण प्रकटे चेद्य, त्यारे संघमां रहे न क्लेश;
मारी पाछळ संघ सदाय, वर्तेतो रहेशे शिवदाय. ९०

मारी आज्ञा धारे जेह, संघ न पडती पामे तेह;
मारी आज्ञावर्तन टळे, शक्ति विनानो संघ ते मरे. ९१

मारी श्रद्धाथी सहु शक्ति, सघाए ते थाये व्यक्त;
मुज शरणे जे आवे भव्य, सरळां तेनां छे कर्तव्य. ९२

रागद्वेष जिते ते जिन, तेनो अनुयायी ते जैन;
मोहादिक हणवा व्यापार, जैनधर्म ते जगजयकार. ९३

जैनधर्मधारक छे संघ, साधक आंतर आतमरंग;
सर्वजीवोनी शुद्धिहेत, जैनधर्मनो छे संकेत. ९४

अष्टयोगसाधनव्यापार, जैनधर्म जाणो ते सार;
श्रावक साधुधर्म उदार, गुणस्थानक आरोहणधार. ९५

असंख्यदृष्टियो ज समाय, सापेक्षे मुज धर्ममां न्याय;
मतपंथदर्शनधर्मना भेद, समाय छे मुजधर्ममां वेद. ९६

चतुर्वर्ण मुज संघ उदार, असंख्यदृष्टिधर्माधार;
असंख्यदृष्टिमां सापेक्ष, जैनो कदाग्रही नहि लेश. ९७

मिथ्याबुद्धि मोहनो त्याग, आत्मानंद प्रकट वैराग्य;
मैत्री मुदिता करुणाभाव, माध्यस्थे मननो सद्भाव. ९८

ज्ञानभक्तिने कर्मनो योग, भोग छतां अंतरमां योग;
कर्मोदय सुख दुःख वेदाय, पण अंतरमां नहि लेपाय. ९९

कर्मविपाके थाय न मोह, सर्वजीवपर रहे न द्रोह;
सर्वजीवो निज आत्मसमान, मानी वर्ते संघ सुजाण. १००

ज्ञान दयाथी विश्वोद्धार, करवामां बहुला उपकार;
मनुष्यजातमां भेद न लेश, टाळे सर्वजीवोना क्लेश. १०१

समभावे जगने हुम सरव, परोपकारी करतो कृत्य;
मनुष्यजाति करवा उद्धार, शम दम संयम तप गुणधार. १०२
एवा संघनी प्रगति थाय, निजभूनो दाझ्यो दर्वाय;
करे गुलामीनां नहि कर्म, जैनसंघनुं ए छे मर्म. १०३
राजप्रजादिकपर उपकार, करवा स्वार्पण करतो सार;
असत् कदाग्रह त्यागे जेह, निजभांगे थावे वेदेह. १०४
द्रव्यक्षेत्रकालानुसार, उत्सर्ग अपवाद विचार;
संघनां कृत्यो करतो संघ, पामी श्रद्धा टेक उमंग. १०५
दर्शन ज्ञानचरण तप धार, संघ चतुर्विध जगनपकार;
स्वाधिकारे सहु कर्तव्य, यथाशक्ति व्यक्ति मंतव्य. १०६
कर्तव्यो ए संघनां कह्यां, ज्ञानीओए दिलमां वह्यां;
समजी वर्तो नरने नार, पामो शांति पुष्टि अपार. १०७
महावीर साचो बोध, आदरतां छे मोहनो रोध;
बुद्धिसागर मंगलमाल, सकलसंघमां जयजयकार. १०८



प्रजासमाजकर्तव्य ग्रन्थ.

चोपाई.

परमेश्वरमहावीरजिनेश, श्रेणिकने देवे उपदेश;
प्रजासमाजनुं सत्यस्वरूप, प्रजा न पामे जाणी भूप. १
भूपति गुरुजन वृद्धनुं मान, मातपितानुं बहु सन्मान;
अरस्परसपर बहु उपकार, सेवा भक्ति कर्म विचार. २
अरस्परसना रक्षणहेत, तनधनसत्ताना संकेत;
धर्मार्थे वपरातुं सर्व, गारव पामे थाय न गर्व. ३

हिंसा जूठने चोरी त्याग, लागे नहि व्यभिचारनो डाघ;
धर्मार्थे अर्पे धन प्राण, बने प्रजा एवी गुणखाण. २६

दुष्टप्रजाथी नहि वंचाय, धर्म्ययुद्धथी विजयी थाय;
जीवंती शक्तियो सर्व, प्राप्त करे नहीं धारे गर्व. २७

चारवर्ण गुणकर्मो ज्यांय, व्यक्तभावथी वर्ते त्यांय;
प्रजासंघनो थाय न नाश, पामे जो मारो विश्वास. २८

प्रजासंघ गुण कर्म जोय, गुणकर्मो वण बल नहि होय;
जैनप्रजामां चारे वर्ण, वर्ते नहीं तो पामे मर्ण. २९

अन्यप्रजाओ साथे प्रेम, राखे धारे योगने क्षेम;
मनवचकायथकी बलवान्, प्रजासंघ जीवे जग जाण. ३०

राज्यने राजाने धिक्कार, देतां चढती नहीं लगार;
राजादिकनो करतां नाश, प्रजासंघनी पडती खास. ३१

राज्यभूमिनो द्रोह जो थाय, राजप्रजा पडतीने पाय;
सत्यन्यायथी राज्य गणाय, पक्षपातथी पडती थाय. ३२

दयादान दमपरोपकार, क्षमाविवेकने शौर्य उदार;
वृत्ति तप संयम शुभप्रेम, वर्ते त्यां छे योगने क्षेम. ३३

प्रजा प्रवृत्तिशीलप्रधान, पण निवृत्ति लक्ष्यमां जाण;
चातुर्वर्ण प्रजानो संघ, पामे आनंदज्ञानतरंग. ३४

गुणकर्मोथी वर्ण गणाय, चारेवर्णी प्रजा सुहाय;
स्वाधिकारे गुणने कर्म, धारी पारे माहरो धर्म. ३५

निर्लेपी विवेकी प्रजा य, कर्म करे ने प्रभुपद पाय;
आतमशुद्धि करती रहे, पूर्णशुद्धिमुक्तिपद वहे. ३६

आतमना उपयोगे सर्व-, कर्म करंतां वर्ते धर्म;
आतम उपयोगे नहि बंध, प्रजा न थावे क्यारे अंध. ३७

दर्द करे पण होय अदर्द, अन्येद उपयोगे ते ज्ञवे;
अर्हन्तनी दृष्टि टळे, धमाराग मुमुक्षोने मळे. ३८

दर्शनज्ञानचरणनो योग, भोग छतां नहीं चळे भोग;
विषयोमांही नहि मुंझाय, मनारंभ, मधुकर सुहाय. ३९

धारणकारे मंत्र अन्येद, वर्ते पोतनुं टाळे वेर;
शुभ आशय शुद्धि थाय, मातोभाव मध्य पै जाय. ४०

स्वाधिकारे हिंसा त्याग, स्वाधिकारे पद वैराग्य;
स्वाधिकारे धारे संप, स्वाधिकारे योगने नेम. ४१

सर्वजीवोपर वर्ते रहेम, प्रजा शुद्धमी पामे क्षेम;
आत्मसम जीवोपर दृष्टि, प्रजा पहोंचे स्वर्गनी सृष्टि. ४२

व्यक्ति समष्टिनुं स्वातंत्र्य, वेला माचा सर्वे तंत्र;
भाषायो प्रगटे ज्यां ऐक्य, प्रजा पामे लहे न क्लेश. ४३

धर्मधर्मभेदे नहि क्लेश, धर्मभेदथी युद्ध न लेश;
धर्मविभेदे टळे न संप, प्रजा लहे ते चढतो जंप. ४४

एक बीजाने प्रेमे चहे, प्रभुना अपराधो सहे;
एकात्मसम धने रहे, प्रजा पहवी शुभने लहे. ४५

देशभेदथी धरे न भेद, चामडीरंगे धरे न खेद;
धर्मनो श्रद्धा धारे ऐक्य, टाळे दुसंप कजिया क्लेश. ४६

आत्मस्वरूपे देखे सर्व–, जीवोने नहि धारे गर्व;
भूख्यांने खवरावी खाय, तरस्यांओने पाणी पाय. ४७

निराश्रितनी ले संभाळ, क्रोध करे नहि दे नहि गाळ;
रोगीओने औषधदान, संतोनुं धारे सन्मान ४८

सत्तायनुं नहि अभिमान, आत्मज्ञानी निरभिमान;
प्रेमाळ नरनारीवर्ग, मनमां प्रगटावे छे स्वर्ग. ४९

सापेक्षाए सर्वविचार, आचारो धरती हुशियार;
सर्वव्यवस्थाथी वर्ताय, प्रजा एहवी चडती पाय. ५०

दुःखीओने आपे स्हाय, अन्याये लक्ष्मी नहि च्हाय;
मैत्रीप्रमोदने करुणाभाव, मध्यस्थे धारे सद्भाव. ५१

विषयोमां मुंझाती नहीं, प्रजा पुष्टिने पामे सही;
आतमवादविषे मशगुल, जडमवादथी रहेती दूर. ५२

सापेक्षाए सर्वे धर्म, जाणे सापेक्षाए कर्म;
सापेक्षाए दर्शनपन्थ, जाणी वहेती आतमपन्थ. ५३

अल्पदोषने धर्म महान, करे कार्य एवुं हित जाण;
धूम्रावत अग्निनी जेम, सदोष सर्व प्रवृत्ति तेम. ५४

करे प्रवृत्ति फर्जेथी जन, शुद्धातममां राखे मन;
प्रजा एहवी ज्ञानी ज्यांय, शांतिसुखनिवृत्ति त्यांय. ५५

जीवे आतमशुद्धिहेत, सापेक्षाए सहु संकेत;
अनेकांत विचाराचार, माने निश्चयने व्यवहार. ५६

माने असंख्ययोगे मुक्ति, असंख्यनयसापेक्षे युक्ति;
जाणे ज्ञानी प्रजा गणाय, घट घट परमातम परखाय. ५७

आतम ते परमातमसिद्ध, मोह टळ्याथी व्यक्तप्रसिद्ध;
बाह्यराज्य साधन ते माट, साधे भूप प्रजा शिरसाट. ५८

बाह्यराज्य, साधन छे जाण, ब्रह्मराज्य साध्य ज छे मान;
आत्मराज्यमां जीव्युं जाय, बाह्यराज्यमां शांति थाय. ६०

सापेक्षे ज्यां एवुं ज्ञान, पक्षापक्षी न ताणाताण;
अंतरमां वर्ते समभाव, कार्य करे निर्लेपस्वभाव. ६१

प्रजा भली एवी ज्यां होय, राजा पण त्यां सारो जोय;
प्रजासंपत्तु प्रगटे जोर, मोहराजनो थाय न शोर. ६२

प्रजा भजो प्रभु बोधे थाय, प्रभु बोधे वर्ते दुःख जाय;
पाले प्रभु आज्ञा अनुसार, प्रजाभूप शुद्धि निर्धार.
भूप प्रजामां वर्ते ऐक्य, प्रामाणिक वर्तननो टेक;
अरसपरस उपकारी थाय, आवम ऐक्ये विश्व सुहाय.
योग्य सलाहे वर्ते प्रेम, देश जात धर्मे नहि क्लेश;
सद्गुणां प्रभुने देखे भव्य, तेनां सफलां छे कर्तव्य. ६
प्रजावर्ग एवो ज्यां होय, परमावर त्यां जागतो जोय; ६५
सकळंक रही मारी ज्योत, प्रजाजीवन प्रगटे उद्योत.
दारुआदि व्यसन निषेध, मतभेदोथी थाय न खेद; ६६
हिंसायज्ञवणो न प्रचार, तेह प्रजामां शांति अपार.
मारुं शरण करी जे रहे, प्रभुजापे जीवन जे वहे; ६७
अटल धरे मारो विश्वास, तेह प्रजानी चढती खास.
मारी शक्ति अपरंपार, कोइ न पामे मारो पार; ६८
प्रभुरूपे ये प्रभुने भजे, सत्यप्रजा प्रभुपदने सजे.
दुर्गुण दोष त्यां पडती थाय, निजनो भूलो नहि समजाय; ६९
सद्गुण त्यां प्रगति छे खास, पामे पूरण प्रभु विश्वास.
नामरूपमां मोह न थाय, स्वाधिकारे कार्य कराय; ७०
आनंदे दिलसर उभराय, भक्तजना प्रभुरूपने पाय.
व्यष्टि समष्टि आवमर्वार, प्राणी पावे योगी धीर; ७१
अवगुण ढांकी गुणने ग्रहे, भक्तजना प्रभु पदने लहे.
निंदा चवरी विकथा तजे, जेना तेना सद्गुण भजे; ७२
दोष कर्यांनी मागे माफ, मनने राखे सारुं साफ.
राज्यवर्गो सहु नीति जाण, करे न राजानुं अपमान; ७३
दुष्ट अधर्मी भूपने दूर, कादी पामे शांतिपूर.
७४

लांच न लेवे देवे कोय, राज्य कायदा पाळे सोय;
न्यायथकी जीविकावृत्ति, शुभ उपयोगे वाळे शक्ति. ७५
भव्यप्रजा एवी ज्यां होय, आनंद शांति पामे सोय;
प्रजा स्वच्छंदी पापी थाय, दुःख अशांति त्यां उभराय. ७६
धर्मकर्मथी अळगी जाय, नास्तिक पाप करी हरखाय;
साधु संतना द्रोही थाय, देशप्रजा तमसां अथडाय. ७७
देवगुरुने धर्मनो प्यार, पुण्य धर्म रूडा आचार;
प्रजा भूपमां वर्ते त्यांय, दैवीसंकट दुःख न त्यांय. ७८
केवी त्यागे सर्व पदार्थ, समजे शास्त्रोना भावार्थ;
झघडा टंटा धर्मविवाद, टाळे अंतरना विखवाद. ७९
रजस्तमोगुणवृत्ति कर्म, तेथी न्यारो आतमधर्म;
मोहनी आदि कर्म विनाश, करता अंतरमां अभ्यास. ८०
ज्ञानी भव्य प्रजा ज्यां एम, वर्ते त्यां छे योगने क्षेम;
किंतु अंतरथी नहि होय, कर्म करे व्यवहारे जोय. ८१
आसक्तिविण कार्यो करे, शुद्धातम निजपदने वरे;
सर्वातम निजसम देखाय, प्रजोन्नति स्वर्गीय सुहाय. ८२
आतम ते परमातम थाय, आत्मसदाचार स्वच्छ जणाय;
वर्ते आध्यात्मिक साम्राज्य, स्वानंदे वर्ते न समाय. ८३
दुष्ट कायदा गंध न त्यांय, प्रजासत्ता, नीतिमय ज्यांय;
प्रजा सर्वाग्रा कायदा देह, ज्यां त्यां वर्ते पिंड ब्रह्मांड. ८४
कर्म प्रमाणे सुख दुःख थाय, शुभाशुभ ए कर्मनो न्याय;
कर्मवडे चाले संसार, प्रजा भूप सौ व्यवहार. ८५
उपयोगे नहि कर्मनो बंध, धार न त्यारे त्यागे अंध;
आतमज्ञानी मुनि समान, कार्य करे निर्लेपी जाण. ८६

सर्वस्व ने त्यागी ज्यांय, आत्मज्ञानी प्रगटे त्यांय;
भूप प्रजामां आनंद लहेर, पाप न काळाकर्मनो केर.
नामरूपनो मोह न ज्यांय, प्रभुसमा सहु लोको त्यांय;
आत्मज्ञाननुं शिक्षण थाय, सात्त्विकभव्यपणा प्रगटाय. ८७
आत्म ज्ञानविना अंधेर, प्रजाभूपराज्योमां केर;
आत्मज्ञानी लोको ज्यांय, गुर्वाजीवन वर्ते त्यांय. ८८
हिंसा चोरी युद्ध न क्यांय, प्रजासंघमां शांति त्यांय;
दुर्व्यसननो नहीं प्रचार, प्रजा न कोथी पामे हार. ८९
राजाकार प्रजानवृत्ति, प्रजाभूपमां धर्मनी नीति;
एकात्मासम वर्ते होय, भक्ति ज्ञान प्रगट त्यां जोय. ९०
कषायवृत्ति शीघ्र क्षपाय, दोषो टळता सत्त्व उपाय;
एकांगी एवी ज्यां प्रजा य, स्वर्गीयनगति प्रगटाय. ९१
भूप प्रजामां ऐक्यनो भाव, दुष्टोनो चाले नहीं दाव;
नवळशत्रुओ हारी जाय, रविथी तम वेगे विणशाय. ९२
धर्मोपर आवे धाड, शोषण नासे ते तत्काल;
दया सत्यने आत्मभाव, प्रगटे सारा बने बनाव. ९३
शुभमां मन राखी नरनार, चढती पामवां निर्धार;
कर्मबंध नहीं पामे भव्य, अधिकारे करवां कर्तव्य. ९४
उदात्त उपयोगी होय, नभवत् निर्लेपी ते जोय;
काळने शांति थाय अकाल, जैनो पामे मंगलमाल; ९५
स्य त्यागी ब्रह्मस्वरूप—, जाणी पावे ब्रह्मस्वरूप;
रन्वे व्यवहार न थाय, जीवन्मुक्तदशाने पाय. ९६
गीताने ठगे न लोक, पाडे नहीं पापोनो पोक;
गीताना साराहेत, जीवनना वर्ते संकेत. ९७
९८

प्रभुमहावीरनी दीवाळी स्तवन.

चेतनजी चेतो कोइना दुनियामां रहारुं. ए राग.

परमेश्वरमहावीर रहारी छे सत्य दिवाळी;
देखी प्रगटी आतममांहि लालीरे. परमेश्वर

ज्ञानने दर्शनचारित्रऋद्धि, अनंत अनंत उजवाळी;
परमातम परब्रह्म सनूरा, शक्ति अनंत अजवाळीरे. परमेश्वर

जन्म मरण आधि व्याधि उपाधि, तेथी रहित जयकारी;
शुद्धोपयोगे जोयुं अंतर्मां, आनंददीवाळी भाळीरे. परमेश्वर

ॐ ह्रीं अर्ह महावीर जपतां, वीर बन्यो सुखकारी;
बुद्धिसागर तत्त्वमसि प्रभु, सोऽहं सदा उपकारीरे. परमेश्वर

सुखदुःखे धारे समभाव, ज्ञानानन्दनो लेता ल्हाव;
विश्वमनुष्यो एवा थाय, कायदावंधनमुक्त सुहाय. ९९

आत्मिक स्वतंत्रता प्रगटाय, भव्य प्रजा मुज पदने पाय;
मारामां तेमां नहीं भेद, वर्ते ज्ञानानन्द अभेद. १००

स्वाधिकारे प्राप्त जे कर्म, करवामां नहि होय अधर्म;
उत्सर्गे अपवादे जाण, स्वाधिकारे कर्म प्रमाण. १०१

जाणे एवुं प्रजा समाज, वर्ते त्यां आत्मिकसाम्राज्य;
दोष अल्पने धर्म महान, पूर्णशुद्धिथी छे निर्वाण. १०२

कर्मातीतपणाने पाय, आयुःअंते सिद्ध सुहाय:
केइक भव्यो स्वर्गे जाय, केइक मानवभवने पाय. १०३

पुण्ये शांति तुष्टि थाय, द्रव्य भावथी पुष्टि पाय;
पापना पन्थो टळता जाय, मुज भक्तो मुज सरखा थाय. १०४

क्षेत्रने काळादिक अनुसार, प्रजासंघना सहु व्यवहार;
जाणी वर्ते नरनेनार, पामे परमानंद निर्धार. १०५

जैनधर्म एवो मुज जाण, प्रजासंघकर्तव्य प्रमाण;
सापेक्षाए धर्मने जाण, निज अधिकारे वर्त !! सुजाण. १०६

श्रेणिक !!! तुजने प्रजासमाज–, कर्तव्ये समजाव्युं राज्य;
त्यागीनुं आतममां राज्य, भूपोना पण ते महाराज. १०७

तुं त्हारा अधिकारे चाल !!! शुद्धातमनुं धारो व्हाल;
भव्यप्रजाकर्तव्य जणाव, आर्यपणाना लेवा ल्हाव. १०८

श्रेणिकने दीधो उपदेश, प्रजा भूपने हर्ष विशेष:
प्रभुने प्रेमे लागे पाय, क्षण क्षण प्रभु समरी सुख पाय. १०९

प्रभु महावीर साचो बोध, आचरतां झट मोहनो रोध;
परमानंद प्रगटे थै न्याय, आनंदमंगल घट उभराय.
मेसाणामां रचियो ग्रन्थ, भव्यो !! वजशो मुक्तिपंथ; ११०
बुद्धिसागरमंगलमाल, पामो परमानंद विशाल. १११

प्रभु महावीर.

मायामां मनडुं मोह्युं रे जाणीने जो तुं. ए राग.

प्रभु महावीर जग आधारारे, प्यारामां प्यारा;
प्रभु जीवनजी नमस्कारारे, जगतारण हारा. ॥
प्रभु त्हारे शरणे आव्यो, प्रभु अंतरमां तुं भाव्यो;
तुजरूपे हुं रंगायोरे. प्यारामां० १

तुज आतमप्रीति जागी, तुजमांहि लगनी लागी;
शुद्धातमरंगनो रागीरे. प्यारामां० २

अंजाइ गयो तुज देखी, मायानी प्रीत उवेखी;
तुज परमप्रभुता पेखीरे. प्यारामां० ३

तुज स्वरूपमय थै ध्यावुं, पूर्णभक्तिए गावुं;
तुजवण बीजुं नहि चाहुंरे. प्यारामां० ४

चिदानंदरस रसियो, अंतरमां व्यक्त उल्लसियो;
बुद्धिसागर दिल वसियोरे. प्यारामां० ५

प्रभुमहावीरनी दीवाळी स्तवन.

चेतनजी चेतो कोइना दुनियामां रहारुं. ए राग.

परमेश्वरमहावीर रहारी छे सत्य दिवाळी;
देखी प्रगटी आतममांहि लालीरे. परमेश्वर. ॥

ज्ञानने दर्शनचारित्रऋद्धि, अनंत अनंत उजवाळी;
परमातम परब्रह्म सनूरा, शक्ति अनंत अजवाळीरे. परमेश्वर० १

जन्म मरण आधि व्याधि उपाधि, तेथी रहित उपकारी;
शुद्धोपयोगे जोयुं अंतरमां, आनंददीवाळी भाळीरे. परमेश्वर० २

ॐ ह्रीं अर्हं महावीर जपतां, वीर बन्यो सुखकारी;
बुद्धिसागर तत्त्वमसि प्रभु, सोऽहं सदा उपकारीरे. परमेश्वर० ३

